सरवत व ताक़त के घमंड में आकर नाफ़रमानी और सरकशी पर उतर आती है, तो पहले तो अल्लाह तआ़ला उसको मोहलत देता और उसको सीधे रास्ते पर लाने के लिए अपनी हुज्जत को अख़िरी हद तक पूरा करता है। अगर इस पर भी वह हक़ क़ुबूल करने की दुश्मन रहती और बग़ावत व सरकशी के उस ऊंची कसौटी पर पहुंच जाती है कि उस को अल्लाह की नेमतें और दी हुई राहतें भी नागवार गुज़रने लगती हैं और वह उनको ठुकराने लगती है तो पकड़ का क़ानून अपने फौलादी पंजे आगे बढ़ाता और ऐसी बदबख़्त क़ौम को पारा-पारा कर देता और हलाकत और बरबादी को आसमान पर उतार देता है और उनकी सारी शान दुनिया के सामने एक कहानी बन कर रह जाती है–

'कुल सीरू फ़िल अर्जि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल मुज्रिमीन

(19 : 69)

तर्जुमा : *'तो कह दे, फिरो मुल्क में, तो देखो कैसा हुआ अंजाम गुनाहगारों का।'*

अस्हाबुल उख़दूद या क़ौमे तुब्बअ

उख़दूद

'ख़द' या 'उख़दूद' के मानी गढ़े, खाई और ख़ंदक़ के हैं। यह एक वचन है और इसका बहुवचन 'अख़ादीद' आता है, चुंकि बयान किए गए वाक़िए में काफ़िर बादशाह और उसके अमीरों व सरदारों ने ख़ंदक़ें और गढ़े खुदवा कर और उनके अन्दर आग धधकवाकर ईसाई मोमिनों को उनमें डाल कर ज़िंदा जला दिया था। इस निस्बत से इन काफ़िरों को 'अस्हाबुल उख़दूद' कहा जाता है।

क़ुरआन और अस्हाबे उखदूद

सूरः बुरूज में अस्हाबुल उख़दूद का वाक़िया बयान करने के मोजज़े भरे तरीक़े के साथ इस तरह ज़िक्र किया गया है–

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा : ... से जो बेहद मेहरबान और निहायत रहम वाला है। क़सम है आसमान की जिसमें बुर्ज है और उस दिन की जिसका वायदा है और उस दिन की जो हाज़िर होता है और उस दिन की जिसके पास हाज़िर होते हैं, मारे गए खाइयां खोदने वाले, आग है बहुत ईंधन वाली जब वे उस पर बैठे और जो कुछ वे करते थे मुसलमानों के साथ, अपनी आंखों से देखते थे और उनसे बदला नहीं लेते थे, मगर सिर्फ़ इस बात का कि वे यक़ीन लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ़ों का हक़दार है, जिसका राज है आसमानों में और ज़मीन में और अल्लाह के सामने है हर चीज़, बेशक! जो, ईमान से बिचलाए ईमान वाले मर्दों और औरतों को, फिर तौबा न करे तो उनके लिए अज़ाब है दोज़ख़ का और उनके लिए अज़ाब है आग में जलने का। बेशक जो लोग यक़ीन लाए (अल्लाह पर) और उन्होंने भलाइयाँ कीं, उनके लिए जन्नत है, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। यह है बहुत बड़ी कामियाबी।'

(85 : 1-11)

वाक़िए की तफ़्सील

तफ़्सीर लिखने वालों ने इन आयतों की तफ़्सीर में कई वाक़िए नक़ल किए हैं। हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रमान स्योहारवी रह० ने इन तमाम रिवायतों पर तफ़्सील से बहस की है और इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मशहूर ताबई मुक़ातिल की इबारत के मुताबिक़ क़ुरआन में जिस वाक़िए का ज़िक्र किया गया है, वह नजरान और ज़ूनवास से ताल्लुक़ रखता है और तहक़ीक़ करने वालों का रुझान भी इसी ओर है।

यह वाक़िया साहबे सीरत मुहम्मद बिन इसहाक़ ने मुहम्मद बिन काब रह० की सनदी सिलसिले में नक़ल किया है, वह फ़रमाते है, कि शाम और हिजाज़ के दर्मियान जो बस्ती नजरान के नाम से मशहूर है, उसके बाशिंदे बुत-परस्त और मुश्रिक थे और उनके क़रीब की आबादी में एक साहिर (जादूगर) रहता और वह नजरान के लड़कों को सहर (जादू) की तालीम दिया करता था। कुछ दिनों के बाद नजरान और जादूगर की बस्ती के दर्मियान एक राहिब (ईसाई सन्यासी) ने आकर अपना ख़ेमा डाल लिया, यानी वहीं ठहर गया।

Copyright OfflineDeeniApp

वह्ब बिन मुनब्बह कहते हैं कि उसका नाम मैमून था। नजरान के जो लड़के जादूगर से जादूगरी की तालीम हासिल करते थे, उन में एक लड़का अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर भी था। एक दिन अ़ब्दुल्लाह राहिब के ख़ेमे में चला गया। राहिब नमाज़ में लगा हुआ था। अ़ब्दुल्लाह को राहिब की नमाज़ और इबादत का तरीक़ा बहुत पसन्द आया और उसके पास आने-जाने लगा और उससे उसके दीन को सीखना शुरू कर दिया और ईमान ले आया और राहिब से सच्चे मसीही धर्म की तालीम हासिल करके धीरे-धीरे उस दीन का आलिम बन गया। अब उसने राहिब से यह इसरार (आग्रह) किया कि मुझको इस्मे आज़म के बारे में कुछ बताइए, मगर राहिब यह कह कर टालता रहा कि भतीजे! मुझे यह डर है कि तू उसको बरदाश्त न कर सकेगा, क्योंकि तुझको कमज़ोर पाता हूं। लड़का ख़ामोश हो गया।

यहां तो यह सिलसिला जारी था और उधर अ़ब्दुल्लाह का बाप तामिर यह समझता रहा कि मेरा लड़का साहिर से डर खा रहा है। कुछ दिन ख़ामोश रह कर लड़के से सब्र न हो सका और उसने यक़ीन कर लिया कि राहिब बुख़्ल कर रहा है और बताना नहीं चाहता। यह सोच कर उसने तीरों का मुट्ठा लिया और हर एक तीर पर ख़ुदा का एक-एक नाम लिखा और फिर आग रोशन की और एक-एक तीर को उसमें डालना शुरू किया, तीर धीरे-धीरे आग की भेंट चढ़ते रहे और जलते रहे, मगर एक तीर जब आग में पहुंचा तो फ़ौरन उछलकर दूर जा गिरा। लड़का समझ गया, इस पर इस्मे ज़ात खुदा हुआ है और यही इस्मे आज़म है और इसके बाद राहिब को सारा क़िस्सा कह सुनाया। राहिब ने सुना तो अ़ब्दुल्लाह को नसीहत की कि इसको हिफ़ाज़त के साथ अपने पास रखना।

अ़ब्दुल्लाह ने उसको दीने हक़ की तब्लीग़ का ज़रिया बना लिया। वह जिस किसी को मरीज़ पाता तो उससे यह कहता कि अगर तू एक अल्लाह पर ईमान ले आए और मोमिन (ईमान वाला) बन जाए तो मैं तेरे लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करूं कि तुझको तन्दुरुस्त कर दे और जब वह शख़्स सच्चेदिल से ईमान ले आता तो यह दुआ़ करता और मरीज़ चंगा होता।

धीरे-धीरे यह बात नजरान के बादशाह तक पहुंची। उसने लड़के को

Copyright OfflineDeeniApp

बुलाया और कहा कि तूने मेरे राज में फ़साद मचाया और मेरे और मेरे बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त शुरू कर दी, इसलिए अब तेरी सज़ा यह है कि तुझको क़त्ल कर दिया जाए।

लड़का कहने लगा, बादशाह! मेरा क़त्ल तेरी क़ुदरत से बाहर है।

बादशाह ने ग़ज़बनाक होकर हुक्म दिया कि इसको पहाड़ की चोटी से गिरा दो। सरकारी आदमियों ने उसको पहाड़ की चोटी से गिरा दिया, मगर अल्लाह की क़ुदरत ने उसको सही सालिम रखा और वह बादशाह के पास वापस आ गया। अब बादशाह ने हुक्म दिया कि इसको नदी में ले जाकर डूबो दो, लेकिन वह दरिया में फेंक दिए जाने के बावजूद न डूबा और उसको ज़रा भी कोई तक्लीफ़ न पहुंची, तब लड़के ने बादशाह से कहा कि अगर तू वाक़ई मुझ को क़त्ल कर देना चाहता है तो उसकी सिर्फ़ एक ही शक्ल है और वह यह कि तू एक अल्लाह का नाम लेकर मुझ पर हमला कर, तो मैं मारा जा सकता हूं। बादशाह ने एक अल्लाह का नाम लेकर लड़के पर हमला किया तो लड़के की जान चली गई, मगर साथ ही अल्लाह के अज़ाब ने बादशाह को भी उसी जगह हलाक कर दिया।

शहर वालों ने जब लड़के और बादशाह के दर्मियान जंग का यह नज़ारा देखा, तो वे सब सच्चे दिल से एक अल्लाह पर ईमान ले आए और मुसलमान हो गए और उन्होंने सच्चाई के साथ हज़रत ईसा ﷺ और इंजील की पैरवी को अपना दीन बना लिया, चुनांचे नजरान में ईसाई धर्म के हक़ीक़ी और सच्चे दीन की बुनियाद इसी वाक़िए से पड़ी।

नजरान में ईसाई धर्म का फैलाव और लड़के और राहिब के वाक़िए का तज़्करा यहूदी मज़हब के मानने वाले शाह यमन ज़ूनवास तक भी पहुंचा। उसने सुना तो बड़े ग़ुस्से में आ गया और भारी फ़ौज लेकर नजरान पहुंचा और तमाम शहर में मुनादी करा दी कि कोई आदमी ईसाई धर्म पर क़ायम नहीं रह सकता, या तो वह यहूदी धर्म क़ुबूल कर ले, वरना मरने के लिए तैयार हो जाए।

नजरान के लोगों के दिलों में ईसाई धर्म इतना घर कर चुका था कि उन्होंने मर जाना क़ुबूल किया, मगर ईसाई धर्म से मुंह न मोड़ा। ज़ूनवास ने

Copyright OfflineDeeniApp

यह देखा तो सख़्त गुस्स म आ गया और हुक्म दिया कि शहर की गलियों और शाहराहों में ख़ंदक़ें और खाइयां खोदी जाएं और उनमें आग धधकाई जाए। जब फ़ौजियों ने इसकी तामील कर दी, तो उसने शहरियों को जमा करके हुक्म दिया कि जो आदमी यहूदी धर्म क़ुबूल करने से इंकार करता जाए मर्द हो या औरत या बच्चा, उसको ज़िंदा आग में डाल दो। चुनांचे इस हुक्म के मुताबिक़ बीस हज़ार के क़रीब मज़्लूम इसांनों को शहीद होना पड़ा। यही वह वाक़िया है, जिसका ज़िक्र अल्लाह ने सूरः बुरूज में किया है।

क़ुति-ल असहाबुल उख़्दूदि० अन-नारि ज़ातिल वक़ुद

क़ौम तुब्बअ़

तुब्बअ़ की हक़ीक़त

तुब्बअ़ असल में हबशी लफ़्ज़ है या असल सामी, इसके बारे में अरब तारीख़दानों की राय यह है कि यह अरबी (सामी) लफ़्ज़ है और तुब्बअ़ से मतबूअ (सरदार) के माने समझे जाते हैं और नए तहक़ीक़ वाले यह कहते हैं कि यह लफ़्ज़ असल में हबशी भाषा का है और इसके मानी है क़ाहिर व ग़ालिब यानी अरबी में 'सुलतान' और हबशी भाषा में तुब्बअ़ एक ही मानी वाले लफ़्ज़ (पर्यायवाची) हैं।

पिछले पन्नों में बयान किए गए वाक़िए को नक़ल करने के बाद इब्ने इसहाक़ कहता है कि ज़ूनवास यमन का मशहूर बादशाह है। उसका असल नाम ज़रआ़ था, मगर सिंहासन पर बैठने के बाद यूसुफ़ ज़ूनवास के नाम से मशहूर हुआ। उसके बाप का नाम तुब्बान असद था और अबूकर्ब कुन्नियत रखता था। यमन के इन बादशाहों का लक़ब 'तुब्बअ़' था। इसलिए तारीख़ की किताबों में यह ख़ानदान तबाए यमन कहलाता है। अबू कुरैब वह पहला तुब्बअ़ है, जिसने बुतपरस्ती छोड़कर यहूदी धर्म क़ुबूल कर लिया था। उसने मदीना पर हमला करके उस पर क़ब्जा कर लिया था, मगर बनी क़ुरैज़ा के दो यहूदी उलेमा के कहने पर सच्चे दीन मूसवी को क़ुबूल करके मदीना से वापस

Copyright OfflineDeeniApp

चला आया और [illegible] पुज़्ज़मा पहुंच कर काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया और दोनों यहूदी उलेमा को यमन साथ ले आया। उन्होंने यमन में यहूदी धर्म की तब्लीग़ (प्रचार) की और धीरे-धीरे यमन वालों ने यहूदियत (यहूदी धर्म) अपना लिया।

कुरआन और क़ौम तुब्बअ्

कुरआन ने तुब्बअ् का ज़िक्र दो जगहों पर सूरः क़ाफ़ और सूरः दुख़ान में किया है। सूरः दुख़ान में मुख़्तसर तौर पर उनकी माद्दी ताक़त व क़ूवत का ज़िक्र करके यह बताया गया है कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी करके वे हलाकत से न बचे, तो क़ुरैश, जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थे, सरकशी करके कैसे बच सकते थे और सूरः क़ाफ़ में सिर्फ़ मुजरिम क़ौमों की फ़ेहरिस्त में उनका ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—*ये (क़ुरैश) बेहतर (मज़बूत और ताक़तवर) हैं या तुब्बअ् की क़ौम और जो इनसे पहले गुज़र गई, हमने उनको इसलिए हलाक कर दिया कि वे मुजरिम थे।* (44 : 37)

तर्जुमा—*'इन (मक्का के मुशरिकों) से पहले नूह की क़ौम ने, अस्हाबुर्रस्स ने, समूद, आ़द, फ़िरऔन, इख़्वाने लूत, अस्हाबुल ऐका और क़ौमे तुब्बअ् ने (अल्लाह के पैग़म्बरों को) झुठलाया है।'* (50 : 12-14)

इब्ने इसहाक़ के बयान के मुताबिक़ यमन के यहूदी बादशाहों का लक़ब तुब्बअ् वाज़ेह होता है, इस तरह बादशाह ज़ूनवास का लक़ब, जिसका ज़िक्र 'अस्हाबुलउख़दूद' के सिलसिले में आ चुका है 'तुब्बअ्' हुआ। मुख़्तसर यह कि 'अस्हाबुलउख़दूद' का दूसरा नाम क़ौमे तुब्बअ् हुआ, जिसका ज़िक्र ऊपर की आ़यतों में किया गया है। वल्लाहु आलम।

सबक़ और नसीहत

1. जब इंसान इंफ़िरादी और इज्तिमाई ज़िंदगी में अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जाता है और उसकी दौलत व हुकूमत क नशा किब्र व ग़रूर को उस बुलन्दी पर पहुंचा देता है जिस पर चढ़ कर उसकी निगाह में तमाम

Copyright OfflineDeeniApp

चला आया और फिर मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया और दोनों यहूदी उलेमा को यमन साथ ले आया। उन्होंने यमन में यहूदी धर्म की तब्लीग़ (प्रचार) की और धीरे-धीरे यमन वालों ने यहूदियत (यहूदी धर्म) अपना लिया।

क़ुरआन और क़ौम तुब्बअ्

क़ुरआन ने तुब्बअ् का ज़िक्र दो जगहों पर सूरः क़ाफ़ और सूरः दुख़ान में किया है। सूरः दुख़ान में मुख़्तसर तौर पर उनकी माद्दी ताक़त व क़ूवत का ज़िक्र करके यह बताया गया है कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी करके वे हलाकत से न बचे, तो क़ुरैश, जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थे, सरकशी करके कैसे बच सकते थे और सूरः क़ाफ़ में सिर्फ़ मुजरिम क़ौमों की फ़ेहरिस्त में उनका ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—*ये (क़ुरैश) बेहतर (मज़बूत और ताक़तवर) हैं या तुब्बअ् की क़ौम और जो इनसे पहले गुज़र गई, हमने उनको इसलिए हलाक कर दिया कि वे मुजरिम थे।* (44 : 37)

तर्जुमा—*'इन (मक्का के मुशरिकों) से पहले नूह की क़ौम ने, अस्हाबुर्रस्स ने, समूद, आ़द, फ़िरआ़ौन, इख़्वाने लूत, अस्हाबुल ऐका और क़ौमे तुब्बअ् ने (अल्लाह के पैग़म्बरों को) झुठलाया है।'* (50 : 12-14)

इब्ने इसहाक़ के बयान के मुताबिक़ यमन के यहूदी बादशाहों का लक़ब तुब्बअ् वाज़ेह होता है, इस तरह बादशाह ज़ूनवास का लक़ब, जिसका ज़िक्र 'अस्हाबुलउख़दूद' के सिलसिले में आ चुका है 'तुब्बअ्' हुआ। मुख़्तसर यह कि 'अस्हाबुलउख़दूद' का दूसरा नाम क़ौमे तुब्बअ् हुआ, जिसका ज़िक्र ऊपर की आयतों में किया गया है। वल्लाहु आलम।

सबक़ और नसीहत

1. जब इंसान इंफ़िरादी और इज्तिमाई ज़िंदगी में अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जाता है और उसकी दौलत व हुकूमत क नशा किब्र व ग़रूर को उस बुलन्दी पर पहुंचा देता है जिस पर चढ़ कर उसकी निगाह में तमाम

Copyright OfflineDeeniApp

मख़्लूक हेच और हक़ीर नज़र आने लगती है, तो अख़्लाक़े हसना और बुलन्द जज़्बात उससे किनारा अपना लेते हैं और वह अपनी ज़ात और ज़ाती ग़रज़ों के अलावा और कुछ नहीं देखता। तब यकायक ग़ैरते हक़ को हरकत होती है और वह इस तरह बुलन्दी से पटक देती है कि पस्ती व ज़िल्लत के तारीक ग़ार के अलावा उसके लिए और कोई जगह बाक़ी नहीं रहती। *'अना रब्बुकुमल आला'* (मैं ही तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं) कहने वाला हक़ीक़ी रब की ऐसी कड़ी पकड़ में आ जाता है कि कायनात की भरपूर ताक़त न उसके काम आती है, न दुनिया की दौलत व हश्मत और उसके आगे सर झुका कर यह इक़रार करना पड़ता है कि 'इन-न बत-श रब्बि-क ल-शदीद०' (बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।) (85 : 12)

2. इंसान इंसानियत की ख़ास ख़ूबियों और निशानियों से बनता है, वरना हैवान से भी बदतर है और इंसानियत का तक़ाज़ा यह है कि जब इंसान को हर क़िस्म की दौलत व हश्मत और सामान मयस्सर हो और सतवत व ताक़त भी बे-अन्दाज़ नसीब हो, तो उस वक़्त भी ख़ुदा और ख़ुदा के डर से हरगिज़ बेगाना न हो।

ज़फ़र मर्हूम ने क्या ख़ूब कहा है–

जफ़र आदमी उसको न जानिएगा वह हो कैसा ही साहिबे फ़हम व ज़का
जिसे ऐश में यादे ख़ुदा न रही, जिसे तैश में ख़ौफ़े ख़ुदा न रहा।

तर्जुमा–*'और ऐ क़ौमे आ़द! वह वक़्त याद करो, जब तुम को क़ौमे नूह के बाद उनका जानशीं बनाया और तुमको मख़्लूक़ में हर तरह की फ़राख़ी अ़ता की, पस अल्लाह की नेमतों को याद करो।'* (7 : 69)

तर्जुमा–*'और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो।'* (7 : 74)

तर्जुमा–*'और हमने बेशक तुमको ज़मीन में क़ुदरत व सतवत अ़ता की और तुम्हारे लिए उनमें ज़िंदगी के सामान बख़्शे, फिर तुममें बहुत कम शुक्र गुज़ार हैं'* (7-10)

3. इंसान जब अल्लाह तआला पर मज़बूत यक़ीन कर लेता और ईमान की मिठास से फ़ैज़याब हो जाता है तो फिर कायनात की बड़ी से बड़ी ताक़त और दुनिया का हौलनाक ज़ुल्म भी उसको हक़ व सदाक़त से डगमगा नहीं सकता और वह इस्तिक़ामत का पहाड़ बनकर ईसार व क़ुरबानी का पैकर

Copyright OfflineDeeniApp

साबित होता है, चुनांचे 'अस्हाबे उख़दूद' का वाक़िया इसकी ज़िन्दा गवाही है।

4. 'जज़ा अज़ जिन्से अ़मल' अल्लाह तआ़ला का बोलता क़ानून है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि ज़ालिम व मुतकब्बिर को ज़ुल्म व किब्र के वजूद में आते ही फ़ौरन सज़ा मिल जाए, इसलिए कि रहमत की सिफ़त के तक़ाज़े के तौर पर यहां साथ-साथ मोहलत देने का क़ानून भी काम कर रहा है, अलबत्ता जब अचानक पकड़ कर ली जाती है, तो फिर छुटकारा नामुम्किन है।

अस्हाबुल फ़ील (570 ई०)

हब्शा और नजाशी

आज के दौर में कुछ साल पहले तक हब्शा को अबीसीनिया कहा जाता था और आज कल इथोपिया कहा जाता है। अरब, हब्शा के बादशाह को नजाशी का लक़ब देते रहे हैं। अस्हमा बिन अबजर मशहूर नजाशी था, जिसने ख़ुश-क़िस्मती से नबी अकरम के नबी बनाए जाने का ज़माना पाया और उसे इस्लाम की दौलत मिली। हब्शा का मज़हब और उनका रहन-सहन शुरू से ही मिस्र (अरब) के मज़हब व तमद्दुन का असर अपनाता रहा है, जब मिस्र में ईसाई धर्म फैला तो हब्शा भी ईसाई धर्म की ओर चल पड़ा।

नोट : कुछ साल पहले तक अबीसीनिया का हुक्मरां ईसाई था। यह शख़्सी हुकूमत थी। इस हुक्मरां का दावा था कि उसके पास रिसालत के ज़माने के बहुत से तबर्रुक एक लोहे के संदूक़ में हिफ़ाज़त से रखे हैं, जिनको वह दूसरी जंग में अपने मुल्क पर इटली के क़ब्जे के वक़्त, हवाई जहाज़ में इंतिहाई अ़ज़ीज़ समझ कर अपने साथ लन्दन ले गया था। (मुरत्तिब)

अबरहा अल अशरम

अबरहा शाही खानदान से था और नाककटा था, इसलिए अरबवाले उसको अबरहा अल-अशरम कहते हैं। अरबी में अशरम नाक कटे को कहते

Copyright OfflineDeeniApp

हैं। उसकी हुकूमत की शुरूआत 525 ई० से होती है। यह ईसाई धर्म में बड़ा जोशीला था, उसने बहुत से गिरजा बनवाए। सबसे बड़ा और मशहूर गिरजा राजधानी सनआ़ में बनवाया, जिसको अरब 'अल-क़लीस' कहते हैं, जो यूनानी लफ़्ज़ कलीसा का अरबी बनाया हुआ है। यह गिरजा बनावट के एतबार से बेमिसाल है। उसने यह तमन्ना ज़ाहिर की कि अरब वाले जो मक्का में हज करने जमा होते हैं, उन सबका रुख़ इस कलीसा की तरफ़ मोड़ दिया जाए और यही हज की जगह बन जाए। अरबों ने जब यह सुना तो बहुत बिगड़े।

अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले)

अरब की तारीख इसकी गवाह है कि तमाम अरब, भले ही उनका ताल्लुक़ किसी भी मज़हब या फ़िरक़े से हो, काबे की बहुत ज़्यादा अज़्मत करते और अपने-अपने अ़क़ीदे के मुताबिक़ उसका हज करना मुक़द्दस फ़र्ज़ समझते थे और यही वजह थी कि ख़ास काबा के अन्दर अरब के अलग-अलग फ़िरक़ों के बुत (तीन सौ साठ की तायदाद में) नसब (गड़े हुए) थे।

बहरहाल जब सनआ में ठहरे हुए किसी हिजाज़ी ने यह सुना कि अबरहा ने 'अल क़लीस' को इस नीयत से बनाया है, तो उसको ग़ुस्सा आया और उसने रात ही में मौक़ा पाकर उस कलीसा को नजिस कर दिया। अबरहा को जब सुबह को यह मालूम हुआ और तहक़ीक़ के बाद पता चला कि यह काम किसी हिजाज़ी का है, तो ग़ुस्से से बे-क़ाबू हो गया और गिरजा की बेहुर्मती देखकर ग़ैज़ व ग़जब में पेच व ताब खाने लगा और क़सम खायी कि अब काबा इब्राहीमी को बर्बाद किए बग़ैर चैन से न बैठूंगा। यह इरादा करके अबरहा भारी फ़ौज़ और हाथियों की एक तायदाद लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हुआ। यह ख़बर तमाम अरब क़बीलों में हवा पर सवार होकर पहुंच गई और तमाम अरब में इससे बेचैनी पैदा हो गई।

सबसे पहले यमन के ही एक अमीर ज़ूनस ने यमन से निकल कर अरब के अलग-अलग क़बीलों के पास क़ासिद भेजे कि मैं अबरहा का मुक़ाबला करना चाहता हूं। आपको चाहिए कि आप इस नेक मक़्सद में मेरा साथ दें। चुनांचे वह आगे बढ़कर अबरहा के मुक़ाबले में आ गया और उससे लड़ा, मगर

Copyright OfflineDeeniApp

हार का मुंह देखना पड़ा और ज़ूनस गिरफ़्तार कर लिया गया। इसके बाद कुछ और मुख़ालफ़तों का मुक़ाबला करता हुआ मुग़म्मस की घाटी तक पहुंचने में कामियाब हो गया।

मुग़म्मस पहुंच कर अबरहा ने एक हबशी फ़ौजी अफ़सर को, जिसका नाम अस्वद बिन मक़्सूद था, हुक्म दिया कि वह मक्का जाकर छापा मारे। अस्वद मक्का के क़रीब पहुंचा, तो क़ुरैश और दूसरे क़बीलों के ऊंटों और भेड़-बकरियों के रेवड़ को जो बड़ी तायदाद में चर रहे थे, पकड़ कर अपनी फ़ौज में ले गया। उनमें अ़ब्दुल मुत्तलिब के भी सौ ऊंट शामिल थे।

उस ज़माने में अ़ब्दुल मुत्तलिब क़ुरैश के सरदार थे। यह हाल देखकर क़ुरैश, कनाना, हुज़ैल और दूसरे क़बीलों ने आपस में मश्विरा किया कि अबरहा का मुक़ाबला किस तरह किया जाए? मश्विरे के बाद यह तै पाया कि हममें लड़कर जीतने की ताक़त नहीं है, इसलिए हमको मक्का छोड़कर क़रीब की पहाड़ी पर चले जाना चाहिए। अभी ये लोग मक्का ही में थे कि अबरहा की ओर से ख़ब्बाता अल-हुमैरी पहुंचा और मालूम किया कि मक्का का सरदार कौन है? लोगों ने अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम की तरफ़ इशारा किया। ख़ब्बाता ने कहा कि मैं अबरहा की तरफ़ से आया हूं। हमारे बादशाह का यह हुक्म है कि आप तक यह पैग़ाम पहुंचा दूं कि हमारा इरादा आप लोगों को नुक़्सान पहुंचाने का नहीं है और न हम आपसे लड़ने आए हैं। पस अगर तुम्हारा इरादा मुक़ाबला करने और रोकने का हो तो तुम जानो और अगर तुम हमारे इस इरादे में रोक न बनो, तो हमारा बादशाह आपसे मुलाक़ात की ख़्वाहिश रखता है।

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, हमारा बिल्कुल इरादा नहीं है कि हम तुम्हारे बादशाह से लड़ें और न हममें यह ताक़त है। यह अल्लाह का घर है और उसके बरगज़ीदा नबी इब्राहीम की यादगार, पस अगर अल्लाह इसकी हिफ़ाज़त करना चाहेगा, तो वह कर सकता है और अगर उसको इसकी हिफ़ाज़त नहीं चाहिए, तो हम मुक़ाबला करने के क़ाबिल बिल्कुल नहीं है।

ग़रज़ इस बातचीत के बाद अ़ब्दुल मुत्तलिब अबरहा की फ़ौज में पहुंचे और एक दरबारी की तरफ़ से सिफ़ारिश और तआरुफ़ (परिचय) कराने पर

Copyright OfflineDeeniApp

उसके सामने पेश हुए। अ़ब्दुल मुत्तलिब बहुत शानदार और बहुत ख़ूबसूरत इंसान थे। अबरहा ने देखा तो उनके साथ इ़ज़्ज़त से पेश आया और अपने बराबर उनको जगह दी।

बातचीत शुरू हुई तो उनकी बातों और ख़िताब के अन्दाज़ से अबरहा बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुआ। बात-चीत के दौरान जब मामले पर बात आई तो अ़ब्दुल मुत्तलिब ने शिकायत की कि आपके सरदार ने मेरे ऊंट गिरफ़्तार कर लिए हैं, इसलिए आप से दरख़्वास्त है कि उनको मेरे हवाले कर दीजिए।

अबरहा ने यह सुना तो कहा, अ़ब्दुल मुत्तलिब! मैं तो तुमको बहुत अक़्लमंद और समझदार समझता था, लेकिन इस मांगने पर सख़्त ताज्जुब है, तुमको मालूम है कि मै काबा के ढाने के लिए आया हूं, जो तुम्हारी निगाह में सबसे ज़्यादा अ़ज़्मत वाला और मुक़द्दस है, लेकिन तुमने उसके बारे में एक जुम्ला भी नहीं कहा और ऐसी छोटी और हक़ीर बात का ज़िक्र कर रहे हो?

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, बादशाह! ये ऊंट चूंकि मेरी मिल्कियत हैं, इसलिए मैं ने उनके बारे में दरख़्वास्त पेश की और काबा मेरा घर नहीं, ख़ुदा का मुक़द्दस घर है, वह अपने आप इसकी हिफ़ाज़त करने वाला है। मैं कौन हूं जो उसके लिए सिफ़ारिश करूं?

अबरहा कहने लगा, अब इसको मेरे हाथ से कोई नहीं बचा सकता।

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, आप जानें, रब्बुल-बैत (घर का रब) जाने।'

यहां पहुंच कर बात-चीत का सिलसिला ख़त्म हो गया और अबरहा ने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि अ़ब्दुल मुत्तलिब के ऊंट वापस कर दिए जाएं।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि अ़ब्दुल मुत्तलिब के साथ बनी बक्र का सरदार यामर बिन नफ़ासा और बनी हुज़ैल का सरदार ख़ुवैलद बिन ख़ासला भी थे। रवाना होने से पहले उन्होंने अबरहा के सामने यह पेशकश की कि अगर काबा के गिराने से बाज़ आ जाएं, तो हम जिज़या का एक तिहाई माल आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर देंगे, मगर अबरहा ने अपनी ताक़त के नशे में इस पेशकश को ठुकरा दिया और अपने इरादे पर अड़ा रहा, तब ये लोग नाकाम

Copyright OnlineDeeniApp

वापस आ गए।

अ़ब्दुल मुत्तलिब ने वापस आकर क़ुरैश और अरब के दूसरे क़बीलों को जमा किया और उनको पूरी बातें सुना कर यह मश्विरा दिया कि अब हम सबको क़रीब ही किसी पहाड़ी पर जमा हो जाना चाहिए, ताकि इस मंज़र को अपनी आंख से न देख सकें। जब अह्ले मक्का पहाड़ पर जाने लगे, तो अ़ब्दुल मुत्तलिब की क़ियादत में काबतुल्लाह में हाज़िर हुए और उसकी ज़ंजीर पकड़ कर दरबारे इलाही में यह दुआ़ की–

ऐ अल्लाह! हम इस बारे में ग़मगीन नहीं हैं कि जब हम अपनी चीज़ों की हिफ़ाज़त कर सकते हैं तो अपनी चीज़ (काबे) की तुझको ज़रूर हिफ़ाज़त करनी चाहिए और तेरी तदबीर पर न सलीब की ताक़त ग़ालिब आ सकती है और न सलीब वालों की कोई तदबीर। हां, अगर तू ही यह चाहता है कि इनको अपने मुक़द्दस घर को ख़राब करने दे, तो फिर हम कौन? जो तेरा जी चाहे सो कर।'

इसके बाद अ़ब्दुल मुत्तलिब और तमाम क़ुरैश मक्का को ख़ाली करके क़रीब के पहाड़ों पर चले गए और घाटियों में पनाह ले कर हालात का इन्तिज़ार करने लगे।

अगली सुबह को अबरहा ने अपनी फ़ौज मक्का की ओर बढ़ाई। अगली क़तारों में हाथी थे और उसके पीछे भारी फ़ौज। अभी यह फ़ौज मक्का तक नहीं पहुंची थी कि राह ही में अचानक परिंदों के ग़ोल के ग़ोल नमूदार हुए और फ़ौज के सर पर फ़िज़ा में छा गए, उनकी चोंच और उनके पंजों में कंकड़ियां थीं। परिंदों ने इन कंकड़ियों को फ़ौज पर फेंकना शुरू किया। जिस आदमी को कंकड़ियां लगती थीं बदन फोड़ कर बाहर निकल आती थीं और तुरन्त ही अंग गलने-सड़ने लगते थे। नतीजा यह निकला कि थोड़ी देर में सारी फ़ौज तहस-नहस होकर रह गई।

मुहम्मद बिन इसहाक़ कहते हैं कि कुछ लोग इसी हाल में फ़ौज से भाग कर यमन और हबशा पहुंचे और उन्होंने अबरहा और उसकी फ़ौज की तबाही का हाल सुनाया।

मशहूर महद्दिस इब्ने अबी हातिम, उबैद बिन उमैर की रिवायत से नक़ल

Copyright OfflineDeeniApp

करते हैं कि जब अबरहा की फ़ौज मक्का की ओर बढ़ी तो तेज हवा चली और समुन्दर की ओर से परिंदों का ज़बरदस्त लश्कर (फ़ौज) परे के परे बांधे हुए है, उनके मुंह और उनके दोनों पंजों में कंकड़ियों थीं। उन्होंन पहले तो आवाज़ की और फिर फ़ौज पर कंकड़ियां मारने लगे, साथ ही तुंद व तेज़ हवा चलने लगी, जिसने पत्थर की इस वर्षा को फ़ौज के लिए बहुत बड़ी मुसीबत बना दिया। चुनांचे जिस आदमी पर ये कंकड़ियां गिरीं, बदन फोड़ कर बाहर निकल आईं और फिर बदन गलने और सड़ने लगा और इस तरह पत्थर के इन टुकड़ों ने सारी फ़ौज को छलनी कर डाला।

कहते हैं कि अबरहा ने फ़ौज को हुक्म दिया कि वह मक्का की तरफ़ बढ़े, जब वह मक्का के क़रीब पहुंची तो हाथियों की क़तार में सबसे पहले उस हाथी ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया, जिस पर अबरहा सवार था। फ़ीलबान अगरचे उसको आंकस पर आंकस लगा रहा था और ज़ुबानी डांट-डपट रहा था, मगर वह किसी तरह आगे बढ़ने का नाम नहीं लेता था, लेकिन जब उसको यमन की ओर चलाते थे तो वह तेज़ी के साथ चलने लगता था। इस हालत में अचानक परिन्दों के ग़ोल ने आ घेरा।

गोया क़ुदरत की तरफ़ से यह अबरहा के लिए आख़िरी तंबीह थी कि वह अब भी समझ जाए कि उसका यह इरादा बातिल और नापाक है और यह हिम्मत असल में अल्लाह की ताक़त को चैलेंज है, इसलिए उसको इससे बाज़ आ जाना चाहिए, लेकिन उस बदबख़्त ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपने किरदार के नतीजे को पहुंच गया।

कुछ रिवायतों में यह भी है कि जब परिन्दों के पत्थरों की बारिश से अबरहा की फ़ौज बर्बाद हो गई तो उसमें कुछ आदमी जो बदहाली के साथ फ़रार होकर यमन पहुंचे थे, उनमें से खुद अबरहा भी इस हालत में पहुंचा कि उसके तमाम अंग गल सड़कर गिर चुके थे और वह सिर्फ़ एक गोश्त का लोथड़ा नज़र आता था।

यानी क़ुदरत ने जिस तरह फ़िरऔन को ग़र्क़ कर देने के बाद उसकी लाश को इसलिए किनारों पर फेंक दिया था कि वह मिस्र के क़िब्तियों और बनी इसराईल दोनों के लिए सबक़ बने, इसी तरह यमन और हब्श के बाशिंदों

Copyright OfflineDeeniApp

के सबक़ के लिए अबरहा को इस हालत में यमन पहुंचाया कि वे यह ग़ौर करें कि जिस आदमी ने अपनी माद्दी ताक़त के घमंड पर अल्लाह की ताक़त को चैलेंज किया था, आज क़ुदरत के ज़बरदस्त हाथ ने उसका यह हाल कर दिया कि— 'फ़-हल अन्तुम मुन्तहून०'

क़ुरआन और अस्हाबे फ़ील

क़ुरआन ने इस वाक़िया के सूरः फ़ील में बयान को अपने मोजज़ों भरे तरीक़े के साथ इस तरह ज़िक्र किया है, गोया ज़ाते अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर अल्लाह तआ़ला का बहुत बड़ा एहसान और उनके एज़ाज़ व इकराम का शानदार 'निशान' है।

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद!) क्या तूने नहीं देखा, तुझको मालूम नहीं कि तेरे परवरदिगार ने हाथियों वालों के साथ क्या मामला किया? क्या उनके फ़रेब को नाकारा नहीं बना दिया और भेज दिए उन पर परिंदों के झुंड के झुंड, वे फेंक रह थे उन पर कंकड़ियां, पस कर दिया उनको खाए हुए भूसे की तरह।*

(105 : 1-5)

अस्हाबे फ़ील का यह अजीब व ग़रीब वाक़िया मुहर्रम के महीने में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश से चालीस या पचास दिन पहले पेश आया, अरबों में यह वाक़िया इस दर्जा अहमियत व शोहरत रखता था कि उन्होंने इस साल का नाम 'आमुलफ़ील' (हाथियों वाला साल) रख दिया और उसके बाद तारीख़ी वाक़ियों को उसी के हिसाब से गिनने लगे जो ईस्वी सन् के हिसाब से 591 ई० और रूमी सन् के हिसाब से 886 सिकन्दरी के मुताबिक़ होता है।

वाक़िए की हक़ीक़त

हैरत होती है कि इस वाक़िए से मुताल्लिक़ बहुत से लोग अजीब-अजीब क़िस्म की तावील पेश करते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि अगर इस वाक़िए में अल्लाह ने एक बहुत ही कमज़ोर और छोटे परिंदे और बहुत ही छोटी और हक़ीर चीज़ से ऐसा काम न लिया होता जिसके के लिए एक भारी फ़ौज और

Copyright OfflineDeeniApp

लड़ाई का बेपनाह सामान चाहिए था, तो फिर इसके बयान की ज़रूरत ही क्या थी। अरब की दूसरी रिवायतों में और अरब तारिख़दानों में यह वाक़िया इतना ज्यादा मशहूर व मारूफ़ था कि जब नबी अकरम सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर मक्के की मुबारक ज़िंदगी में सूरः फ़ील नाज़िल हुई तो मुश्रिकों, यहूदियों और ईसाइयों को इस दुश्मनी के बावजूद जो आपकी मुबारक ज़ात से उनको थी, किसी तरफ़ से भी इस सूरः में बयान किए गए वाक़िए के ख़िलाफ़ कोई आवाज़ न उठी कि यह वाक़िया ग़लत है या इसकी असल हक़ीक़त यह नहीं है, बल्कि दूसरी है।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि चूंकि यह वाक़िया सिर्फ़ ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ही नहीं बल्कि तमाम अरब ख़ासतौर से क़ुरैश की अ़ज़्मत व इ़ज़्ज़त बढ़ाता था, इसलिए किसी ने उसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द नहीं की, यह बात इसलिए ग़लत है कि जिस वक़्त यह सूरः नाज़िल हुई है, उस वक़्त अरब में मज़हबी फ़िरक़ाबन्दी के एतबार से अरब के अलग-अलग हिस्सों में आमतौर से और नजरान के मशहूर शहर में ख़ासतौर से ईसाई धर्म, मक्का के मुशिरकों और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दोनों का हरीफ़ व रक़ीब था, इसलिए वे अरबी नज़ाद होने को नज़रअंदाज कर सकते थे, मगर ईसाई धर्म की इस तौहीन को, जो उनके ख़्याल से मक्का के क़ुरैश की इ़ज़्ज़त बढ़ाती थी या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की अ़ज़्मत को एक लम्हे के लिए भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे, बल्कि वे और यहूदी दोनों ऐसे वाक़िए का सुनना भी गवारा न करते, जो उनके क़िबला 'सख़रा वैतुल मक़्दिस' के अलावा ऐसी जगह 'काबा' की हज़ारों गुना अ़ज़्मत ज़ाहिर करता है, जिसके क़िबला बनने को वह नफ़रत की निगाह से देखते और एलानिया उसको झुठलाते थे।

बहरहाल तारीख़ की साफ़ और बे-मिलावट गवाही यह साबित कर रही है कि आज के एक ईसाई ने भी इस वाक़िए के ख़िलाफ़ ज़ुबान खोलने की जुर्रात नहीं की और हिजरत के बाद जब आपकी ख़िदमते अक़्दस में नजरान का वफ़्द आया तो वह अपने ख़्याल में इस्लाम के ख़िलाफ़ जिस क़िस्म की नुक्ताचीनियां कर सकता था और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और

Copyright OfflineDeeniApp

क़ुरआन के झुठलाने में जो दलीलें दे सकता था, वे सब उसने पेश किए, लेकिन इस वाक़िए के खिलाफ़ एक हर्फ़ भी ज़ुबान से नहीं निकाला और अगर ऐसा हुआ होता तो जिस तारीख़ ने साढ़े तेरह सौ वर्ष से इन तमाम एतराज़ों को अपने दामन में महफ़ूज रखा है, जो मुख़ालिफ़ों की ओर से नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, क़ुरआन और इस्लाम पर किए गए हैं, वह कैसे इस एतराज़ को भुला सकती थी।

नोट : मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी रह० ने यूरोपीय लिखने वालों के अलावा रोशन ख़्याल मुसलमानों की तावीलों के भरपूर जवाब दिए हैं। शौक़ रखने वाले असल किताब से रुजू कर सकते हैं। (मुरत्तिब)

इसलिए तास्सुब से पाक हक़ीक़त पर नज़र रखने वाली निगाह को यह फ़ैसला करना पड़ेगा कि यह वाक़िया अपनी तफ़्सील के साथ जिस तरह अरब रिवायतों और अरब के तारीख़दानों के यहां महफ़ूज़ और मशहूर है, वह क़तई तौर पर सही है और सही न होने की आख़िर कौन-सी वजह है कि सूरः फ़ील के उतरते वक़्त इस वाक़िए को गुज़रे हुए सिर्फ़ 42-43 साल हुए थे और वतनी रिवायतों से सुनने वाले लाखों की तायदाद में तमाम अरब के इलाक़ों में मौजूद थे और किसी ने भी इसकी तावील में ज़ुबान नहीं खोली।

सबक़ और नसीहत

1. मज़हब की तारीख पढ़ने से यह मालूम होता है कि अल्लाह की 'क़ौमों और उम्मतों में अज़ाब देने वाला क़ानून' हिक्मत के तक़ाज़े के तहत दो दौर में बंटा रहा है—

(क) जब तक दीने हक़ की पैरवी करने वाले और अल्लाह के पैग़म्बरों की इत्तिबा करने वालों की तायदाद दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों के मुक़ाबले में इतनी थोड़ी रही है कि आम हालात में वे दुश्मन के मुक़ाबले से माज़ूर रहे हैं, तो इस पूरे दौर में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ज़मीन व आसमान यानी चांद-सितारों और ज़मीन व आसमान की चीज़ों के ज़रिए उनकी मदद और हिमायत का सामान होता रहा है और हक़ और सच्चाई से सरकश क़ौमों पर क़ुदरत, बग़ैर वास्ते के सीधे सीधे ज़मीनी व आसमानी अज़ाब नाज़िल करती

Copyright OfflineDeeniApp

रही है, चुनांचे क़ौमे नूह, आद, अस्हाबे ऐका, फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन वग़ैरह क़ौमें, उम्मतें सब इसी क़िस्म के अज़ाब से हलाक व बर्बाद की गईं। यह दौर हज़रत मूसा ﷺ पर ख़त्म हो जाता है।

(ख) अब हक़ व सदाक़त के जांनिसारों की तायदाद इस दर्जे पर पहुंच गई कि वे अगरचे दुश्मनों के मुक़ाबले में थोड़े भी रहे हों, तब भी अपनी तायदाद की अक्सरियत के लिहाज़ से दुश्मन के ख़िलाफ़ सीना तान कर खड़े होने के क़ाबिल हैं, तो फिर 'अल्लाह की सुन्नत यह रही है कि ख़ुद हक़ के फ़िदाकारों और मुसलमानों को यह हुक्म दिया गया कि लड़ाई के मैदान में निकल कर अल्लाह के दुश्मनों का मुक़ाबला करें और अपनी जान की बाज़ी लगाकर मिल्लते बैज़ा और दीने हक़ की हिमायत के लिए सीने को ढाल बनाएं और साथ ही सच्चे रसूलों के ज़रिए यह वायदा भी दिया जाता रहा कि नतीजे के तौर पर जीत और मदद तुम्हारा ही हिस्सा है, *'वअन्तुमुल अलौ-न इन कुन्तुम मोमिनीन'* और यह नुसरत और फ़त्ह कभी अल्लाह के फ़रिश्तों को जिहाद में साथ देने से पूरी की जाती है और कभी इसकी ज़रूरत नहीं समझी जाती।

ग़रज़ जिन क़ौमों ने भी हक़ व सदाक़त के ज़ाहिर हो जाने और अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों की सच्चाई को जान लेने के बाद अदावत व ग़रूर के रास्ते से, हक़ की तालीम से न सिर्फ़ मुंह मोड़ा, बल्कि उसको मिटाने की नाकाम कोशिश की, तो अल्लाह तआला ने हमेशा उनको 'अमल के बदले' के आसमान पर खींच कर और अलग-अलग क़िस्म के अज़ाब चखा कर ज़िंदगी की किताब से मिटा दिया और अगरचे उनके अज़ाब देने का क़ानून आमतौर से उन्हीं दो दौरों के अन्दर टिका रहा, फिर भी अल्लाह की हिक्मत किसी ख़ास तरीक़े के दायरे में महदूद नहीं है।

2. अल्लाह के काबे के ख़िलाफ़ अस्हाबे फ़ील की लश्करकशी अगरचे उम्मतों के अज़ाब के क़ानून के दूसरे दौर में पेश आई, लेकिन ऐसे हालात और ऐसे ज़माने में पेश आई, जो पहले दौर से मेल खाते हैं, यानी 'फ़तरते वह्य' (वह्य के कट जाने) का ज़माना जिसमें न कोई रसूल है और न कोई नबी और न वक़्त के सच्चे दीन के हामिल ही नज़र आते हैं, और हैं भी तो बिखरे लोग

Copyright OfflineDeeniApp

ह न कि ज़रूरत ज़रूरत कि वह काबतुल्लाह की हिफ़ाज़त के लिए सीना तान ले, बल्कि एक दीन की दावत देने वाले मसीही ही इब्राहीमी काबे और तौहीद के मरक़ज को बर्बाद करने पर उतारू नज़र आता है।

और मक्का के मुश्रिक शिर्क व कुफ़्र के बावजूद अगरचे बैतुल्लाह की अ़ज़मत के क़ायल हैं, मगर ऐसी भारी फ़ौज के मुक़ाबले में ठहरने की ताब नहीं रखते, जिसके साथ भारी भरकम देव जैसे हाथी भी हैं और काबे को रब्बे काबा के भरोसे छोड़कर पहाड़ की घाटियों में पनाह ले लेते हैं, तो ऐसी हालत में दो ही शक्लें हो सकती थीं–

एक यह कि अबरहा और उसकी फ़ौज (हाथी वालों) को उम्मतों के अ़ज़ाब देने के क़ानून के पहले दौर के मुताबिक़ हलाक व बर्बाद कर दे, ताकि यह वाक़िया इंसानी क़ानून के लिए सबक़ हासिल करने की वजह बने। चुनांचे हज़रते हक़ की जानिब से यही दूसरी सूरत सामने आई और क़ुदरत के उसके एजाज़ ने 'अस्हाबे फ़ील' (हाथी वालों) पर जो आसमानी अज़ाब नाज़िल किया था, सूरः फील में उसी को बयान किया गया है– *'ज़ालि-क हुवल हक़्क़'* (यही हक़ है) *'व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़०* (और वे अल्लाह पर हावी होने वाले नहीं।)

3. यह वाक़िया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ दिन पहले पेश आया। यह वह वक़्त था, जबकि कायनात का गोशा-गोशा खुदा-परस्ती और एक अल्लाह होने (तौहीद) के नग़मों से महरूम हो चुका था। ख़ुदा की भेजी हुई सच्ची तालीम के दावेदार हर जगह मौजूद थे, मगर सच्ची तालीम गुम हो चुकी थी और दीन और मिल्लतों की असल रूप-रेखा और उनकी हक़ीक़ी शक्ल व सूरत को बिगाड़ने और बदलने के मरज़ ने तबाह कर दिया था। हर ज़गह शिर्क व कुफ़्र का दौर-दौरा था, कहीं बुत परस्ती हो रही थी, तो किसी जगह तारों की पूजा का शोर था, कहीं आग पूजा इबादत का मक़्सद थी, तो किसी जगह अ़नासिर परस्ती (तत्त्व पूजा) दीन का नस्बुलऐन बन चुकी थी, कहीं तसलीस (ईसाइयत) ने जगह पाकर हज़रत ईसा को 'मसीह इब्नुल्लाह' बनाया था, तो किसी गिरोह ने 'उज़ैरुब्नुल्लाह' कह कर मज़हब के नाम का सहारा लिया था तो ग़रज़ सारी कायनात में या ख़ुदा का

Copyright OfflineDeeniApp

इंकार काम कर रहा था और या फिर अस्नाम परस्ती, अनासिर परस्ती, कवाकब परस्ती, जीव-पूजा ने फ़लसफ़ों वाले विचार की आड़ लेकर शिर्क व कुफ़्र को नुमायां किया, इसलिए यहां खुदा परस्ती के अलावा और सब कुछ मौजूद था। अगर कोई चीज़ गुम थी, तो वह सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश ही थी।

इन हालात को देखते हुए हक़ की ग़ैरत का यह फ़ैसला हुआ कि अब वह हिदायत के नूर को रोशन करे और रिसालत का वह सूरज चमके जो किसी ख़ास दुनिया के एक इलाक़े को ही नहीं, बल्कि तमाम दुनिया और सारी कायनात को सीधा रास्ता दिखाए और कायनात परस्ती से हटाकर ख़ुदा परस्ती सिखाए, वह खोए हुए लोगों को सीधा रास्ता दिखाए और भटके हुए गुलामों को हक़ीक़ी मालिक व आक़ा से मिलाए, टूटे हुओं का रिश्ता जोड़े और जाहिलियत की ज़ंजीरों को तोड़े, वह ख़लील ﷺ की दुआ और मसीह ﷺ के नवेद का हासिल हो और इस तौहीद के मर्कज़ 'काबा' को हक़ीक़ी अज़मत व हुर्मत की दावत देने वाला, जो खुदा-परस्ती के लिए सबसे पुराना और मुक़द्दस घर है और जिसके बनाने और नया करने का शरफ़ इब्राहीम व इस्माईल (अ़लैहिमस्लाम) जैसे पैग़म्बरों को बख़्शा गया। आज इसराईल के ख़ानदान से दावते हक़ की अमानत वापस ले ली गई, क्योंकि उन्होंने ख़ियानत की और अपने बुज़ुर्गों की नसीहत को भुला दिया। 'नाबुदु इला-ह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हाक़ (2 : 133) आज इस्माईल का ख़ानदान नवाज़ा गया और ख़ुदा की पाक अमानत 'सलालतु इस्माईली' को अ़ता कर दी गई। वक़्त आ रहा है कि रिसालत व नुवूवत का यह चांद बहुत जल्द हिरा के ग़ार से निकले और हक़ीक़त का सूरज बनकर दुनिया पर चमके, उसकी मिल्लत मिल्लते इब्राहीमी कहलाए और दुनिया में ख़ुदा का सबसे पहला घर 'काबा' फिर दुनिया का क़िबला और कायनात का मरकज़ बने।

4. सूरः फ़ील के पढ़ने से दो बातें साफ़ तौर पर समझ में आ जाती हैं—

एक यह कि इस वाक़िए से अल्लाह की तरफ़ से काबतुल्लाह की हुर्मत व अज़्मत की हिफ़ाज़त का सोचा-समझा नतीजा निकलता है।

अब रहा यह मामला कि इस वाक़िए को बयान करने का जो मक़्सद है वह अपने अन्दर क्या भेद रखा है, तो अगरचे ख़ुदा की हिक्मतों का एहाता

Copyright OfflineDeeniApp

करना, फ़ानी इंसान की सलाहियत से बाहर की चीज़ है, फिर भी अगर ध्यान दिया जाए तो दो हिक्मतें नुमायां नज़र आती हैं—

1. यह वाक़िया आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैदाइश के लिए एक ज़बरदस्त 'निशान' की हैसियत रखता है, इसलिए कि क़ुदरत के निज़ाम के उभरे हुए निशान हमें यह पता देते हैं कि इस दुनिया में जब भी कोई बड़ा इंक़िलाब बरपा होता है, तो उसके आने से पहले ज़रूर ऐसी निशानियां ज़ाहिर होती हैं कि जिनको देखकर हक़ीक़त समझने वाले और सबक़ लेने वाले इंसान की निगाह आने वाले इंक़िलाब का अन्दाज़ा कर लेती है और इंसान ही नहीं बल्कि हज़रते हक़ ने जानदारों तक में छोटी-छोटी बातों के एहसास को भी सलाहियत दी है, वह आंधी-पानी के तूफ़ान और भूंचाल जैसे वाक़ियों का पता सिर्फ़ निशानियों में पा लेते और वक़्त से पहले ही अपनी बेचैनी और तक्लीफ़ के एहसास के ज़रिए दूर तक पहुंच रखने वाले इंसानों को इन हक़ीक़तों का इल्म करा देते हैं।

2. इस वाक़िए का ज़िक्र करके अल्लाह ने क़ुरैश को अपना बहुत बड़ा एहसान याद दिलाया है कि वे यह न भूल जाएं कि जिस वक़्त 'काबा' की अज़्मत के क़ायल होने के बावजूद अबरहा (हाथी वाले) के उस मुक़ाबले से आजिज़ रहे थे, जिसमें उसने 'काबा' की बर्बादी का बेड़ा उठाया था, उस वक़्त हमने अपनी कामिल क़ुदरत के 'एजाज़ वाले निशान' से वह कर दिखाया कि दुश्मन की शरारत भरी तदबीर और उसका बुरा इरादा दोनों ख़ाक में मिल कर रह गए।

क्या तुमने इस सबक़ भरे वाक़िए से यह सबक़ हासिल नहीं किया कि यह सब कुछ तुम्हारी ख़ुशनूदी के लिए नहीं था, जबकि तुम शिर्क की अंधेरियों में डूबे हुए और कुफ़्र की गन्दगियों में लत-पत थे, बल्कि काबे की उस अज़मत को बाक़ी रखने के लिए था, जिसकी तामीर बूढ़े पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम और जवां साल इस्माईल के मुक़द्दस हाथों से हुई और जिसके बारे में उन्होंने यह फ़रमाया—

तर्जुमा—*ऐ मेरे परवरदिगार! मैने बसाया है अपनी कुछ औलाद को बिन खेती की सरज़मीन में, तेरे बाइज़्ज़त और बाहुर्मत घर के पास।* (14 : 37)

Copyright OfflineDeeniApp

समझो और मामले की हक़ीक़त पर ग़ौर करो और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुख़ालफ़त से बाज़ आ जाओ।

इस बात की ताईद सूरः फ़ील से मिली हुई सूरः क़ुरैश से भी होती है, इसलिए कि इस सूरः में क़ुरैश को यह तवज्जोह दिलाई गई है या इन पर अपने उस एहसान को ज़ाहिर किया गया है कि अरब क़बीलों की आपसी बात-बात पर लड़ाइयों और मामूली-मामूली मामले पर झगड़ों के बावजूद वे हरमे मक्का में किस तरह मामून व महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं और न सिर्फ़ यह बल्कि उसकी ख़िदमत से मुताल्लिक़ होने की वजह से हरम से बाहर सर्दी और गर्मी, दो मौसमों में अपने महबूब तिजारती सफ़रों में शाम और यमन तक बिना कोई ख़ौफ़ और ख़तरा महसूस किए आते जाते है और कोई आंख उठाकर भी उनकी ओर देखने नहीं पाता।

तो क्या वे इस एहसान के शुक्रगुज़ार नहीं होते और हरम और काबा की सभी अ़ज़मत को सरबुलन्द करने के लिए अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुमको जिस सच्चाई की ओर बुलाता है, उस पर लपक पड़ने को तैयार नहीं होते, उनको यह बात हरगिज़ ज़ेब (शोभा) नहीं देती।

तर्जुमा—*पस उनको चाहिए कि वे उसके घर के परवरदिगार की सच्ची परस्तिश करें कि जिसने उनकी भूख के लिए रोज़ी का सामान जुटाया और उनको ख़ौफ़ और ख़तरे से मामून व महफ़ूज़ कर दिया।* (106 : 3-4)

5. अबरहा मज़हबी तौर पर ईसाई था और इसलिए वह बैतुल्लाह (काबा) की अ़ज़्मत को किसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता था और उसका वजूद गोया एक ख़ार था जो कांटे की तरह उसके दिल में चुभ रहा था। उसने सोचा हि 'काबा' मामूली पत्थरों की एक सादा इमारत है, अगर इसके मुक़ाबले में एक ऐसी ख़ुबसूरत और बेनज़ीर इमारत कलीसा (गिरजा) की शक्ल में तैयार की जाए जो क़ीमती पत्थरों और मोती-जवाहरात से सजी हो, तो इस तरह मैं सारे अरब की जवज्जोह 'काबा' से हटा सकूंगा और नयी इबादतगाह को पूरी दुनिया की तवज्जोह की जगह बना सकूंगा।

यह सोच कर एक तरफ़ उसने यमन की राजधानी सनआ में एक बेनज़ीर

Copyright OfflineDeeniApp

गिरजा 'अल-क़लीस' बनवाया और दूसरी तरफ़ एक मामूली वाक़िए को हीला बना कर काबा की बरबादी का तहैया किया। नतीजा जो कुछ हुआ, तफ़्सील से ज़िक्र किया गया, लेकिन इस वाक़िए में इस ओर इशारा मालूम होता है कि दुनिया की तमाम क़ौमों में सबसे ज़्यादा ईसाइयों को ही इस बैतुल्लाह 'काबा' के साथ अ़दावत रहेगी और वे अपने सभ्य या असभ्य हर दौर में उसके ख़िलाफ़ अपनी अ़दावत ज़ाहिर करते रहेंगे और हमेशा तौहीद के इस मर्कज़ के पीछे पड़े रहेंगे।

चुनांचे माज़ी (भूतकाल) की तारीख इस पर गवाह है कि जब कभी ईसाइयों को इसका मौक़ा मिला उन्होंने अ़मली तौर पर अपनी अ़दावत ज़ाहिर किए बग़ैर न छोड़ा और अगरचे अल्लाह तआ़ला ने इस सिलसिले में हमेशा उनके इरादों को नाकाम रखा, मगर वे बहरहाल अपने दिली बुग़्ज़ ब अ़दावत का सबूत दिए बिना न रहे।

6. काबा 'बैतुल्लाह' यानी 'ख़ुदा का घर' कहलाता है, इसका यह मतलब नहीं कि अल-आयाज़ुबिल्लाह' (ख़ुदा की पनाह) अल्लाह किसी घर में रहता है या वह घर का मुहताज है, बल्कि सच तो यह है कि उसने अपनी ख़ालिस इबादत की ग़रज़ से, दूर-दूर के इलाक़े तक के मुसलमानों और सच्चे इबादत गुज़ारों के लिए काबा को मर्क़ज़ व महवर बनाया है और यह इसलिए कि अल्लाह दिशाओं से परे और पाक है और इंसान अपने काम में दिशाओं में से किसी दिशा का मुहताज, तो बहुत ज़रूरी था कि तमाम कायनात के तौहीद की पैरवी करने वाले और इबादत करने वाले रब्बुल आ़लमीन की इबादत और उनकी मिल्ली और दीनी ज़िंदगी के लिए एक मर्कज़ हो, ताकि वे बिखराव और टूट-फूट से बचे रहें और इज्तिमाई एका का सबक़ सीखें।

इसलिए उनके लिए वह मुक़द्दस इमारत 'शआ़इरुल्लाह' क़रार दे दी गई, जिसको बुज़ुर्ग नबी हज़रत इब्राहीम और उनके मुक़द्दस बेटे इस्माईल ने दुनिया में सबसे पहले सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया था और जो तौहीद के एलान की सबसे पुरानी यादगार थी।

पस किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि वह काबा की इसलिए अ़ज़्मत करे कि वह 'सनम' (मूर्ती) है या अपने आप में पूजनीय है, इसलिए

Copyright OfflineDeeniApp

कि जो ऐसा समझेगा वह मुसलमान नहीं बल्कि मुश्रिक कहलाएगा बल्कि उसकी ज़ियारत इसलिए है कि वह 'शआ़इरुल्लाह' (अल्लाह की निशानी) में से है और है तौहीद का मर्कज़।

'फ़ातबिरू या उलिल अब्सार'

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

क़ुरआन और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ातमुल अंबिया वर्रुसुल हैं, उसी तरह ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ातमुल अंबिया बनी इसराईल हैं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दर्मियान कोई दूसरा नबी नहीं भेजा गया। दर्मियान का यह ज़माना वह्य के रुक जाने का ज़माना रहा है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुजद्दिद अंबिया-ए-बनी इसराईल हैं, क्योंकि क़ानूने रब्बानी (तौरात) के बाद बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए इंजील से ज़्यादा मर्तबे वाली कोई किताब नाज़िल नहीं हुई जिससे असल में तौरात के क़ानून की तक्मील हुई है। यह भी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सरवरे कायनात मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सबसे बड़े मुनाद (पुकारने वाले) और मुबश्शिर (ख़ुशख़बरी देने वाले) हैं।

क़ुरआन ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हालात को बड़ी तफ़्सील से बयान किया है और उनकी पाक ज़िंदगी को तम्हीद के तौर पर और उनकी मां हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी के वाक़ियों को रोशन किया है ताकि क़ुरआन की याददहानी का मक़्सद 'बिअय्यामिल्लाह' पूरा हो। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क़ुरआन में किसी जगह 'मसीह' और 'अ़ब्दुल्लाह' के लक़ब से और किसी जगह 'कुन्नियत' (उपनाम) 'इब्ने मरयम' के नाम से ज़ाहिर करते हुए याद किया गया है।

Copyright OfflineDeeniApp

इमरान व हन्ना

हज़रत ज़कारीया और हज़रत यह्या के हालात में गुज़र चुका है कि बनी इसराईल में इमरान एक इबादतगुज़ार और दीनदार शख़्स थे और अपनी इबादत और दीनदारी की वजह से नमाज़ की इमामत भी उन्हीं के सुपुर्द थी और उनकी बीवी हन्ना भी बहुत पारसा और आबिदा थीं। इमरान औलाद वाले न थे और उनकी बीवी हन्ना औलाद की बहुत ज़्यादा तमन्ना करती थीं।

कहते हैं कि एक बार हन्ना ने देखा कि एक परिन्दा अपने बच्चे को खिला रहा है। यह देख कर औलाद की तमन्ना ने बहुत जोश मारा और बेचैनी की हालत में अल्लाह के दरबार में दुआ के लिए हाथ उठा दिए और अर्ज़ किया, परवरदिगार! इसी तरह मुझको भी औलाद अता कर कि वह हमारी आंखों का नूर और दिल का सुरूर बने। दिल से निकली हुई दुआ मक़्बूल हुई और हन्ना ने कुछ दिनों बाद महसूस किया कि वह हामिला (गर्भवती) हैं। क़ुरआन में यह वाक़िया इस तरह बयान हुआ है—

तर्जुमा—*'जब इमरान की बीवी ने कहा, ऐ अल्लाह! मैंने नज़र मान ली है कि मेरे पेट में जो बच्चा है, वह तेरी राह में आज़ाद है, पस तू उसको मेरी ओर से क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू सुनने वाला और जानने वाला है। फिर जब उसने जना तो कहने लगी, परवरदिगार! मेरे लड़की पैदा हुई है और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उसने जना है, लड़का और लड़की बराबर नहीं हैं (यानी हैकल की ख़िदमत लड़की नहीं कर सकती, लड़का कर सकता है) और मैं ने तो उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको (औलाद को) शैतान रजीम के फ़िल्ले से तेरी पनाह में देती हूं।'* (3 : 36)

हज़रत मरयम जब सूझ-बूझ वाली उम्र को पहुंचीं तो सब की रायों से 'यह सईद अमानत' हज़रत ज़कारीया ﷺ के सुपुर्द कर दी गई। तो हज़रत ज़कारीया ने हज़रत मरयम के सिनफ़ी (लैंगिक) एहतरामों का लिहाज़ करते हुए हैकल के क़रीब एक हुजरे को उनके लिए ख़ास कर दिया, ताकि वे दिन में वहां रहकर अल्लाह की इबादत करती रहें और जब रात आती तो उनको अपने मकान पर उनकी ख़ाला 'अल यशाअ्' के पास ले जाते और वह वहीं रात गुज़ारतीं।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मरयम का ज़ुह्द व तक़्वा (संयम व ईश-भय)

हज़रत मरयम दिन व रात अल्लाह की इबादत में लगी रहतीं और जब हैकल की ख़िदमत के लिए उनकी बारी आती, तो उसको भी अच्छी तरह अंजाम देती थीं, यहां तक उनका ज़ुह्द व तक़्वा बनी इसराईल में एक कहावत बन गया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों के ज़रिए उनको यह ख़ुशखबरी सुनाई–

तर्जुमा– *'(ऐ पैग़म्बर! वह वक़्त याद कीजिए) जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुझको बुज़ुर्गी दी और पाक किया और दुनिया की औरतों पर तुझको बरगज़ीदा किया। ऐ मरयम! अपने पालनहार के सामने झुक जा और सज्दा कर और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ नमाज़ अदा कर।'* (3 : 42-43)

ऊपर की आयत में हज़रत मरयम ﷺ की फ़ज़ीलत ने उनकी ज़ात से मुतल्लिक़ कई मस्अले बहस में पैदा कर दिए हैं, जैसे–

1. क्या औरत नबी हो सकती है?

2. क्या हज़रत मरयम नबी थीं?

3. अगर नबी नहीं थीं तो फ़ज़ीलत की आयत का क्या मतलब है?

(हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने) इन तीनों सवालों पर तफ़्सीली बहस के बाद इस ख़्याल का इज़्हार किया है कि–

1. औरत नबी हो सकती है और

2. हज़रत मरयम ﷺ का नबी होना क़तई तौर पर सही है,

3. इसलिए फ़ज़ीलत की आयत का मतलब भी साफ़ हो जाता है, वह यह कि हज़रत मरयम ﷺ को कायनात की तमाम औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल है। जो औरतें नबी नहीं हैं, उन पर इसलिए कि मरयम नबी हैं और जो औरतें नबी हैं (जैसे हज़रत हव्वा, हज़रत सारा, हज़रत हाजरा वग़ैरह) इन पर इसलिए कि वे इन क़ुरआनी बुनियादों की वजह से, जो उनकी फ़ज़ीलतों और कमालों से ताल्लुक़ रखती हैं, बाक़ी नबी औरतों पर बरतरी रखती हैं।

(तफ़्सील के ख़्वाहिशमंद असल किताब की तरफ़ रुजू करें –मुरत्तिब)

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मसीह ﷺ के हालात

यहूदी अपनी मज़हबी रिवायतों की बुनियाद पर जिन उलुलअ़ज़्म पैग़म्बरों के आने के इंतिज़ार में थे, उनमें मसीह ﷺ भी थे और हज़रत यह्या ﷺ ने उनको बताया था कि वह न एलिया हैं, न वह नबी और न मसीह, बल्कि मसीह को भेजे जाने को बताने वाले और मुबश्शिर हैं। क़ुरआन ने भी हज़रत ज़कीरया और हज़रत यह्या के वाक़िए को हज़रत ईसा ﷺ की बशारत देने वाला और पता देने वाला बताया है, जैसा कि सूरः बक़रः 2 : 37 से वाज़ेह है। क़ुरआन ने हज़रत ईसा की पैदाइश के वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

तर्जुमा—'(वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है,) जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा, ऐ मरयम! अल्लाह तुझको अपने कलिमे की बशारत देता है, उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया व आख़िरत में वजाहत, रौब व दबदबा वाला और हमारे क़रीबों में से होगा और वह गोद में और दूध पीने के ज़माने में लोगों से कलाम करेगा और वह नेकों में से होगा।'

मरयम ने कहा, 'मेरे लड़का कैसे हो सकता है जबकि मुझको किसी मर्द ने हाथ तक न लगाया?'

फ़रिश्ते ने कहा, अल्लाह तआ़ला जो चाहता है, उसी तरह पैदा कर देता है। वह जब किसी चीज़ के लिए हुक्म करता है तो कह देता है, 'हो जा' और वह हो जाती है और अल्लाह उसको किताब व हिक्मत और तौरात व इंजील का इल्म अ़ता करेगा और वह बनी इसराईल की तरफ़ अल्लाह का रसूल होगा।' (3 : 45-48)

तर्जुमा—*'और ऐ पैग़म्बर! किताब में मरयम का वाक़िया ज़िक्र करो, उस वक़्त का ज़िक्र, जब वह एक जगह पूरब की तरफ़ थी, अपने घर के आदमियों से अलग हुई, फिर उसने उन लोगों की तरफ़ से परदा कर लिया। पस हमने उसकी तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा और वह भले-चंगे आदमी के रूप में नुमायां हो गया। मरयम उसे देख कर घबरा गई, वह बोली, अगर तू नेक आदमी है, तो मैं रहमान ख़ुदा के नाम पर तुझसे पनाह मांगती हूं।'*

फ़रिश्ते ने कहा, मैं तेरे परवरदिगार का भेजा हुआ हूं और इसलिए

Copyright OfflineDeeniApp

नमूदार हुआ हूं कि तुझे एक पाक फ़रज़ंद (बेटा) दे दूं।'

मरयम बोली, 'यह कैसे हो सकता है कि मेरे लड़का हो, हालांकि किसी मर्द ने मुझे छुआ नहीं और न मैं बद-चलन हूं?'

फ़रिश्ते ने कहा, होगा ऐसा ही। तेरे परवदिगार ने फ़रमाया, यह मेरे लिए कुछ मुश्किल नहीं। वह कहता है, यह इसलिए होगा कि उस (मसीह) को लोगों के लिए निशान बना दूं और मेरी रहमत उसमें ज़ाहिर हो और यह ऐसी ही बात है, जिसका होना तै हो चुका है' (19 : 16-21)

जिब्रील अमीन ने मरयम ﷺ को यह ख़ुशख़बरी सुना कर उनके गरेबान में फूंक दिया और इस तरह अल्लाह तआ़ला का कलिमा उन तक पहुंच गया। अल्लाह तआ़ला ने इसकी तफ़्सील को सूरः अंबिया, सूराः तहरीम और सूरः मरयम में ज़िक्र फ़रमाया है।

तर्जुमा—*'और उस औरत (मरयम) का मामला, जिसने अपनी पाकदामनी को क़ायम रखा, फिर हमने उसमें अपनी 'रूह' को फूंक दिया और उसको और उस लड़के को जहानवालों के लिए 'निशान' ठहराया है।'* (21 : 91)

तर्जुमा—*'और इमरान की बेटी मरयम कि जिसने अपनी अस्मत को बरक़रार रखा, पर हमने उसमें अपनी रूह को फूंक दिया।'* (66 : 12)

तर्जुमा—*'फिर उस होने वाले फ़रज़ंद का हमल ठहर गया। (अपनी हालत छुपाने के लिए) लोगों से अलग होकर दूर चली गई, फिर उसे दर्दज़ेह (बच्चा जनने के वक़्त का दर्द) का इज़्तिराब खजूर के एक पेड़ के नीचे ले गया। (वह उसके तने के सहारे बैठ गई) उसने कहा, काश! मैं इससे पहले मर चुकी होती। मेरी हस्ती को लोग भूल गए होते, उस वक़्त (एक पुकारने वाले फ़रिश्ते ने) उसे नीचे से पुकारा, ग़मगीन न हो, तेरे परवरदिगार ने तेरे तले नहर जारी कर दी है और ख़जूर के पेड़ का तना पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला, ताज़ा और पंके हुए फलों के ख़ोशे तुझ पर गिरने लगेंगे, खा पी (और अपने बच्चे के नज़ारे से) आंखें ठंडी कर, फिर अगर कोई आदमी नज़र आए (पूछ-गछ करने लगे) तो (इशारे से) कह दे, मैंने ख़ुदा-ए-रहमान के हुज़ूर रोज़े की मन्नत मान रखी है, मैं आज किसी आदमी से बात-चीत नहीं कर सकती।*

फिर ऐसा हुआ कि वह लड़के को साथ लेकर अपनी क़ौम के पास आई, लड़का उसकी गोद में था। लोग (देखते ही) बोल उठे, 'मरयम! तूने अजीब

Copyright OfflineDeeniApp

हा बात और मज़ाक़ और इतना बड़ी तोहमत का काम कर गुज़री। ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप बुरा आदमी था, न तेरी मां बदचलन थी, (तू यह क्या कर बैठी?) इस पर मरयम ने लड़के की तरफ़ इशारा किया (कि यह तुम्हें बतला देगा कि हक़ीक़त क्या है?) लोगों ने कहा, भला हम इससे क्या बात करें जो अभी गोद में बैठने वाला दूध पीता बच्चा है।'

मगर लड़का बोल उठा, मैं अल्लाह का बन्दा हूं। उसने मुझे किताब दी और नबी बनाया, उसने मुझे बाबरकत किया, भले ही मैं किसी जगह हूं। उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक ज़िंदा रहूं, यही मेरा शिआर हो। उसने मुझे अपनी मां का ख़िदमत गुज़ार बनाया, ऐसा नहीं कि खुदसर और नाफ़रमान होता, मुझ पर उसकी तरफ़ से सलामती का पैग़ाम है। जिस दिन पैदा हुआ, जिस दिन मरूंगा और जिस दिन फिर ज़िदां उठाया जाऊंगा। (19 : 22-23)

नोट : कहते हैं कि हारून मरयम के ख़ानदान में एक आबिद व ज़ाहिद इंसान और बहुत नेक नफ़स मशहूर था। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

क़ौम ने जब एक दूध पीते बच्चे की ज़ुबान से हिक्मत भरी बातें सुनीं तो हैरत में पड़ गई और उसको यक़ीन हो गया कि मरयम का दामन बिला शुबहा हर क़िस्म की बुराई और खोट मे पाक है और इस बच्चे की पैदाइश का मामला यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ से एक 'निशान' है।

यह ख़बर ऐसी नहीं थी कि छिपी रह जाती, क़रीब और दूर सब जगह इस हैरत में डाल देने वाले वाक़िए और ईसा ﷺ की मोजज़े वाली विलादत के चर्चे होने लगे और इंसानी तबयीतों ने इस मुक़द्दस हस्ती से मुताल्लिक़ शुरू ही से अलग-अलग करवटें बदलनी शुरू कर दीं। अस्हाबे ख़ैर ने इसके वजूद को अगर सआदत व बरकत का चांद समझा तो शरीर लोगों ने उसकी हस्ती को अपने लिए बुरा फ़ाल जाना और बुग़्ज़ व हसद के शोलों ने अन्दर ही अन्दर उनकी फ़ितरी इस्तेदाद को खाना शुरू कर दिया।

ग़रज़ इसी टकराने वाली फ़िज़ा के अन्दर अल्लाह तआला अपनी निगरानी में मुक़द्दस बच्चे की तर्बियत और हिफ़ाज़त करता रहा, ताकि उसके हाथों बनी इसराईल के मुर्दा दिलों को ताज़ा ज़िंदगी बख़्शे और उनकी

Copyright OfflineDeeniApp

रूहानियत के सूखे पेड़ को एक बार फिर फलदार बनाए।

तर्जुमा– *'और हमने ईसा बिन मरयम और उसकी मां (मरयम) को अपनी क़ुदरत का) निशान बना दिया और उन दोनों का एक ऊंचा मुक़ाम (बैतुल्लह्म) पर ठिकाना बनाया, जो ठहरने के क़ाबिल और चश्मे वाला है।'*

(23 : 50)

क़ुरआन मजीद ने हज़रत ईसा ﷺ के बचपन के हालात में से सिर्फ़ इसी अहम वाक़िए का ज़िक्र किया है। बाक़ी बचपन के दूसरे हालात को, जिनका ज़िक्र क़ुरआन के वाज़ और नसीहत के ख़ास मक्सद से ताल्लुक़ नहीं रखता था, नज़रंदाज़ कर दिया।

मुबारक हुलिया

मेराज की हदीस (बुख़ारी शरीफ़) के मुताबिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी मुलाक़ात हज़रत ईसा से हुई तो मैंने उनको दर्मियानी क़द वाला सुर्ख़ व सफ़ेद पाया। बदन ऐसा साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ था, मालूम होता था अभी हम्माम से नहा कर आए हैं और कुछ रिवायतों में है कि आपके बाल कंधे तक लटके हुए थे और कुछ हदीसों में है कि रंग खिलता हुआ गेहुवां था।

रसूल बनाए गए

यहूदियों के अ़क़ीदे का और अ़मली ज़िंदगी का मुकम्मल नक़्शा तो तौरात में मौजूद है, लेकिन इन हक़ीक़तों और इनके नतीजों को क़ुरआन में भी इस तरह बयान किया गया है–

तर्जुमा– *'और बेशक हमने मूसा को किताब (तौरात) अ़ता की और उसके बाद हम (तुम में) पैग़म्बर भेजते रहे और हमने ईसा बिन मरयम को वाज़ेह मोजज़े देकर भेजा और हमने उसको रूहे पाक (जिब्रील) के ज़रिए क़ूवत व ताईद अ़ता की। क्या जब तुम्हारे पास (ख़ुदा का) पैग़म्बर अपने हुक्म लेकर आया, जिन पर अ़मल करने को तुम्हारा दिल नहीं चाहता था, तो तुमने ग़ुरूर को शेवा (नहीं) बना लिया? पस (पैग़म्बरों की) एक जमाअ़त को झुठलाते हो*

Copyright OfflineDeeniApp

तो एक जमाअ़त को क़त्ल कर देते हो और कहते हो कि हमारे दिल (हक़ क़ुबूल करने के लिए) ग़िलाफ़ में हैं। (यह नहीं) बल्कि इनके कुफ़्र करने पर ख़ुदा ने इनको मलऊन कर दिया है, पस बहुत थोड़े से हैं, जो ईमान ले आए हैं। (2 : 87-88)

तर्जुमा—'और (ऐ ईसा!) जब हमने बनी इसराईल (की पकड़ और क़त्ल के इरादे) को तुझ से बाज़ रखा, उस वक़्त जबकि तू उनके पास खुले मोजज़े लेकर आया, तो कहा बनी इसराईल में से इंकार करनेवालों ने, यह कुछ नहीं है, मगर खुला जादू है।' (5 : 110)

तर्जुमा—'और मैं तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की जो मेरे सामने है और (इसलिए आया हूं) ताकि तुम्हारे लिए कुछ चीज़ें हलाल कर दूं। जो तुम्हारे टेढ़ेपन की वजह से) तुम पर हराम कर दी गई थीं और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की निशानी लेकर आया हूँ, पस अल्लाह का ख़ौफ़ करो और मेरी पैरवी करो। बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है। पस उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है। पस जबकि ईसा ने उनसे कुफ़्र महसूस किया, तो फ़रमाया, 'अल्लाह के लिए कौन मेरा मददगार है', तो शागिर्दों ने जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार।' (3 : 50-52)

तर्जुमा—फिर उनके बाद (नूह व इब्राहीम के बाद) हमने अपने रसूल भेजे और उनके बाद ईसा बिन मरयम को रसूल बना कर भेजा और उसको किताब (इंजील) अ़ता की। (57 : 27)

तर्जुमा—(वह वक़्त याद करने के लायक़ है) जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन कहेगा, 'ऐ ईसा बिन मरयम! मेरी उस नेमत को याद कर, जो मेरी ओर से तुझ पर और तेरी मां पर उतरी, जबकि मैंने रूहुल क़ुद्स (जिब्रील ﷺ) के ज़रिए तेरी ताईद की कि तू कलाम करता था मां की गोद में और बुढ़ापे में और जबकि मैंने तुझको सिखाई किताब, हिक्मत, तौरात और इंजील।' (5 : 110)

तर्जुमा—और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ भेजा हुआ अल्लाह का पैग़म्बर हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की जो मेरे सामने है और बशारत सुनाने वाला हूं एक पैग़म्बर की, जो मेरे बाद आएगा। उसका नाम अहमद है। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम' (61 : 6)

Copyright OfflineDeeniApp

खुली निशानियां

क़ुरआन के क़िस्से

हर मौक़े पर मोजज़ों की बहस में गुज़र चुका है कि हक़ और सच्चाई के मानने और अपनाने में इंसानी फ़ितरत हमेशा दो तरीक़ों से मानूस रही है—

एक यह कि 'हक़ की दावत देने वाले की हक़परस्ती और सच्चाई, दलीलों की ताक़त और उनकी रोशनी के ज़रिए साबित और वाज़ेह हो जाए, और दूसरा तरीक़ा यह कि दलीलों के साथ-साथ अल्लाह की ओर से उसके सच होने की ताईद में, क़ुदरत के आम क़ानून से अलग, अस्बाब व वसाइल के बग़ैर और इल्म व फ़न हासिल किए बग़ैर उसके हाथ पर अजीब मामलों का मुज़ाहरा इस तरह हो कि आम व ख़ास उसके मुक़ाबले में आजिज़ और पिछड़ जाएं और उनके लिए अस्बाब व वसाइल के बग़ैर उन मामलों की ईजाद नामुम्किन हो।

पहले तरीक़े के साथ यह दूसरा तरीक़ा इंसान की अक़्ल व फ़िक्र और उसकी नफ़्सियाती कैफ़ियतों में ऐसा इंक़िलाब पैदा कर देता है कि उनका विजदान यह मानने पर मजबूर हो जाता है कि हक़ की दवत देने वाले (नबी, पैग़म्बर) का यह अ़मल असल में ख़ुद उसका अ़मल नहीं है, बल्कि उसके साथ ख़ुदा की ताक़त काम कर रही है और बेशक यह उसके सच्चे होने की एक और दलील है। चुनांचे क़ुराआन मजीद में आयत—

तर्जुमा—*'और न फेंका था तूने जिस वक़्त कि फेंका था, लेकिन अल्लाह ने फेंका था।'*

(8 : 17)

में यही हक़ीक़त ज़ाहिर करनी मक़्सूद है, मगर इन हर दो तरीक़ों में से उन सोचने-समझने वालों पर जो सोचने-समझने की ताक़त में ऊंचा मक़ाम रखते है, पहला तरीक़ा ज़्यादा असरदार साबित होता है और वे दूसरे तरीक़े को पहले तरीक़े की ताईद व तक़्वियत की हैसियत से क़ुबूल करते और हक़ीक़ी दावत देने वाले (नबी व पैग़म्बर) की नुबूवत व रिसालत के दावे के सच होने का और ज़्यादा अ़मली सबूत समझ कर उस पर ईमान ले आते हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

और इन सोचने-समझने वालों के ख़िलाफ़ क़ूवत व इक़्तिदार वाले और उनकी ज़ेहनियत से मुतास्सिर आम इंसानी दिल तस्दीक़ के दूसरे तरीक़े से ज़्यादा मुतास्सिर होते और नबी और पैग़म्बर के मोजज़े भरे कामों को कायनात की ताक़त व क़ूवत के दायरे से ऊपर वाली हस्ती का इसदा व क़ूवत यक़ीन करने पर मजबूर हो जाते हैं और उन मामलों को 'ख़ुदाई निशान', समझ कर हक़ व सदाक़त की दावत के सामने सर झुका देते हैं।

मुख़्तसर यह कि अल्लाह की किताब और उसके जुम्लों पर आयत और आयतों के इतलाक़ से तो क़ुरआन की कोई लम्बी सूरः ही ख़ाली होगी, तमाम क़ुरआन में जगह-जगह इस ज़्यादती के साथ उसका इस्तेमाल हुआ है कि उसकी सूची मुस्तक़िल मौज़ू बन सकती है।

इसी तरह 'खुली निशानियों' से मुराद अगरचे अल्लाह की किताब (क़ुरआन, तौरात, ज़बूर, इंजील) और उनकी आयतों को ही समझा गया है, मगर किसी-किसी जगह उसको मोजज़ों के लिए भी इस्तेमाल किया गया है।

तवज्जोह के क़ाबिल बात और मोजज़ों की हक़ीक़त

नबी और रसूल के भेजे जाने का मक़्सद कायनात की रुश्द व हिदायत और दीन व दुनिया की फ़लाह व ख़ैर की रहनुमाई है और वह अल्लाह की ओर से आई वह्य की रोशनी में इस मंसबी फ़र्ज़ को अंजाम देता और इल्म व बुरहान और हक़ की हुज्जत के ज़रिए सच्चाई का रास्ता दिखाता है। वह यह दावा नहीं करता कि फ़ितरत (प्रकृति) और फ़ितरत से परे के मामलों में हिस्सा लेना भी उनका मंसबी काम है, बल्कि वह बार-बार यह एलान करता है कि मैं ख़ुदा की ओर से खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला और अल्लाह की ओर बुलाने वाला बनकर आया हूं, मैं इंसान हूं और ख़ुदा का नबी, इससे ज़्यादा और कुछ नही हूं, तो फिर उसके सच्चाई के इस दावे के इम्तिहान और परख के लिए उसकी तालीम, उसकी तर्बियत और उसकी शख़्सियत का बहस में आ जाना यक़ीनी तौर पर माक़ूल, लेकिन उससे फितरत से परे और आदत के ख़िलाफ अजीब व ग़रीब चीज़ों की मांग अक़्ल के खिलाफ़ और बेजोड़ बात मालूम होती है और यह नज़र आता है, जैसे किसी अच्छे तबीब (हकीम,

Copyright OfflineDeeniApp

डाक्टर) की हकीमी के दावे पर उससे यह मांग की जाए कि वह जादुई खटके की एक उम्दा अलमारी या लकड़ी का एक अजीब क़िस्म का खिलौना बना कर दिखाए। तबीब ने यह दावा नहीं किया था कि वह माहिर लोहार या बढ़ई है, बल्कि उसका दावा तो जिस्मानी मरज़ों के इलाज का है। इसी तरह पैग़म्बरे ख़ुदा का यह दावा नहीं होता कि वह ख़ुदा की तरह कायनात पर हर क़िस्म के इस्तेमालात का मालिक व क़ादिर है, बल्कि उसका दावा तो यह है कि वह तमाम रूहानी मरज़ों के लिए कामिल तबीब और माहिर हकीम है।

बहरहाल 'अल्लाह की सुन्नत' यह जारी रही है कि जब किसी क़ौमी हिदायत या तमाम इंसानी कायनात की कामियाबी के लिए नबी और पैग़म्बर भेजा जाता है, तो उसको अल्लाह की तरफ़ से मज़बूत दलीलों और अल्लाह की आयतों (मोजज़ों) से यानी दोनों से नवाज़ा जाता है, वह एक ओर अल्लाह की वह्य के ज़रिए कायनात को मआश व मआद (खाने-पीने) से मुताल्लिक़ करने-न करने के हुक्मों से नवाज़ा जाता है और बेहतरीन दस्तूर व निज़ाम पेश करता है तो दूसरी तरफ़, अल्लाह की मस्लहत के मुताबिक़ 'ख़ुदाई निशानों' का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करके अपने सच्चे होने और अल्लाह की तरफ़ से होने का सबूत देता है, साथ ही हर एक पैग़म्बर को इसी तरह के मोजज़े और निशानियां दी जाती हैं, जो उस ज़माने की इल्मी तरक़्क़ियों या क़ौमी और मुल्की ख़ुसूसियतों के मुनासिब होने के बावजूद टकराने वालों को मजबूर करें और पछाड़ें और कोई उनके मुक़ाबले में आने कि हिम्मत न कर सके और अगर तास्सुब और ज़िद दर्मियान में रोक न बनें तो अपनी कोशिशों से की गई तरक़्क़ियों और ख़ुसूसियतों के हक़ीक़तों से आगाह होने की वजह से यह मानने पर मजबूर हो जाएं कि यह जो कुछ सामने है, इंसानों की क़ुदरत से ऊपर, उनकी पहुंच से बाहर और सिर्फ़ एक ख़ुदा ही की जानिब से है।

जैसे हज़रत इब्राहीम के ज़माने में ज्योतिष-शास्त्र (इल्मे नुजूम Astronomy) और इल्मे कीमिया (Chemistry) का बहुत ज़ोर था और साथ ही उनकी क़ौम तारों के असरात को उनके निजी असर समझती और उनको सही असरंदाज़ होने वाले यक़ीन करके एक अल्लाह की जगह उनकी परस्तिश करती थी और उनका सबसे बड़ा देवता शम्स (सूरज) था, क्योंकि वह रोशनी

Copyright OfflineDeeniApp

और हरारत (गर्मा) दानां रखता था और यही दोनों चीज़ें उनकी निगाह में कायनात की बक़ा और फ़लाह के लिए असल बुनियाद थीं और इसी वजह से दुनिया में 'आग' को उसका मज़हर मान कर उसकी भी पूजा की जाती थी। इसके अलावा उनको चीज़ों के रवाबास व असरात और उनके रद्दे अ़मल (Reaction) पर काफ़ी पकड़ थी, गोया आज की इल्मी दुनिया के लिहाज़ से वे अ़मल के केमिकल तरीक़े को भी बड़ी हद तक जानते थे।

इसलिए अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम को उनकी क़ौम की हिदायत और ख़ुदा परस्ती की तालीम के लिए एक तरफ़ ऐसी रोशन दलीलें दीं, जिनके ज़रिए वे क़ौम के ग़लत अ़क़ीदों को झुठलाएं और हक़ को हक़ बताने की ख़िदमत अंजाम दें और मज़ाहिर परस्ती (ऊपरी चमक-दमक देख कर उनकी पूजा) की वजह से हक़ीक़त के चेहरे पर अंधेरे का जो परदा पड़ गया था, उसको चाक करके रोशन चेहरे को नुमायां कर सकें।

तर्जुमा—*'और यह हमारी दलील है जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में अ़ता की, हम जिस का दर्जा बुलन्द करना चाहते हैं, कर दिया करते हैं, बेशक तेरा रब हिक्मत वाला और जानने वाला है'* (6 : 83)

और दूसरी तरफ़ जब तारा-परस्त और बुत-परस्त बादशाह से लेकर क़ौम के आम लोगों ने उनकी दलीलों और सबूतों से ला-जवाब होकर अपनी माद्दी ताक़त के घमंड पर उन्हें धधकती आग में झोंक दिया, तो उसी बड़े पैदा करने वाले ने जिसकी दावत व इर्शाद की ख़िदमत हज़रत इब्राहीम عليه السلام अंजाम दे रहे थे।

तर्जुमा—*'तू सर्द और सलामती बन जा।'* (21 : 69)

कह कर अपनी क़ुदरत का वह शानदार निशान (मोजज़ा) अ़ता किया, जिस ने बातिल के रोबदार ऐवान में ज़लज़ला पैदा कर दिया और तमाम क़ौम उस ख़ुदाई मुज़ाहरे से हैरान व परेशान और ज़लील व ख़ासिर (घाटे में) होकर रह गई।

तर्जुमा—*'और चाहने लगे उसका बुरा, फिर उन्हीं को डाला हमने नुक़्सान में।'* (29 : 70)

और हज़रत मूसा عليه السلام के ज़माने में जादू मिस्री उलूम व फ़ुनून में बहुत

Copyright OfflineDeeniApp

ज़्यादा नुमायां और इम्तियाज़ी शान रखता था और मिस्रियों को जादू के फ़न में कमाल हासिल था, इसलिए हज़रत मूसा को क़ानूने हिदायत (तौरात) के साथ-साथ 'यदे बैज़ा' और 'अ़सा' जैसे मोजज़े दिए गए और हज़रत मूसा ﷺ ने मिस्र के जादूगरों के मुक़ाबले में जब उनका मुज़ाहरा किया तो जादू के तमाम माहिर उसको देख कर एक साथ पुकार उठे कि बेशक यह जादू नहीं, यह तो उससे अलग और इंसानी ताक़त से कहीं ऊंचा मुज़ाहरा है, जो हक़ीकी ख़ुदा ने अपने सच्चे पैग़म्बरों की ताईद के लिए उनके हाथ पर कराया है, क्योंकि हम जादू की हक़ीक़त को ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं और यह कह कर उन्होंने फ़िरऔ़न और क़ौमे फ़िरऔ़न के सामने बे-ख़ौफ़ी के साथ एलान कर दिया कि वह आज से मूसा और हारून अ़लैहिमस्सलाम के एक ख़ुदा की परस्तिश करेंगे।

तर्जुमा—*और सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहने लगे, हम तो जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए, जो मूसा और हारून का परवरदिगार है।*

(8 : 120-122)

मगर फ़िरऔ़न और दरबार के सरदार अपनी बदबख़्ती से यही कहते रहे—

तर्जुमा—*'फिरऔन ने दरबारियों से जो आस-पास (बैठे) थे, कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि यह बड़ा जादूगर है।'* (26 : 34)

तर्जुमा—*'ग़रज जब उन लोगों के पास मूसा हमारी ख़ुली दलीलें लेकर आए, तो उन लोगों ने (मोजज़े देख कर) कहा कि यह तो (सिर्फ़) एक जादू है कि (ख़ामख़ाह अल्लाह तआ़ला पर) झूठ गढ़ा जाता है और हमने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे अगले बाप-दादों के वक़्त में भी हुई हो।'*

(28 : 36)

हज़रत ईसा और मोजज़े

इसी तरह हज़रत ईसा ﷺ के ज़माने में तिब्ब का इल्म (Medical Science) और भौतिक ज्ञान (Physics) की बहुत चर्चा थी और यूनान के कमाल पर बहुत ज़्यादा असर डाल रही थी और मुल्कों में सदियों से बड़े

Copyright OfflineDeeniApp

तबीब और फ़लसफ़ी अपनी हिक्मत व दानिश और तिब्ब के कमालों का मुज़ाहरा कर रह थे, मगर एक ख़ुदा की तौहीद और दीने हक़ की तालीम से आम व ख़ास लोग आमतौर से महरूम थे और खुद बनी इसराईल भी जो कि नबियों की नस्ल में होने पर हमेशा फ़ख्र करते रहते थे, गुमराहियों में पड़े हुए थे।

पस इन हालात में 'अल्लाह की सुन्नत' ने जब हज़रत ईसा को रुश्द व हिदायत के लिए चुन लिया, तो एक तरफ़ उनको हुज्जत व बुरहान (इंजील) और हिक्मत से नवाज़ा तो दूसरी तरफ़ ज़माने के ख़ास हालात के मुनासिब कुछ ऐसे निशान (मोजज़े) भी अ़ता फ़रमाए, जो उस ज़माने के कमाल वालों और उनके पीछे चलने वालों पर इस तरह असर डालने वाले हों कि हक़ तलाश करने वाले को यह मानने में कोई शक बाक़ी न रहे कि बेशक ये अ़मल हासिल किए गए इल्मों से जुदा, सिर्फ़ अल्लाह की ओर से रसूले बरहक़ की ताईद में ज़ाहिर हुए हैं और तास्सुब रखने वाले और सरकश के पास इसके अलावा और कोई रास्ता न रहे कि उनको 'खुला जादू' कह कर अपने बुग्ज़ व हसद की आग को और बढ़ा दे।

ईसा ﷺ के उन मोजज़ों में से जिनका मुज़ाहरा उन्होंने क़ौम के सामने किया, क़ुरआन ने चार मोजज़ों का खुल कर ज़िक्र किया है—

1. वह ख़ुदा के हुक्म से मुर्दे को ज़िंदा कर दिया करते थे।

2. और पैदाइशी अंधे को आंख वाला और कोढ़ को चंगा कर दिया करते थे।

3. वह मिट्टी से परिंदा बनाकर उसमें फूंक देते थे और अल्लाह के हुक्म से उसमें रूह पड़ जाती थी।

4. वह यह भी बता दिया करते थे कि किसने क्या खाना खाया और क्या ख़र्च किया और क्या घर में भंडारा जमा कर रखा है।

क़ौमों में ऐसे मसीहा मौजूद थे जिनके इलाज व मुआ़लजे और अपनी तदबीरों से, मायूस मरीज़ शिफ़ा पाते थे, उनमें भौतिक-ज्ञान के माहिर ऐसे फ़लसफ़ी भी कम न थे जो रूह व माद्दा (आत्मा व भूत द्रव्य) की हक़ीक़तों और आसमानी और ज़मीनी चीज़ों पर बेमिसाल नज़रियों और तजुर्बो के

Copyright OfflineDeeniApp

मालिक समझे जाते थे और चीज़ों की हक़ीक़त पर उनकी गहरी नज़र और महारत कमाल वालों के लिए फ़ख़्र की चीज़ थी, लेकिन अब उनके सामने ईसा ﷺ ने सामान और वसीला अपनाए बग़ैर इन मामलों का मुज़हारा किया, तो उन पर भी हिदायत और गुमराही की क़ुदरती तक़्सीम के मुताबिक़ यही असर पड़ा कि जिस आदमी के दिल में हक़ की तलब पाई जाती थी, उसने मान लिया कि बेशक इस क़िस्म का मुज़ाहरा इंसानी पहुंच से बाहर और सच्चे नबी की ताईद व तस्दीक़ के लिए अल्लाह की तरफ़ से है और जिन दिलों में घमंड, हसद, और जलन और दुश्मनी थी, उनके तास्सुब ने वही कहने पर मजबूर किया, जो उनके पहले के नबी और रसूल कहते आए थे—

'यह कुछ नहीं मगर खुला जादू है।' (37 : 15)

चौथे मोजज़े के बारे में तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि इसके मुज़ाहरे की वजह यह पेश आई कि मुख़ालिफ़ जब रुश्द व हिदायत की उनकी दावत से नफ़रत करके उनको झुठलाते और उनकी पेश की हुई खुली निशानियों (मोजज़ों) को सेहर और जादू कहते तो साथी मज़ाक़ के तौर पर यह भी कह दिया करते थे कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला के ऐसे मक़्बूल बन्दे हो तो बताओ आज हमने क्या खाया है और क्या बचा रखा है? तब ईसा ﷺ उनके मज़ाक़ को संजीदगी में बदल देते और अल्लाह की वह्य की मदद से उनके सवाल का जवाब दे दिया करते थे।

मगर क़ुरआन हकीम ने इस मोजज़े को जिस अन्दाज़ में बयान किया है उसको ध्यान देकर पढ़ने-समझने से मालूम होता है कि इस 'निशान' के मुज़ाहरे की वजह तफ़्सीर लिखने वालों की बयान की हुई तौजीह से ज़्यादा बारीक़ और फैली हुई मालूम होती है और वह यह कि ईसा पैग़ामे हिदायत और तब्लीग़े हक़ की ख़िदमत अंजाम देते हुए ज़्यादातर लोगों को दुनिया में फंसे हुए होने, हिदायत व दौलत का लालच देने और ऐश-पसन्द ज़िंदगी की रग़बत से बाज़ रखने पर बयान के अलग-अलग तरीक़ों के ज़रिए तवज्जोह दिलाया करते थे, तो जिस तरह कुछ सईद रूहें इस कलिमा-ए-हक़ के सामने सर झुका दिया करती थीं, इसके ख़िलाफ़ घटिया और दुष्ट इंसान उनके बेहतर वाज़ों से दिली नफ़रत और दूरी रखने के बावजूद मुत्तास्सिर करने वाली

Copyright OfflineDeeniApp

हस्तियों से ज़्यादा उनको यह बतातीं कि हम तो हर वक़्त आपके इस इर्शाद को पूरा करने में लगे रहते हैं, इसलिए कि क़ुदरते हक़ ने यह फ़ैसला किया कि इन मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़क़त के नुक़सान को ख़त्म करने के बजाए हज़रत ईसा ﷺ को ऐसा 'निशान' दिया जाए कि इस ज़रिए से हक़ व बातिल खुल कर सामने आ जाए और अल्लाह के हुक़ूक़ और इंसान के हुक़ूक़ के मारे जाने पर ज़ख़ीरा करने का जो सामना किया जा रहा है, उसका परदा चाक कर दिया जाए।

इन चार क़िस्म के ख़ुदाई निशान (मोजज़ों) के अलावा ख़ुद हज़रत ईसा की बग़ैर बाप की पैदाइश भी एक शानदार 'ख़ुदाई निशान' था, जिसके बारे में अभी तफ़्सील से बातें बयान की गईं।

हज़रत मसीह ﷺ के हाथ पर जो मोजज़े ज़ाहिर किए गए या उनकी पैदाइश जिस मोजज़ाना तरीक़े से हुई, यहूदियों ने हसद की वजह से उसका इंकार किया, तो किया लेकिन कुछ फ़ितरतपरस्त इस्लाम के दावेदार हज़रात ने भी उनके इंकार के लिए राह पैदा करने की नाकाम कोशिश फ़रमाई है, इनमें से कुछ लोग वे हैं जिन्होंने इस इंकार को ज़ाती फ़ायदे के लिए नहीं, बल्कि फ़ितरतपरस्त और ख़ुदा के इंकारी नए यूरोपीय उलेमा से मरऊब होने की वजह से यह रवैया अपनाया है, ताकि उनकी मज़हबियत पर अ़जाइब-परस्ती का इल्ज़ाम न लग सके।

इसी तरह एह्या-ए-मौता (मुर्दा को ज़िंदा कर देना) के मोजज़े का भी इंकार करते हुए यह दावा किया है कि अल्लाह तआ़ला मौत के बाद किसी को इस दुनिया में क़ियामत से पहले जिंदगी नहीं बख़्शेगा, लेकिन इस दावे के ख़िलाफ़ कई जगहों पर ऐसा साबित किया हुआ मौजूद है कि अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया में मौत देने के बाद ताज़ा ज़िंदगी बख़्शी है। (देखिए आयतें 2: 73, 259, 260) इन तमाम वाक़ियों में मुर्दा के ज़िंदा किए जाने के खुले और साफ़ मानी साबित हैं (इसी तरह हज़रत मसीह ﷺ की बिन बाप पैदाइश का भी इंकार किया गया है और क़लम का ग़ैर-ज़रूरी ज़ोर लगाया गया है। लेकिन इस मस्अले की मुवाफ़िक़ और मुख़ालिफ़ रायों से हटकर एक ग़ैर जानिबदार मुसन्निफ़ (लेखक) जब हज़रत मसीह की पैदाइश के मुताल्लिक़

Copyright OfflineDeeniApp

वाज़ेह हो जाएगी कि क़ुरआन हज़रत मसीह ﷺ से मुताल्लिक़ यहूदियों का घटना और ईसाइयों का बढ़ना, दोनों के ख़िलाफ़ अपना वह मंसबी फ़र्ज़ अदा करना चाहता है, जिसके लिए क़ुरआन की हक़ की दावत सामने आई है।

यहूदी और ईसाई इस बारे में दो क़तई मुख़ालिफ़ और आपस में टकराने वाली दिशाओं में चले गए हैं। यहूदी कहते हैं कि हज़रत मसीह झूठे और शोबदे (जादू) दिखाने वाले थे और ईसाई कहते हैं कि वह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे या तीन के तीसरे थे। इन हालात में क़ुरआन ने उन आयतों और वह्यों के ख़िलाफ़ इल्म व यक़ीन की राह दिखाते हुए दोनों के ख़िलाफ़ यह फ़ैसला किया कि हक़ का रास्ता इफ़रात व तफ़रीत के दर्मियान है और सीधे रास्ते की यही सबसे बड़ी पहचान है।

वह कहता है कि वाज़ेह रहे कि हज़रत ईसा ﷺ झूठे नहीं थे, बल्कि अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर और राहे हक़ की सच्ची दावत देने वाले थे। उन्होंने दावते हक़ की तस्दीक़ के लिए जो कुछ अ़जीब बातें कर दिखाईं, वे नबियों के मोज़ज़ो की लिस्ट में शामिल हैं, न कि जादूगरों और तमाशा दिखाने वालों की और यह भी सही है कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के हुई, मगर इससे यह कैसे इलज़ाम आ सकता है कि वह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हो गए? क्या जो शख़्स इंसानी ज़रूरतों यानी खाने-पीने का मुहताज हो वह अ़ब्द और इंसान के अलावा ख़ुदा या माबूद हो सकता है? नहीं, हरगिज़ नहीं।

तो जबकि क़ुरआन ने यहूदियों और ईसाइयों के उन तमाम बातिल अ़क़ीदों को खुले लफ़्ज़ों में रद्द करके, जो उन्होंने हज़रत मसीह ﷺ के बारे में क़ायम कर लिए थे, इस्लाह का अपना फ़रीज़ा अंजाम दिया। यह कैसे मुम्किन था कि अगर बिन बाप की पैदाइश का वाक़िया बातिल और ग़ैर-वाक़ई था और जो सहारा बन रहा था उलूहियते मसीह के बारे में खुलकर, क़ुरआन रद्द न करता, बल्कि इसके ख़िलाफ़ वह जगह-जगह इस वाक़िए को ठीक उस तरह बयान करता जाता जैसा कि इंजील में बयान किया गया है, उसका फ़र्ज था कि सबसे पहले उसी पर कड़ी चोट लगाता और सिर्फ़ इतना कह कर कि हज़रत मसीह का बाप फ़्लां आदमी था, उस सारी इमारत

Copyright OfflineDeeniApp

को जड़ से उखाड़ फेंकता, जिस पर मसीह के इलाह होने की बुनियाद रखी गई। मगर उसने यह तरीक़ा अख़्तियार न किया, बल्कि यह कहा कि यह बात किसी तरह भी मसीह के अल्लाह होने की दलील नहीं बन सकती? इसलिए कि—

तर्जुमा—*'ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक जैसे मिसाल आदम की, बनाया उसको मिट्टी से फिर कहा कि हो जा, वह हो गया।'* (3 : 59)

पस अगर बिन बाप की पैदाइश मसीह को अल्लाह का दर्जा दे सकती है, तो आदम को उससे ज़्यादा अल्लाह बनाए जाने का हक़ हासिल है कि वह बिना मां-बाप के पैदा हुए।

बहरहाल जिन तावील-परस्तों ने हज़रत मसीह ﷺ की बिन बाप की पैदाइश से मुताल्लिक़ आयतों के जुम्लों को जुदा-जुदा करके ग़लत बातें पैदा की हैं, वे इसलिए बातिल हैं कि जब इस वाक़िए से मुताल्लिक़ आयतों को इकट्ठा करके पढ़ा जाए तो एक लम्हे के लिए भी आयतों के मानी में बिन बाप पैदाइश के मानी के सिवा दूसरे किसी भी मानी की गुजांइश नहीं रहती।

इसके अलावा जहां तक इस मसले का अ़क़्ली पहलू है, सो अ़क़्ल भी इसके मुम्किन होने को मुहाल क़रार नहीं देती, यहां तक कि आजकल तो यहां तक हो चुका है कि इंसानी पैदाइश आंखों देखे पैदा होने के आम तरीक़े के अलावा कुछ दूसरे तरीक़ों से भी होने लगी है और इन तरीक़ों को क़ुदरत के क़ानून के ख़िलाफ़ इसलिए कहा नहीं जा सकता कि हमने क़ुदरत के तमाम क़ानूनों का एहाता नहीं कर लिया है, बल्कि इंसान जितना ही इल्म और समझ की ओर बढ़ता जाता है, उसके सामने क़ुदरत के क़ानून के नये-नये गोशे खुलने लगते हैं।

पस अगर यह सही है कि जो बात कल नामुम्किन नज़र आती थी, आज यह मुम्किन कही जा रही है और जल्द या देर, उसके वाक़े होने पर यक़ीन किया जा रहा है, तो फिर नहीं मालूम क़ुदरत के इस क़ानून से इंकार कर देने के क्या मानी हैं? जिसका इल्म अभी तक अगरचे हमको हासिल नहीं है, मगर नबियों और रसूलों जैसी क़ुद्सी सिफ़ात हस्तियों पर इस इल्म की हक़ीक़त खुली हुई है तो क्या इल्मी दलील का यह भी कोई पहलू है कि जिस बात

Copyright OfflineDeeniApp

का हमको इल्म न हो और अक़्ल उसको नामुम्किन और मुहाल न साबित करती हो, उसका इंकार सिर्फ़ इल्म न होने की वजह से कर दिया जाए।

अब इन खुली निशानियों को क़ुरआन मजीद से सुनिए और नसीहत और सबक़ हासिल कीजिए कि इन पुराने वाक़ियों को याद दिलाने का क़ुरआन का यही बड़ा मक्सद है।

तर्जुमा—*'और अल्लाह सिखाता है उस (ईसा ﷺ) को किताबे हिक्मत तौरात और इंजील और वह रसूल है बनी इसराईल की तरफ़, (वह कहता है) कि बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से 'निशान' लेकर आया हूं। वह यह कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की शक्ल बनाता, फिर उसमें रूह फूंक देता हूं और वह अल्लाह के हुक्म से ज़िंदा परिंदा बन जाता है और पैदाइशी अंधे को आंख वाला कर देता हूं और सफ़ेद दाग़ के कोढ़ को अच्छा कर देता हूं और अल्लाह के हुक्म से मुर्दा को जिंदा कर देता हूं और तुमको बता देता हूं जो तुम खाकर आते हो और जो तुम घर में ज़ख़ीरा रख आते हो, सो अगर तुम हक़ीक़ी ईमान रखते हो तो बेशक इन मामलों में (मेरी सच्चाई और अल्लाह की ओर से होने के लिए) 'निशान' है और मैं तौरात की तस्दीक़ करने वाला हूं जो मेरे सामने है और (इसलिए भेजा गया हूं) ताकि कुछ चीज़ों को जो तुम पर हराम हो गई हैं, तुम्हारे लिए हलाल कर दूं, तुम्हारे लिए परवर-दिगार ही के पास से 'निशान' लाया हूं, पस तुम अल्लाह से डरो और (उसके दिए हुए हुक्मों में) मेरी इताअ़त करो, बेशक अल्लाह तआ़ला ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, सो उसकी इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।'*

(3 : 48-51)

तर्जुमा—*'ऐ ईसा बिन मरयम! तू मेरी इस नेमत को याद कर, जबकि तू मेरे हुक्म से गारे से परिंदा बना देता और फिर उसमें फूंक देता था और वह मेरे हुक्म से ज़िंदा परिंदा बन जाता था और जब कि तू मेरे हुक्म से पैदाइशी अंधे को आंख वाला और सफ़ेद दाग़ के कोढ़ को अच्छा कर देता था और जबकि तू मेरे हुक्म से मुर्दा को ज़िंदा करके क़ब्र से निकालता था।'*

(5 : 110)

तर्जुमा—*'फिर जब वह (ईसा) उनके पास खुले निशान लेकर आया तो उन्होंने (यानी बनी इसराईल) ने कहा, यह तो खुला जादू है।'* (61 : 6)

Copyright OfflineDeeniApp

नबियों ने जब कभी भी क़ौमों के सामने अल्लाह की आयतों का मुज़ाहरा किया है, तो इंकार करने वालों ने हमेशा उनके मुताल्लिक़ एक बात ज़रूर कही है, 'यह खुला हुआ जादू है।' पस क्या एक हक़ को तलाश करने वाला और ग़ैर-मुतास्सिब इंसान के लिए यह जवाब इस ओर रहनुमाई नहीं करता कि नबियों के इस क़िस्म के मुज़ाहरे ज़रूर क़ुदरत के आम क़ानूनों से जुदा ऐसे इल्म के ज़रिए ज़ाहिर होते थे, जो सिर्फ़ उन क़ुद्सी सिफ़ारत हस्तियों के लिए ही ख़ास रहा है और इनके अलावा इंसानी दुनिया उसकी हक़ीक़त के बारे में इंकार पर तुली हुई थी, उसके इंकार के लिए इससे बेहतर दूसरी ताबीर नहीं थी कि वे इन मामलों को 'जादू' कह दें। इसलिए इन मामलों को जादू कहना भी उनके 'मोजज़ा' और 'अल्लाह का निशान' होने की ज़बरदस्त दलील है।

हज़रत ईसा और उनकी तालीम का खुलासा

बहरहाल हज़रत ईसा ﷺ बनी इसराईल को हुज्जत और बुरहान और अल्लाह की आयतों के ज़रिए दीने हक़ की तालीम देते रहते और उनके भूले हुए सबक़ को याद दिला कर मुर्दा दिलों में नई ज़िंदगी बख़्शते रहते थे।

अल्लाह और अल्लाह की तौहीद पर ईमान, नबियों और रसूलों की तस्दीक़, आख़िरत पर ईमान, अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान, क़ज़ा व क़द्र पर ईमान, अल्लाह के रसूलों और किताबों पर ईमान, भले अख़्लाक़ के अपनाने, बुरे अ़मलों से बचने, अल्लाह की इबादत से चाव, दुनिया में लगे रहने से नफ़रत और अल्लाह के कुंबे (अल्लाह की मख़्लूक़) से मुहब्बत, यही वह तालीम और उस पर ज़ोर था जो उनकी ज़िंदगी का मश्ग़ला और मंसबी फ़र्ज़ बना हुआ था, वे बनी इसराईल को तौरात, इंजील और हिक्मत भरी नसीहतों के ज़रिए इन मामलों की तरफ़ दावत देते, मगर बदबख़्त यहूदी अपनी टेढ़ी फ़ितरत, सदियों से आ रही सरकशी और अल्लाह की तालीम से बग़ावत की बदौलत इस दर्जा शिद्दत पसंद बन गए थे और नबियों और रसूलों के क़त्ल ने उनके दिलों को हक़ व सदाक़त के क़ुबूल करने में इस दर्जा सख़्त बना दिया था कि एक छोटी-सी जमाअ़त के अलावा उनकी जमाअ़त की भारी अक्सरीयत ने उनकी मुख़ालफ़त और उनके साथ हसद व बुग़्ज़ को अपना शिआर और

Copyright OfflineDeeniApp

अपनो जमाअ़ती ज़िंदगी का शिआर बना लिया और इसलिए नबियों की बेहतरीन सुन्नत के मुताबिक़ रुश्द व हिदायत के हलक़ों में दुन्यवी जाह व जलाल के लिहाज़ से कमज़ोर व नातवां और निचले पेशेवर तबक़े की अक्सरीयत नज़र आती थी। कमज़ोरों का यह तबक़ा अगर इख़्लास व दयानतदारी के साथ हक़ की आवाज़ को अपनाता तो बनी इसराईल का वह सरकश और मग़रूर हलक़ा उन पर और अल्लाह के पैग़म्बर पर फ़ब्तियां कसता, तौहीन व तज़लील का मुज़ाहरा करता और अपनी अ़मली जद्दो जुहद का बड़ा हिस्सा मुख़ालफ़त में लगाता रहता था।

तर्जुमा—*'और जब ईसा ज़ाहिर दलीलें लेकर आए तो कहा, बेशक तुम्हारे पास 'हिक्मत' लेकर आया हूं और इसलिए आया हूं ताकि उन कुछ बातों को साफ़ कर दूं जिनके बारे में तुम आपस में झगड़ रहे हो, पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, सो उसकी परस्तिश करो यही सीधी राह है।' फिर वे आपस में गिरोहबन्दी करने लगे, सो उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब के ज़रिए हलाकत और ख़राबी है।'* (43 : 63-65)

तर्जुमा—*और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का पैग़म्बर हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की, जो मेरे सामने है और खुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की, जो मेरे बाद आएगा नाम उसका अहमद है। पस जब (ईसा) आया उनके पास मोजज़े लेकर तो वे (बनी इसराईल) कहले लगे, यह तो खुला जादू है।* (61 : 6)

तर्जुमा—*'फिर जब ईसा ने इन (बनी इसराईल) से कुफ़्र महसूस किया तो कहा, 'अल्लाह की तरफ़ मेरा कौन मददगार है?'*

हवारियों ने जवाब दिया, 'हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार। हम अल्लाह पर ईमान ले आए और तुम गवाह रहना कि हम मुसलमान हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! जो तूने उतारा है, हम उस पर ईमान ले आए 'और हमने रसूल की पैरवी अख़्तियार कर ली, पस तू हमको (दीने हक़ की) गवाही देने वालों में से लिख ले।' (3 : 52-53)

Copyright OfflineDeeniApp

30 हवारी ईसा ﷺ

मगर ईसा ﷺ दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों की शरारतों और बेहूदगियों के बावजूद अपने मंसबी फ़र्ज़ 'दावत इलल हक़' (हक़ की तरफ़ दावत देने) में हमेशा सरगर्म रहते और रात व दिन बनी इसराईल की आबादियों और बस्तियों में हक़ का पैग़ाम सुनाते और रोशन दलीलों और अल्लाह की वाज़ेह आयतों के ज़रिए लोगों को हक़ व सदाक़त क़ुबूल करने पर तैयार करते रहते थे। अल्लाह और अल्लाह के हुक्म से सरकश और बाग़ी इंसानों की इस भीड़ में ऐसी सईद रूहें भी निकल आती थीं जो ईसा ﷺ की हक़ की दावत की ओर लपकतीं और सच्चाई के साथ दीने हक़ को अपनाती थीं जो हज़रत ईसा ﷺ की सोहबत में रहकर और फ़ायदा उठा कर, न सिर्फ ईमान ही ले आती थीं, बल्कि दीने हक़ की सरबुलंदी और कामियाबी के लिए उन्होंने जान व माल की बाज़ी लगा कर दीन की ख़िदमत के लिए खुद को वक़्फ़ कर दिया था और अक्सर व बेशतर हज़रत मसीह ﷺ के साथ रह कर तब्लीग़ व दावत का काम सरअंजाम देती थीं। इसी ख़ुसूसियत की वजह से वे 'हवारी' (रफ़ीक़) और अन्सारुल्लाह (अल्लाह के दीन के मददगार) के मुक़द्दस अलक़ाब से मुअ़ज़्ज़ज़ व मुम्ताज़ की गई।

चुनांचे इन बुज़ुर्ग हस्तियों ने अल्लाह के पैग़म्बर की पाक ज़िंदगी को अपना आदर्श बनाया और सख़्त-से-सख़्त और नाज़ुक से नाज़ुक हालात में भी उनका साथ नहीं छोड़ा और हर तरह मददगार साबित हुई।

तर्जुमा—*और (ऐ ईसा! वह वक़्त याद करो) जब कि मैंने हवारियों की ओर (तेरी मारफ़त) यह वह्य की कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ, तो उन्होंने जवाब दिया 'हम ईमान लाए और ऐ ख़ुदा! तू गवाह रहना कि हम बिला शुब्हा मुसलमान हैं।'* (5 : 111)

तर्जुमा—*ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के (दीन के) मददगार हो जाओ जैसा कि ईसा बिन मरयम अ़लैहिस्सलाम ने जब हवारियों से कहा, अल्लाह के रास्ते में कौन मेरा मददगार है तो हवारियों ने जवाब दिया, 'हम हैं अल्लाह (की राह) के मददगार।' पस बनी ईसराइल की एक जमाअ़त ईमान ले आई, एक गिरोह ने कुफ़्र अख़्तियार किया, सो हमने मोमिनों की उनके दुश्मनों के*

Copyright OfflineDeeniApp

मुक़ाबले में [illegible] (मोमिन) ग़ालिब रहे। (61 : 14)

पिछले पन्नों में यह वाज़ेह हो चुका है कि ईसा के ये हवारी ज़्यादातर ग़रीब और मज़दूर तबक़े में से थे, क्योंकि नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) की दावत व तब्लीग़ के साथ 'अल्लाह की सुन्नत' यही जारी रही है कि उनके हक़ की आवाज़ को लपकने और दीने हक़ पर जान निछावर करने का मुज़ाहरा करने के लिए पहले ग़रीब और कमज़ोर तबक़ा ही आगे बढ़ता है और नीचे के लोग ही फ़िदाकारी का सबूत देते हैं और वक़्त के इक़्तिदार में बैठी और ज़बरदस्त हस्तियां अपने ग़ुरूर और घमंड के साथ मुक़ाबले के लिए सामने आती और मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के साथ अल्लाह का कलिमा सरबुलन्द करने के रास्ते में भारी पत्थर बन जाती हैं, लेकिन जब अल्लाह का 'अ़मल के बदले' का क़ानून अपना काम करता है, तो नतीजे में फ़लाह और कामियाबी उन कमज़ोर हक़ के फ़िदाकारों का हिस्सा हो जाता है और घमंड में चूर हस्तियां या: हलाकत के गहरे गढ़े में जा गिरती हैं और या मक़हूर व मग़्लूब होकर झुक जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं रखतीं।

ईसा ﷺ के हवारी और कुरआन व इंजील का मवाज़ना

कुरआन ने ईसा ﷺ के हवारियों की हक़ीक़त बयान की है। सूरः आले इमरान की आयतें तुम्हारे सामने हैं। हज़रत मसीह ﷺ जब दीने हक़ की मदद के लिए पुकारते हैं तो सबसे पहले जिन्होंने 'नह्नु अन्सारुल्लाह' (हम हैं अल्लाह के मददगार) का नारा बुलन्द किया, वे यही पाक हस्तियों थीं। सूरः सफ़्फ़ में अल्लाह रब्बुल-आलमीन ने जब मुसलमानों को मुख़ातब करके 'कूनू अंसारल्लाह' (हो जाओ तुम मदद देने वाले अल्लाह के) की तर्ग़ीब दी, तो 'तज़्कीर बिअय्यामिल्लाह' (अल्लाह के वाक़ियों की तज़्कीर) के पेशे नज़र इन्हीं हस्तियों का ज़िक्र किया और इन्हीं की मिसाल और नज़ीर देकर हक़ की मदद के लिए उभारा और सूरः माइदा में उनके ईमान के क़ुबूल करने और हक़ की दावत के सामने सर झुका देने का जो नक़्शा खींचा है, वह भी उनके ख़ुलूस, हक़तलबी और हक़-कोशी की हमेशा ज़िंदा रहने वाली तस्वीर है।

Copyright OfflineDeeniApp

यह सब कुछ तो उस वक़्त का हाल है, जब तक हज़रत ईसा ﷺ उनके दर्मियान मौजूद हैं, लेकिन आपके 'आसमान पर उठा लिए जाने' के बाद भी उनकी इस्तिक़ामत से भरी (जमाव वाली) और पुराने दीन की फ़िदाकाराना ख़िदमत के बारे में सूरः सफ़्फ़ की आयत *'फ़-अय्यदनल्लज़ी-न आमनू अला अ़दूविहिम फ़ अस्बहू ज़ाहिरीन०'* (61 : 14) में काफ़ी इशारा मौजूद है और शाह अ़ब्दुल क़ादिर नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने इसी बुनियाद पर इस आयत की तफ़्सीर करते हुए तारीख़ी गवाही का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है—

'हज़रत ईसा ﷺ के बाद उनके चारों (हवारियों) ने बड़ी मेहनतें की हैं, तब उनका दीन फैला। हज़रत यसूअ़ के उन तमाम हवारियों में से जिनकी तारीफ़ में जगह-जगह बाइबिल बखान करता है, एक दो या दस पांच नहीं, सबके सब निहायत बुज़दिली और ग़द्दारी के साथ उस वक़्त हज़रत मसीह ﷺ से अलग हो गए, जब दीने हक़ की मदद और हिमायत के लिए सबसे ज़्यादा उनको ज़रूरत थी और जबकि अल्लाह के पैग़म्बर (अ़लैहिस्सलाम) दुश्मनों के नरग़े में फंसे हुए थे।

मगर इंजील की इस गवाही के ख़िलाफ़ सूरः आले इमरान में क़ुरआन मजीद ने यह गवाही दी है कि उस नाज़ुक वक़्त में जब हज़रत ईसा ने अपने हवारियों को दीने हक़ की मदद और यारी के लिए पुकारा, तो सबने पूरे अ़ज़्म, हौसला और फ़िदा हो जाने वाले जज़्बे के साथ यह जवाब दिया, *'नहनु अन्सारुल्लाह'* (3 : 52) फिर हज़रत मसीह के सामने दीन पर अपने जमे रहने और अपने ख़ुलूस भरे ईमान के बारे में गवाही देकर मदद का पूरा-पूरा यक़ीन दिलाया और फिर सूरः सफ़्फ़ में क़ुरआन मजीद ने यह भी ज़ाहिर किया कि इन हवारियों ने हज़रत ईसा से जो कुछ कहा था, उनकी मौजूदगी में और उनके बाद भी, सच्ची वफ़ादारी के साथ उसे निबाहा और इसमें शक नहीं, वे सच्चे मोमिन साबित हुए और इसलिए अल्लाह ने भी उनकी मदद फ़रमाई और उनको हक़ के दुश्मनों के मुक़ाबले में कामियाब किया।

इंजील और क़ुरआन के इस मवाज़ने को देख कर एक इंसाफ़ पसन्द यह कहे बग़ैर नहीं रह सकता कि इस मामले में 'हक़' क़ुरआन के साथ है और ईसाई उलेमा ने इंजील में घट-बढ़ करके इस क़िस्म के गढ़े हुए वाक़ियों का

Copyright OfflineDeeniApp

इज़ाफ़ा इसलिए किया है, ताकि सदियों बाद के ख़ुद के गढ़े हुए अ़क़ीदे 'मसीह के सलीब (फांसी) का अ़क़ीदा' से मुताल्लिक़ दास्तान सही तर्तीब पर क़ायम हो सके कि जब मसीह को सलीब पर लटकाया गया, तो उन्होंने यह कहते-कहते जान दे दी, *'ऐली! ऐली! लिमा सबक़तनी'* (ऐ ख़ुदा! ऐ ख़ुदा! तूने मुझे क्यों अकेला-तंहा छोड़ दिया।' और किसी एक आदमी ने भी मसीह ﷺ का साथ न दिया। बहरहाल हवारियों से मुताल्लिक़ बाइबिल की ये बातें घट-बढ़ वाली गढ़ी हुई दास्तान से ज़्यादा कोई हैसियत नहीं रखतीं।

माइदा का उतरना

क़ुरआन मजीद ने माइदा के उतरने के वाक़िए को मोजज़े भरे बयान के तरीक़े के साथ ज़िक्र किया है–

तर्जुमा–*'और (देखो) जब ऐसा हुआ था कि हवारियों ने कहा था, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि आसमान से हम पर एक ख़्वान उतार दे? (यानी हमारे खाने के लिए आसमान से ग़ैबी सामान कर दे।) ईसा ﷺ ने कहा, ख़ुदा से डरो (और ऐसी फ़रमाइशें न करो) अगर तुम ईमान रखते हो।'*

उन्होंने कहा, (मक़्सद इससे अल्लाह की क़ुदरत का इम्तिहान नहीं है, बल्कि) हम चाहते हैं कि (हमें खाना मिले तो) उसमें से खाएं और हमारे दिल आराम पाएं और हम जान लें कि तूने हमें सच बताया था और इस पर हम गवाह हो जाएं।

इस पर ईसा बिन मरयम ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर आसमान से एक ख़्वान भेज दे कि उसका आना हमारे लिए और हमारे अगलों-पिछलों राव के लिए ईद क़रार पाए और तेरी तरफ़ से (फ़ज़्ल व करम) एक निशानी हो, हमें रोज़ी दे, तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।'

अल्लाह ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे लिए ख़्वान भेजूंगा, लेकिन जो शख़्स इसके बाद भी (हक़ के रास्ते से) इंकार करेगा तो मैं उसे (अ़मल के बदले में) अज़ाब दूंगा, ऐसा अ़ज़ाब कि तमाम दुनिया में किसी आदमी को भी वैसा अज़ाब नहीं दिया जाएगा। (5 : 112-115)

Copyright OfflineDeeniApp

यह माइदा नाज़िल हुआ या नहीं, क़ुरआन ने इसके बारे में कोई तफ़्सील बयान नहीं की और न किसी हदीस में इसका कोई तज़्किरा पाया जाता है, अलबत्ता सहाबा और ताबिईन की रिवायतों में इसका तफ़्सील से ज़िक्र किया गया है—

मुजाहिद और हसन बसरी (रह०) फरमाते हैं कि माइदा नाज़िल नहीं हुआ, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने उसके नाज़िल होने को जिस शर्त से जोड़ दिया, तलब करने वालों ने यह महसूस करते हुए कि इंसान कमज़ोरियों का मज्मूआ़ है, कहीं ऐसा न हो कि किसी लग़्ज़िश या मामूली खिलाफ़वर्ज़ी की बदौलत उस दर्दनाक अ़ज़ाब के हक़दार ठहरें, अपने सवाल को वापस ले लिया। इसके अलावा अगर माइदे का नुज़ूल हुआ होता, तो वह ऐसा अल्लाह का निशान (मोजज़ा) था कि ईसाई उन पर जितना भी फ़ख्र करते, वह कम था और उनके यहां इसकी जितनी भी शोहरत होती, वह बेजा नहीं होती, फिर भी उनके यहां माइदा के इस नुज़ूल का कोई तज़्किरा नहीं पाया जाता।

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० से नक़ल किया गया है कि यह वाक़िया पेश आया और माइदे का नुज़ूल हुआ। ज़्यादा-तर लोगों का रुझान इसी तरफ़ है। अलबत्ता इसके नाज़िल होने की तफ़्सील में अलग-अलग क़ौल पाए जाते है।

इस मसले में शाह अ़ब्दुल क़ादिर (नव्वरल्लाहु मरक़दहू) मुजाहिद और हसन बसरी के हमनवा मालूम होते हैं और माइदा के नाज़िल होने के मुताल्लिक़ इन दोनों जमाअ़तों से अलग एक और लतीफ़ बात इर्शाद फ़रमाते हैं। मूज़िहुल क़ुरआन में है—

(हल यस्ततीऊ 5 : 112) (हो सके), यह मानी कि हमारे वास्ते तुम्हारी दुआ से इतना आदत के ख़िलाफ़ करे या न करे, फ़रमाया कि *'इत्तक़ुल्लाह' (डरो अल्लाह से)* यानी बन्दे को चाहिए कि अल्लाह को न आज़माए कि मेरा कहा मानता है या नहीं, अगरचे ख़ुदावन्द (आक़ा व मालिक) बहुतेरी मेहरबानी करे *'व नकूनु अ़लैहा मिनश्शाहिदीन'* (5 : 113) यानी बरकत उम्मीद पर मांगते हैं और (ताकि) मोजज़ा हमेशा मशहूर रहे, आज़माने को नहीं कहते हैं। वह ख्वान उतरा इकशंबा (इतवार) को, वह नसारा (ईसाई) की ईद है। जैसे हमारे

Copyright OfflineDeeniApp

लिए जुमा का दिन। कुछ कहते हैं, वह ख़्वान उतरा चालीस दिन तक और फिर कुछ ने नाशुक्री की यानी हुक्म हुआ था कि फ़क़ीरों और मरीज़ों को खिला दें, न कि महज़ूज़ (तवंगर) और चंगे को, फिर क़रीब अस्सी आदमी सुअर और बन्दर हो गए। (मगर) यह अज़ाब पहले यहूदियों में हुआ था, पीछे किसी को नहीं हुआ।

और कुछ कहते हैं (माइदा) न उतरा, डरावा सुन कर मांगने वाले डर गए। न मांगा, लेकिन पैग़म्बर की दुआ बेकार नहीं जाती और इस कलाम (क़ुरआन) में नक़ल बे-हिक्मत नहीं, शायद इस दुआ का यह असर है कि हज़रत ईसा की उम्मत (नसारा-ईसाई) में माल के पहलू से आसूदगी हमेशा रही और जो कोई उनमें नाशुक्री करे, तो शायद आख़िरत में सबसे ज्यादा अज़ाब पावे। इसमें मुसलमान को इबरत है कि अपनी मुद्दआ ख़िलाफ़े आदत के रास्ते से न चाहे, फिर उसकी शुक्रगुज़ारी बहुत मुश्किल है। ज़ाहिरी अस्बाब पर क़नाअ़त करे, तो बेहतर है। इस क़िस्से से भी साबित हुआ कि अल्लाह तआ़ला के आगे हिमायत नहीं पेश की जाती।

इस सिलसिले में हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० ने बाज़ नसीहत से मुताल्लिक़ बहुत ख़ूब बात इर्शाद फ़रमाई है—

ईसा से उनकी क़ौम ने माइदा के नाज़िल होने की दरख़्वास्त की तो अल्लाह की जानिब से जवाब मिला, 'तुम्हारी दरख़्वास्त इस शर्त के साथ मंज़ूर की जाती है कि न उसमें ख़ियानत करना, न उसको छुपाए रखना और न उसको ज़ख़ीरा करना, वरना यह बन्द कर दिया जाएगा और तुमको ऐसा सबक़ भरा अ़ज़ाब दूंगा जो किसी को न दिया जाएगा।'

'ऐ अरब के लोगो! तुम अपनी हालत पर ग़ौर करो कि तुम ऊंटों और बकरियों की दुम पकड़ कर जंगलों में चराते फिरते थे, फिर अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत से तुम्हारे दर्मियान ही से एक बर्गज़ीदा रसूल भेजा, जिसके हसब व नसब को तुम अच्छी तरह जानते हो। उसने तुम को यह ख़बर दी कि तुम बहुत जल्द अजम पर ग़ालिब आ जाओगे और उस पर छा जाओगे और उसने तुमको सख़्ती के साथ मना फ़रमाया कि माल व दौलत की फ़रावानी देख कर हरगिज़ तुम चांदी और सोने के ख़ज़ाने न जमा करना, मगर

Copyright OfflineDeeniApp

ख़ुदा की क़सम! कि ज़्यादा दिन व रात न गुज़रेंगे कि तुम ज़रूर सोने-चांदी के ख़ज़ाने जमा करोगे और इस तरह खुदा-ए-बरतर के दर्दनाक अ़ज़ाब के हक़दार बनोगे।'

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, सूरः माइदा

'रफ़अ़ इलस्समाइ' यानी ज़िंदा आसमान पर उठा लिया जाना

हज़रत ईसा ﷺ ने न शादी की और न रहने-सहने के लिए घर बनाया। वह शहर-शहर और गांव-गांव अल्लाह का पैग़ाम सुनाते और दीने हक़ की दावत व तब्लीग़ का फ़र्ज़ अंजाम देते और जहां भी रात आ पहुंचती, वहीं राहत के किसी सर व सामान के बग़ैर रात गुज़ार देते थे। चूंकि उनकी ज़ाते अक़्दस से मख़्लूक़े ख़ुदा जिस्मानी व रूहानी दोनों तरह की शिफ़ा और तस्कीन पाती थी, इसलिए जिस तरफ़ भी उनका गुजर हो जाता, इंसानों की भीड़ अच्छी अ़क़ीदत के साथ जमा हो जाती और वालिहाना मुहब्बत के साथ उन पर निसार हो जाने को तैयार रहती थी।

यहूदियों ने इस बढ़ती हुई मक़्बूलियत को इंतिहाई हसद और सख़्त ख़तरे की निगाह से देखा और जब उनके बिगड़े हुए दिन किसी तरह उसको सह न सके, बल्कि यहूदी बनी इसराईल तो अपनी मज़हबी किताबों कीं पेशीनगोइयों के मुताबिक़ दो शख़्सियतों 'मसीह हिदायत' और 'मसीह ज़लालत' के इंतिज़ार में थे लेकिन बदक़िस्मती कि जब 'मसीह हिदायत' ज़ाहिर हुए तो उन्होंने उसको 'मसीह ज़लालत' समझा और उनके सरदारों फ़क़ीहों, फ़रीसियों (Pharisee) और सदूक़ियों (Sadducee) (यहूदियों के दो फ़िरक़े) ने ज़ाते अक़्दस के ख़िलाफ़ साज़िश शुरू की और तै यह पाया कि इस हस्ती के ख़िलाफ़ कामियाबी हासिल करने के अलावा इसकी कोई शक्ल नज़र नहीं आती कि वक़्त के बादशाह को भड़का कर उसको दीवार पर चढ़ा दिया जाए।

पिछली कुछ सदियों से यहूदियों के बयान न करने के क़ाबिल हालात की वजह से उस ज़माने में यहूदिया के बादशाह हीरोवेस की हुकूमत अपने बाप-दादा के इलाक़ों में से मुश्किल से चौथाई पर क़ायम थी और वह भी नाम के लिए और असल हुकूमत व इक़्तिदार, वक़्त के बुतपरस्त शहंशाह क़ैसरे

Copyright OfflineDeeniApp

रूम को हासिल था और उसकी मातहती में प्लातीस यहूदिया के अक्सर इलाक़े का गवर्नर या बादशाह था।

यहूदी अगरचे इस बुतपरस्त बादशाह के इक़्तिदार को अपनी बदबख़्ती समझकर उससे नफ़रत करते थे, मगर हज़रत मसीह के ख़िलाफ़ दिलों में भड़की हसद की आग ने और सदियों की ग़ुलामी से पैदा हुई पस्त ज़ेहनियत ने ऐसा अंधा कर दिया कि अंजाम और नतीजे की फ़िक्र से बेपरवाह हो कर प्लातीस के दरबार में जा पहुंचे और अ़र्ज़ किया 'आली जाह' यह आदमी न सिर्फ़ हमारे लिए, बल्कि हुकूमत के लिए ख़तरा बनता जा रहा है, अगर फ़ौरन ही इसकी जड़ न काट दी गई तो न हमारा दीन ही सही हालत में बाक़ी रह सकेगा और डर है कि कहीं आपके हाथ से हुकूमत का इक़्तिदार भी न चला जाए, इसलिए कि इस आदमी ने अ़जीब व ग़रीब शोबदे (करतब) दिखा कर दुनिया को अपना चाहने वाला बना लिया है और हर वक़्त इस घात में लगा है कि आप लोगों की इस ताक़त के बल पर क़ैसर और आप को हरा कर ख़ुद बनीइसराईल का बादशाह बन जाए। इस आदमी ने लोगों को सिर्फ़ दुनिया को रास्ते से ही गुमराह नहीं किया, बल्कि इसने हमारे दीन तक को भी बदल डाला और लोगों को बद-दीन बनाने में लगा हुआ है। पस इस फ़ित्ने की रोक-थाम बहुत ज़रूरी है ताकि बढ़ता हुआ यह फ़ित्ना शुरू ही में कुचल डाला जाए।'

ग़रज़ काफ़ी बात-चीत और सोच-विचार के बाद पिलातीस ने उनको इजाज़त दे दी कि वे हज़रत मसीह को गिरफ़्तार कर लें और शाही दरबार में मुज्रिम की हैसियत से पेश करें। बनी इसराईल के सरदार, फ़क़ीह और काहिन यह फ़रमान हासिल करके बेहद ख़ुश हुए और पूरे घमंड में आकर एक दूसरे को मुबारकबाद देने लगे कि आख़िर हमारी साज़िश कामियाब हुई और हमारी तदबीर का तीर ठीक निशाने पर बैठ गया और कहने लगे कि अब ज़रूरत इस बात की है कि ख़ास मौक़े के इंतिज़ार में रहा जाए और किसी अकेलेपन या तंहाई के मौक़े पर इस तरह उसको गिरफ़्तार किया जाए कि जनता में बेचैनी न पैदा न होने पाए।

—इंजिल यूहन्ना, अध्याय 11, आयत 49-51 व इंजील मरक़स अध्याय 26, आयत 2-1

Copyright OfflineDeeniApp

दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा और उनके हवारियों की बात-चीत को सूरः आले इमरान और सूरः सफ़्फ़ के हवाले से नक़ल किया जा चुका है कि हज़रत ईसा ने जब यहूदियों की कुफ़्र और इंकार और दुश्मनी भरी चालों को महसूस किया तो एक जगह अपने हवारियों को जमा किया और उनसे फ़रमाया कि बनी इसराईल के सरदारों और काहिनों की मुख़ालिफाना सरगर्मियां तुमसे छिपी नहीं हैं। अब वक़्त की नज़ाकत और कड़ी आज़माइश व इम्तिहान की घड़ी का क़रीब होना तक़ाज़ा करता है कि मैं तुमसे सवाल करूं कि तुममें कौन वे लोग हैं जो कुफ़्र के इंकार के सैलाब के सामने सीना तान कर खड़े हों और अल्लाह के दीन के मददगार बनें।

हज़रत ईसा का यह इर्शाद मुबारक़ सुनकर सब ने बड़े जोश व ख़रोश और सच्चे ईमान के साथ जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के मददगार, एक अल्लाह के परस्तार, आप गवाह रहें कि हम मुस्लिम वफ़ा शिआर हैं और अल्लाह के दरबार में हम अपनी इस इताअत केशी और फ़रमांबरदारी पर जमे रहने के लिए यों दुआ के लिए हाथ उठाए हैं, ऐ परवरदिगार! हम तेरी उतारी हुई किताब पर ईमान ले आए और सच्चे दिल से तेरे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! तू हमको सच्चाई और हक़ के फ़िदाकरों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

हज़रत ईसा ﷺ और उनके दावत व तबलीग़ के फ़रीज़े के ख़िलाफ़ बनी इसराईल के यहूदियों में मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के मुताल्लिक़ हालात का यह हिस्सा तो ज़्यादातर ऐसा है कि क़ुरआन व इंजील के दर्मियान उसूली तौर पर कोई इख्तिलाफ़ नहीं, लेकिन इसके बाद के बयान के पूरे हिस्से में दोनों की क़तई तौर पर अलग-अलग राहें हैं और उनके बीच इस हद तक टकराव है कि किसी तरह भी एक दूसरे के क़रीब नहीं लाया जा सकता। अलबत्ता इस जगह पहुंच कर दोनों यानी यहूदियों और ईसाइयों का आपसी मेल हो जाता है और दोनों के बयान वाक़िए से मुताल्लिक़ एक ही अ़क़ीदा पेश करते है। फ़र्क़ है तो यह कि यहूदी इस वाक़िए को अपना कारनामा और अपने लिए फ़ख़्र की चीज़ समझते हैं और ईसाई इससे बनी इसराईल के यहूदियों की एक लानत के क़ाबिल जद्दोजेहद यक़ीन करते हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा और उनके हवारियों की बात-चीत को सूरः आले इमरान और सूरः सफ़्फ़ के हवाले से नक़ल किया जा चुका है कि हज़रत ईसा ने जब यहूदियों की कुफ़्र और इंकार और दुश्मनी भरी चालों को महसूस किया तो एक जगह अपने हवारियों को जमा किया और उनसे फ़रमाया कि बनी इसराईल के सरदारों और काहिनों की मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियां तुमसे छिपी नहीं हैं। अब वक़्त की नज़ाकत और कड़ी आज़माइश व इम्तिहान की घड़ी का क़रीब होना तक़ाज़ा करता है कि मैं तुमसे सवाल करूं कि तुममें कौन वे लोग हैं जो कुफ़्र के इंकार के सैलाब के सामने सीना तान कर खड़े हों और अल्लाह के दीन के मददगार बनें।

हज़रत ईसा का यह इर्शाद मुबारक़ सुनकर सब ने बड़े जोश व ख़रोश और सच्चे ईमान के साथ जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के मददगार, एक अल्लाह के परस्तार, आप गवाह रहें कि हम मुस्लिम वफ़ा शिआ़र हैं और अल्लाह के दरबार में हम अपनी इस इताअत केशी और फ़रमांबरदारी पर जमे रहने के लिए यों दुआ़ के लिए हाथ उठाए हैं, ऐ परवरदिगार! हम तेरी उतारी हुई किताब पर ईमान ले आए और सच्चे दिल से तेरे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! तू हमको सच्चाई और हक़ के फ़िदाकरों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

हज़रत ईसा ﷺ और उनके दावत व तबलीग़ के फ़रीज़े के ख़िलाफ़ बनी इसराईल के यहूदियों में मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के मुताल्लिक़ हालात का यह हिस्सा तो ज़्यादातर ऐसा है कि क़ुरआन व इंजील के दर्मियान उसूली तौर पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, लेकिन इसके बाद के बयान के पूरे हिस्से में दोनों की क़तई तौर पर अलग-अलग राहें हैं और उनके बीच इस हद तक टकराव है कि किसी तरह भी एक दूसरे के क़रीब नहीं लाया जा सकता। अलबत्ता इस जगह पहुंच कर दोनों यानी यहूदियों और ईसाइयों का आपसी मेल हो जाता है और दोनों के बयान वाक़िए से मुताल्लिक़ एक ही अ़क़ीदा पेश करते है। फ़र्क़ है तो यह कि यहूदी इस वाक़िए को अपना कारनामा और अपने लिए फ़ख़्र की चीज़ समझते हैं और ईसाई इससे बनी इसराईल के यहूदियों की एक लानत के क़ाबिल जद्दोजेहद यक़ीन करते हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

यहूदी और ईसाई दोनों का मिला-जुला बयान है कि यहूदी सरदारों और काहिनों को यह पता चला कि इस वक़्त यसूअ् लोगों की भीड़ से अलग अपने शागिर्दों के साथ एक बन्द मकान में मौजूद हैं। यह मौक़ा बेहतरीन है, उसको हाथ से जाने न दीजिए। तुरन्त ही ये लोग मौक़े पर पहुंच गए और चारों तरफ़ से यसूअ् का घेराव करके यसूअ् को गिरफ़्तार कर लिया और तौहीन व तज़लील करते हुए प्लातीस के दरबार में ले गए, ताकि वह उनको सूली पर लटकाए और अगरचे प्लातीस ने यसूअ् को बेक़सूर समझकर छोड़ देना चाहा, मगर बनी इसराईल के जोश दिलाने पर मजबूर होकर सिपाहियों के हवाले कर दिया। सिपाहियों ने उनको कांटों का ताज पहनाया, मुंह पर थूक, कोड़े लगाए और हर तरह की तौहीन व तज़लील करने के बाद मुजरिमों की तरह सूली पर लटका दिया और दोनों हाथों में मीख़ें ठोंक दीं। सीने को बरछी की अनी से छेद दिया और इस बेबसी की हालत में उन्होंने यह कहते हुए जान दे दी, *'ऐली, ऐली लिमा सबक़तनी'* (ऐ मेरे ख़ुदा! ऐ मेरे ख़ुदा! तूने मुझ को क्यों छोड़ दिया?)

तफ़्सील में थोड़े बहुत फ़र्क के साथ यही फ़र्ज़ की हुई दास्तान बाक़ी तीनों इंजीलों में भी ज़िक्र की गई है। चारों इंजीलों की इस मुत्तफ़क़ा मगर फ़र्ज़ी दास्तान के पढ़ने के बाद तबियत पर क़ुदरती असर यह पड़ता है कि हज़रत मसीह की मौत इंतिहाई बेकसी और बे-बसी की हालत में दर्दनाक तरीक़े से हुई, अगरचे अल्लाह के पाक और मुक़द्दस बन्दों के लिए यह कोई ताज्जुब की बात न थी, बल्कि अल्लाह के दरबार में पहुंच रखने वालों के लिए इस क़िस्म की कड़ी आज़माइशों का मुज़ाहरा अक्सर होता रहा है, लेकिन इस वाक़िए का यह पहलू उसके फ़र्ज़ किए हुए और गढ़े हुए होने पर खुले दिन की तरह गवाह है कि हज़रत यसूअ् ने एक अ़ज़्म वाले पैग़म्बर बल्कि भले मर्द की तरह इस वाक़िए को सब्र और अल्लाह की रिज़ा के साथ अंगेज़ नहीं किया, बल्कि एक इंतिहाई मायूस इंसान की तरह शिक्वा करते-करते जान दे दी। 'ऐली ऐली लिमा सबक़तनी' कहते हुए जान दे देना मायूसी और शिकवा की वह सूरतेहाल है जो किसी भी तरह हजरत मसीह ﷺ के शायाने शान नहीं कही जा सकती।

Copyright OfflineDeeniApp

फिर इस वाक़िए का यह पहलू भी कम हैरत में डालने वाला नहीं है कि इंजील के क़ौल के मुताबिक़ यसूअ् मसीह ने इस हादसे से पहले तीन बार अल्लाह तआ़ला से दरख़्वास्त की, ऐ मेरे बाप! अगर हो सके तो यह (मौत का) प्याला मुझ से टल जाए।' और जब यह दरख़्वास्त किसी तरह क़ुबूल न हुई तो मायूस होकर यह कहना पड़ा, 'अगर यह मेरे पिए बग़ैर नहीं टल सकती तो तेरी मर्ज़ी पूरी हो।'

हैरत में डालने वाली तो यह बात है कि जब अ़क़ीदा 'कफ़्फ़ारा' के मुताबिक़ हज़रत मसीह का यह मामला अल्लाह और उसके बेटे (अल अयाज़ु बिल्लाह) के दर्मियान तै शुदा था तो फिर इस दरख़्वास्त का क्या मतलब और अगर बशरी तक़ाज़े के तौर पर था तो अल्लाह की मर्ज़ी मालूम हो जाने और इस पर क़नाअ़त कर लेने के बाद फिर यह बेसब्र और मायूस इंसानों की तरह जान देने की क्या वजह?

यहूदियों की गढ़ी हुई इस दास्तान को चूंकि ईसाइयों ने क़ुबूल कर लिया, तो यहूदी फ़ख्र व ग़ुरूर करते हुए इस पर बहुत ख़ुश हैं और कहते हैं कि मसीह नासरी अगर 'मसीह मौऊद' होता हो अल्लाह तआ़ला इस बेबसी और बेकसी के साथ उसको हमारे हाथ में न देता कि वह मरते वक़्त तक अल्लाह से शिकवा करता रहा कि उसको बचाए, मगर अल्लाह ने उसकी कोई मदद न की, हलांकि हमारे बाप-दादा उस वक़्त भी काफ़ी भड़काते रहे कि अगर तू हक़ीक़त में अल्लाह का बेटा और मसीह मौऊद है तो क्यों तुझ को अल्लाह ने हमारे हाथों इस ज़िल्लत से न बचा लिया।

वाकिया यह है कि ईसाइयों के पास, जबकि इस चुभते हुए इलज़ाम का कोई जवाब न था और वाक़िए की इन तफ़्सीली बातों को मान लेने के बाद 'कफ़्फ़ारा अक़ीदे' की कोई क़ीमत बाक़ी नहीं रह जाती थी, तब उन्होंने वाक़िए की इन तफ़्सीलों के बाद एक पारा बयान का और इज़ाफ़ा किया।

यूहन्ना की इंजील में है—

'लेकिन जब उन्होंने यसूअ् के पास आकर कर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें न तोड़ दीं, मगर उनमें से एक सिपाही ने भाले से उसकी पसली छेदी और फ़ौरी तौर पर उससे ख़ून और पानी बह निकला....

Copyright OfflineDeeniApp

इन बातों के बाद अरमलीता के रहने वाले यूसुफ़ ने जो यसूअ़ का शार्गिद था, यहूदियों के डर से ख़ुफ़िया तौर पर प्लातीस से इजाज़त चाही कि यसूअ् की लाश ले जाए। प्लातीस ने इजाज़त दे दी पस वह आकर उसकी लाश ले गया और नेकदेमस भी आया, जो पहले यसूअ़ के पास रात को गया था और पचास सेर के क़रीब मरावर रऊद मिला हुआ लाया। पस उन्होंने यसूअ् की लाश को लेकर उसे सूती कपड़े में ख़ुश्बूदार चीज़ों के साथ कफ़नाया जिस तरह कि यहूदियों में कफ़न-दफ़न करने का दस्तूर है और जिस जगह उसे सलीब दी गई, वहां एक बाग़ था और उस बाग़ में एक नई क़ब्र थी, जिसमें अभी कोई रखा न गया था, पस उन्होंने यहूदियों की तैयारी के दिन की वजह से यसूअ् को वहीं रख दिया।

हफ़्ते के पहले दिन मरयम मगदलेनी ऐसे तड़के, कि अभी अंधेरा ही था, क़ब्र पर आई और पत्थर को क़ब्र से हटा हुआ देखा, पस वह शमऊन पितरस और उसके दूसरे शार्गिद के पास जिसे यसूअ् अज़ीज़ रखता था, दौड़ी हुई गई और उनसे कहा कि ख़ुदावन्द को क़ब्र से निकाल ले गए और हमें मालूम नहीं कि उसे कहां रख दिया ....लेकिन मरयम बाहर क़ब्र के पास खड़ी रोती रही और जब रोते-रोते क़ब्र की तरफ़ झुक के अन्दर नज़र की तो दो फ़रिश्तों को सफ़ेद पोशाक पहने हुए एक को सरहाने और दूसरे को पांयती बैठे देखा, यहां यसूअ् की लाश पड़ी थी। उन्होंने उससे कहा, ऐ औरत! तू क्यों रोती है?

उसने उनसे कहा, इसलिए कि मेरे ख़ुदावन्द को उठा ले गए और मालूम नहीं कि उसे कहां रखा। यह कहकर वह पीछे फिरी और यसूअ़ को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यसूअ् है। यसूअ़ ने उससे कहा, मरयम! वह फिर कर उससे इबरानी ज़ुबान में बोली 'रबूनी' यानी ऐ उस्ताद! यसूअ़ ने उसे कहा, मुझे न छू, क्योंकि मैं अब तक बाप के पास ऊपर नहीं गया, लेकिन मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कहो कि मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के और अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास ऊपर जाता हूं। मरयम मगदलेनी ने आकर शागिर्दों को ख़बर दी कि मैंने ख़ुदावन्द को देखा और उसने मुझसे ये बातें कहीं।

फिर उसी दिन, जो हफ़्ते का पहला दिन था, शाम के वक़्त जब वहां

Copyright OfflineDeeniApp

के दरवाज़े, जहां शागिर्द थे, यहूदियों के डर से बन्द थे, यसूअ़ आ कर बीच में ख़ड़ा हुआ और उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो और यह कर उसने अपने हाथ और पसली उन्हें दिखाई, पस शार्गिद ख़ुदावन्द को देखकर ख़ुश हुए।

यसूअ् ने फिर उनसे कहा कि तुम्हारी सलामती हो, जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है, उसी तरह मैं भी तुझे भेजता हूं और यह कह उनको फूंका और उनसे कहा, 'रुहुल क़ुद्स', 'लो....' (इंजील यूहन्ना, बाब 18 आयतें 33, 34, 38 से 44 तक और बाब 2, आयत 1 से 22 तक)

हर एक आदमी मामूली ग़ौर व फ़िक्र के बाद आसानी से समझ सकता है कि बयान का यह पारा बयान के पहले हिस्से के साथ बे-रबत और क़तई तौर पर बेजोड़ है, बल्कि यह अन्दाज़ा लगाना ही मुश्किल हो जाता है कि ये दोनों तफ़्सीलें एक ही शख़्स से मुताल्लिक़ हैं, क्योंकि बयान का पहला पारा एक ऐसी शख़्सियत का नक़्शा है जो बेबस व बेकस, मायूस और अल्लाह से शिकायत करने वाली नज़र आती है और बयान का दूसरा हिस्सा ऐसी हस्ती का रोशन चेहरा पेश करती है जो ख़ुदाई सिफ़तों से मुत्तसिफ़ ज़ाते बारी की मुक़र्रब और पेश आने वाले वाक़ियों से मुतमइन और मसरूर है, बल्कि उनके वाक़े होने की तमन्ना करने वाली और उनको अपने फ़र्ज़ की अदाएगी का अहम हिस्सा समझती है

वर्वां तफ़ावुते रह अज़ कुजास्त ता वकुजा

बहरहाल हक़ीक़त चूंकि दूसरी थी और बड़े अर्से के बाद 'कफ़्फ़ारे' के अक़ीदे' की विदअ़त ने ईसाइयों को उसके ख़िलाफ़ इस गढ़े हुए अफ़साने के लिखने पर मजबूर कर दिया, इसलिए क़ुरआन ने हज़रत मरयम और हज़रत ईसा के मुताल्लिक़ दूसरे गोशों की तरह इस गोशे से भी जिहालत व तारीकी का परदा हटाकर हक़ीक़त हाल के रोशन चेहरे को जलवा-आरा करना ज़रूरी समझा और उसने अपना वह फ़र्ज अंजाम दिया, जिसको दुनिया के मज़हबों की तारीख़ में क़ुरआन की दावते तज्दीद व इस्लाह कहा जाता है।

उसने बताया कि जिस ज़माने में बनी इसराईल, पैग़म्बरे हक़ और रसूले खुदा (ईसा विन मरयम) के ख़िलाफ़ ख़ुफ़िया तदबीरों और साज़िशों में मसरूफ़

Copyright OfflineDeeniApp

और उन पर नाज़ां थे, उसी ज़माने में खुदा-ए-बरतर के क़ानूने क़ज़ा व क़द्र ने यह फ़ैसला लागू कर दिया कि कोई ताक़त और मुखालिफ़ क़ूवत ईसा बिन मरयम पर क़ाबू नहीं पा सकती और हमारी मुहकम तदबीर उसके दुश्मनों के हर 'मक्र' (चाल) से बचाए रखेगी और नतीजा यह निकला कि जब बनी इसराईल ने उनपर नरग़ा किया तो उनको ख़ुदा के पैग़म्बर पर किसी तरह दस्तरस हासिल न हो सकी और उनको तमाम हिफ़ाज़त के साथ उठा लिया गया और जब बनी इसराईल मकान में घुसे तो सूरतेहाल उन पर मुश्तबह हो गई और वे ज़िल्लत व रुसवाई के साथ अपने मक़्सद में नाकाम रहे और इस तरह ख़ुदा ने अपना वायदा पूरा कर दिया जो ईसा बिन मरयम की हिफ़ाज़त के लिए किया गया था।

इसकी तफ़्सील यह है कि जब ईसा ने यह महसूस फ़रमाया कि अब बनी इसराईल के कुफ़्र व इंकार की सरगर्मियां इस दर्जा बढ़ गईं कि वे मेरी तौहीन, तज़लील, बल्कि क़त्ल के लिए साज़िशें कर रहे हैं, तो उन्होंने ख़ासतौर से एक मकान में अपने हवारियों को जमा किया और उनके सामने सूरतेहाल का नक़्शा पेश फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, इम्तिहान की घड़ी सर पर है, कड़ी आज़माइश का वक़्त है, हक़ को मिटाने की साज़िशें पूरे ज़ोरों पर हैं, अब मैं तुम्हारें दर्मियान ज़्यादा नहीं रहूंगा, इसलिए मेरे बाद दीने हक़ पर जमाव उसके फैलाव और बढ़ोत्तरी और यारी मदद का मामला सिर्फ़ तुम्हारे साथ जुड़ने वाला है, इसलिए मुझे बताओ कि ख़ुदा के रास्ते में सच्चा मददगार कौन-कौन है?

हवारियों ने यह हक़ कलाम सुन कर कहा, हम सभी ख़ुदा के दीन के मददगार हैं, हम सच्चे दिल से ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और अपनी ईमानी सच्चाई का आप ही को गवाह बनाते हैं और यह कहने के बाद इंसानी कमज़ोरियों के पेशे नज़र अपने दावे पर ही बात ख़त्म नहीं कर दी, बल्कि अल्लाह तआ़ला के दरबार में हाथ उठा कर दुआ़ करने लगे कि जो कुछ हम कह रहे हैं, तू उस पर हमको जमा और हमको अपने दीन के मददगारों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

इस तरफ़ से मुतमइन होकर अब हज़रत ईसा ﷺ दावत व इर्शाद के अपने फ़रीज़े (कर्त्तव्य) के साथ-साथ इस इंतिज़ार में रहे कि देखिए दुश्मनों की

Copyright OfflineDeeniApp

सरगर्मियां क्या रुख़ अख़्तियार करती हैं और अल्लाह का फ़ैसला क्या होता है? अल्लाह ने इस सिलसिले में क़ुरआन के ज़रिए यहूदियों और ईसाइयों के ग़लत ज़न्न व गुमान के ख़िलाफ़ 'इल्म व यक़ीन की रोशनी' बख़्शते हुए यह भी बताया कि जिस वक़्त दुश्मन अपनी ख़ुफ़िया चालों में लगे हुए थे, उसी वक़्त हमने भी अपनी कामिल क़ुदरत की ख़ुफ़िया चाल के ज़रिए यह फ़ैसला कर लिया कि ईसा बिन मरयम के बारे में हक़ के दुश्मनों की चाल का कोई पेच भी कामियाब नहीं होने दिया जाएगा और बेशक अल्लाह तआ़ला की कामिल क़ुदरत की छिपी तदबीरों के मुक़ाबले में किसी को पेश नहीं किया जा सकेगा, इसलिए कि उसकी तदबीर से बेहतर कोई तदबीर हो ही नहीं सकती।

तर्जुमा—*'और उन्होंने (यहूदियों ने ईसा के ख़िलाफ़) ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने (यहूदियों की धोखेबाज़ियों के ख़िलाफ़) ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह सबसे बेहतर ख़ुफ़िया तदबीर का मालिक है।'* (3 : 54)

अरबी डिक्शनरी में 'मक्र' के मानी ख़ुफ़िया तदबीर (चाल) और धोखा करने के हैं, और क़ायदा 'मुशाकला' के मुताबिक जब कोई आदमी किसी के जवाब या दिफ़ाअ़ (Defence) में ख़ुफ़िया तदबीर करता है तो वह अख़्लाक़ और मज़हब की निगाह में कितनी ही अच्छी तदबीर क्यों न हो, उसको भी 'मक्र' ही कहा जाएगा जैसा कि हर भाषा के मुहावरे में बोला जाता है 'बुराई का बदला बुराई है' हालांकि हर आदमी यह यक़ीन रखता है कि बुराई करने वाले के जवाब मे उतने ही मुक़ाबले का जवाब देना अख़्लाक़ और मज़हब दोनों की निगाह में 'बुराई' नहीं है, फिर भी दोनों को हमशक्ल दिखा दिया जाता है। इसी को 'मुशाकला' कहते हैं और यह अच्छे कलाम का एक हिस्सा समझा जाता है।

ग़रज ख़ुफ़िया तदबीर दोनों तरफ़ से थी, एक तरफ़ बुरी, दूसरी तरफ़ बेहतर तदबीर, साथ ही एक तरफ़ अल्लाह की कामिल तदबीर थी, जिसमें कमी और कमज़ोरी का इम्कान नहीं और दूसरी तरफ़ धोखे और फ़रेब की ख़ामियां थीं जो मकड़ी के जाल की तरह बिखर कर रह गईं।

आख़िर वह वक़्त आ पहुंचा कि बनी इसराईल के सरदारों, काहिनों और

Copyright OfflineDeeniApp

फ़क़ीहों ने हज़रत ईसा [illegible] एक बन्द मकान में घेराव कर लिया। आप और हवारी एक मकान में बन्द हैं और दुश्मन चारों तरफ़ से घेराव किए हुए हैं, इसलिए कुदरती तौर पर अब यह सवाल पैदा हुआ कि वह क्या शक्ल हो जिससे दुश्मन नाकाम रहे और हज़रत ईसा को किसी तरह की तक्लीफ़ भी न पहुंचे, ताकि अल्लाह कि हिफ़ाज़त का वायदा और उसकी भली तदबीर पूरी हो, तो उसके बारे में क़ुरआन ने बताया कि बेशक ख़ुदा का वायदा पूरा हुआ और उसकी मज़बूत तदबीर ने ईसा को दुश्मनों के हाथों से हर तरह महफ़ूज रखा और सूरत यह पेश आई कि उस नाज़ुक घड़ी में हज़रत ईसा को अल्लाह की वह्य ने यह ख़ुशख़बरी सुनाई, 'ईसा ख़ौफ न कर, तेरी मुद्दत पूरी की जाएगी (यानी तुमको दुश्मन क़त्ल नहीं कर सकेंगे और न तुम इस वक़्त मौत से दो चार होगे) और होगा यह कि मैं तुझको अपनी तरफ़ (मला-ए-अ़ला की तरफ़) उठा लूंगा और उन काफ़िरों से हर तरह तुझको पाक रखूंगा, (यानी ये तुझ पर किसी क़िस्म का क़ाबू न पा सकेंगे) और तेरे मानने वालों को इन काफ़िरों पर हमेशा ग़ालिब रखूंगा,(यानी बनी इसराईल के मुक़ाबले में क़ियामत तक ईसाई और मुसलमान ग़ालिब रहेंगे और उनको कभी इन दोनों पर हाकिमाना इक़्तिदार नसीब नहीं होगा, फिर अंजामे कार मेरी तरफ़ (मौत के बाद) लौट आना है। पस मैं इन बातों पर हक़ का फैसला दूंगा, जिनके बारे में तुम आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे हो।

तर्जुमा—*'(वह वक़्त ज़िक्र के लायक़ है) जब अल्लाह तआ़ला ने ईसा से कहा, ऐ ईसा! बेशक मैं तेरी मुद्दत को पूरा करूंगा और तुझको अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूं और तुझको काफ़िरों (बनी इसराईल) से पाक रखने वाला हूं और जो तेरी पैरवी करेंगे उनको तेरे इंकार करने वालों पर क़ियामत तक के लिए ग़ालिब रखने वाला हूं, फिर मेरी तरफ़ ही लौटना है, फिर मैं उन बातों का फ़ैसला करूंगा जिनके बारे में (आज) तुम झगड़ रहे हो।'* (3 : 55)

तर्जुमा—*(क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत ईसा को अपने एहसानों को गिनाते हुए फ़रमाएगा) और वह वक़्त याद करो जब मैंने बनी इसराईल को तुझ से रोक दिया (यानी वे किसी तरह तुझ पर क़ाबू न पा सके) जबकि तू उनके पास मोजज़े लेकर आया और उनमें से काफ़िरों ने कह दिया*

Copyright OfflineDeeniApp

'यह तो जादू के सिवा और कुछ नहीं है।' (5 : 110)

तो अब जबकि हज़रत ईसा को यह इत्मीनान दिला दिया गया कि इस ज़बरदस्त घेराव के बावजूद दुश्मन तुमको क़त्ल न कर सकेंगे और तुमको ग़ैबी हाथ मला-ए-आ़ला की ओर उठा लेगा और इस तरह दीन के दुश्मनों के नापाक हाथों से आप हर तरह महफ़ूज़ कर दिए जाएंगे, तो इस जगह पहुंच कर एक दूसरा सवाल पैदा हुआ कि यह किस तरह हुआ और वाक़िए ने क्या शक्ल अख़्तियार कर ली? क्योंकि यहूदी और ईसाई कहते हैं कि मसीह को सूली पर लटकाया और मार भी डाला। तब क़ुरआन ने बताया कि मसीह बिन मरयम के क़त्ल और फांसी की पूरी दास्तान बिल्कुल ग़लत और झूठ है, बल्कि असल मामला यह है कि जब मसीह को ज़िंदा ही मला-ए-आ़ला की ओर उठा लिया गया और उसके बाद दुश्मन मकान के अन्दर घुस पड़े, तो उन पर सूरते हाल मुश्तबह कर दी गई और वे किसी तरह न जान सके कि आख़िर इस मकान में से मसीह कहाँ चला गया'?

तर्जुमा—*'और (यहूदी मलऊन क़रार दिए गए) अपने इस क़ौल पर कि हमने मसीह ईसा बिन मरयम पैग़म्बरे ख़ुदा को क़त्ल कर दिया। हालांकि उन्होंने न उसको क़त्ल किया और न सूली पर चढ़ाया, बल्कि (ख़ुदा की ख़ुफ़िया तदबीर के बदौलत) असल मामला उन पर शक के घेरे में आ गया और जो लोग उसके क़त्ल के बारे में झगड़ रहे हैं, बेशक वे उस (ईसा) की ओर से शक में पड़े हुए हैं। उनके पास हक़ीक़ते हाल के बारे में ज़न्न (अटकल) की पैरवी के सिवा इल्म की रोशनी नहीं है। उन्होंने ईसा को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी जानिब (मला-ए-आ़ला की जानिब) उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।* (4 : 157-158)

क़ुरआन का वह बयान है जो यहूदियों और ईसाइयों के गढ़े हुए फ़साने (कहानी) के ख़िलाफ़ उसने हज़रत ईसा बिन मरयम के मुताल्लिक़ दिया है। अब दोनों बयान आपके सामने हैं और अ़द्ल व इंसाफ़ का तराज़ू आपके हाथ में। पहले हज़रत मसीह की शख़्सियत और उनकी दावत व इर्शाद के मिशन को तारीख़ी हक़ीक़तों की रोशनी में मालूम कीजिए और उसके बाद एक बार फिर उन तफ़्सीली वाक़ियों पर नज़र डालिए जो एक अ़ज़्म वाले पैग़म्बर,

Copyright OfflineDeeniApp

अल्लाह के दरबार का क़रीबी और ईसाइयों के बातिल अ़क़ीदे के मुताबिक़ ख़ुदा के बेटे को ख़ुदा के फ़ैसले के सामने मायूस, बेचैन, बेयार व मददगार और ख़ुदा की शिकायत करने वाले ज़ाहिर करते हैं और साथ ही बयान के इस टकराव पर भी ग़ौर फ़रमाइए कि एक ओर कफ़्फ़ारा अ़क़ीदे की बुनियाद सिर्फ़ इस पर क़ायम है कि हज़रत मसीह ख़ुदा का बेटा बनकर आया ही इस ग़रज़ से कि सूली पर चढ़ कर दुनिया के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गए और दूसरी तरफ़ फांसी और मसीह को क़त्ल की दास्तान इस बुनियाद पर खड़ी की गई है कि जब वायदा किया गया वह वक़्त आ पहुंचा है तो ख़ुदा का यह फ़र्ज़ी बेटा अपनी हक़ीक़त और दुनिया में वजूद पाने को यकायक भुला करके *'ऐली-ऐली लिमा सबक़तनी'* का हसरत भरा जुम्ला ज़ुबान से कहता है और अल्लाह की मर्ज़ी पर अपनी नाख़ुशी ज़ाहिर करता हुआ नज़र आता है। क्या किसी आदमी को यह सवाल करने का हक़ नहीं है कि अगर ईसाइयों के वयान किए गए वाक़ियों के दोनों हिस्से सही और दुरुस्त हैं तो इन दोनों में आपस में यह टकराव कैसा और एक दूसरे के मुताबिक़ न होने के क्या मानी?

पस अगर एक हक़ीक़त देखनेवाली और दूर तक पहुंच रखने वाली निगाह इन तमाम पहलुओं को सामने रखकर और वाक़िए और हालात की इन तमाम कड़ियों को आपस में जोड़ कर इस मसले को समझे तो वह हक़ की तस्दीक़ को सामने रखकर बे-झिझक यह फ़ैसला करेगा कि बाइबिल की यह दास्तान टकराव वाली और गढ़ी हुई दास्तान है और क़ुरआन ने इस सिलसिले में जो फ़ैसला दिया है वही सही और सच्चा फ़ैसला है।

तारीख़ गवाह है कि हज़रत मसीह के बाद से सेंट-पाल के पहले तक ईसाई 'यहूदियों' की इस बकवास भरी दास्तान से बिल्कुल बे-ताल्लुक़ थे, लेकिन जब सेंट-पाल (पौलो स रसूल) ने तसलीस (तीन ख़ुदा को मानना) और कफ़्फ़ारे पर नए ईसाई धर्म की बुनियाद रखी तो कफ़्फ़ारे के अ़क़ीदे को मज़बूत बनाने के लिए यहूदियों की इस बकवास भरी दास्तान को भी मज़हब का हिस्सा बना दिया।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत ईसा ﷺ से मुताल्लिक़ कुछ तफ़्सीरी और दूसरे अहम मस्अले क़ुरआन के वाज़ेह बयान व मा क़-त-लूहु व मास-ल-बूहु के बाद 'वलाकिन शुब्बि-ह लहुम' की तफ़्सीर

अब एक बात बाक़ी रह जाती है कि सूरः निसा की आयत 4 : 157 में *'व मा क़-त लूहु व मा स-ल-बूहु'*, के बाद *'वलाकिन शुब्बिहा लहुम'* की तफ़्सीर क्या है? यानी वह क्या चीज़ थी जो यहूदियों पर छा गई, तो क़ुरआन इसका जवाब इस जगह पर भी और आले इमरान में भी एक ही देता है और वह 'र फ़-अ़ इलस्सामाइ' है। आले इमरान में इसको वायदे की शक्ल में ज़ाहिर किया 'व राफ़िउ-क इलैय' (3-55) और निसा में वायदा पूरा करने की सूरत में यानी 'बल र-फ़-अ-ल्लाहु इलैहि' (4 : 158) जिसका ख़ुलासा यह निकलता है कि घेराव के वक़्त जब हक़ का इन्कार करने वाले गिरफ़्तारी के लिए अन्दर घुसे तो वहां ईसा को न पाया। यह देखा तो सख़्त हैरान हुए और किसी तरह अन्दाज़ा न लगा सके कि सूरतेहाल क्या पेश आई और इस तरह 'वला किन शुब्बि-ह लहुम' जैसे बनकर रह गए। इसके बाद क़ुरआन कहता है—

'इन्नल्लज़ी-नख़्तलफ़ू फ़ीहि लफ़ी शक्किम मिन्हु मालहुम बिही मिन इलिमन इल्लत्तिबाइज़्ज़न्नि व मा क़-त-लूहु यक़ीना (4 : 157) इसमें एक जैसी हालत जो पेश आई उसका नक़्शा बयान किया गया है और इससे दो बातें खुलकर सामने आती हैं—

एक यह कि यहूदी इस सिलसिले में इस तरह शक में पड़ गए थे कि गुमान और अटकल के सिवा उनके पास इल्म व यक़ीन की कोई शक्ल बाक़ी नहीं रह गई थी और—दूसरी बात यह कि उन्होंने किसी को क़त्ल करके यह मशहूर किया कि उन्होंने 'मसीह' को क़त्ल कर दिया या फिर आयत मुहम्मद सल्ल० के ज़माने के यहूदियों का हाल बयान कर रही है।

पस क़ुरआन के इन वाज़ेह एलानों के बाद जो हज़रत मसीह की हिफ़ाज़त के सिलसिले में किए गए हैं और जिनको तफ़्सील के साथ ऊपर की

Copyright OfflineDeeniApp

सतरा म बयान कर ादया गया है, इन दोनों छोटी-छोटी चीज़ों की तफ़्सील का तअ़ल्लुक़ सहाबा के आसार और तारीख़ी रिवायतों पर रह जाता है और इस सिलसिले में सिर्फ़ उन्हीं रिवायतों और आसार को माना जाएगा जो अपनी सेहत और रिवायत के साथ-साथ इन बुनियादी तफ़्सीलों से न टकराती हों, जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद ने अलग-अलग जगहों पर खुल कर किया है और 'क़ुरआन का बाज़ बाज़ की तफ़्सीर कर देता है' के उसूल पर, जिनसे यह साबित होता है कि हज़रत ईसा को दुश्मन हाथ तक न लगा सके और वह महफ़ूज़ मला-ए-आ़ला की तरफ़ उठा लिए गए और जैसा कि हयाते ईसा की बहस में अभी क़ुरआनी नस्स (आयतों) से साबित होगा कि वह क़ियामत वाक़े होने के लिए 'निशान' हैं और इसलिए दो बार इस दुनिया में वापस आकर और ज़िम्मेदारी की ख़िदमत अंजाम देकर फिर मौत से दो चार होंगे।

क़त्ल किए गए और फांसी पर चढ़ाए गए शख़्स से मुताल्लिक़ आसार व तारीख़ की जो मिली-जुली रिवायतें हैं, उनका हासिल यह है कि सनीचर की रात में हज़रत ईसा ﷺ बैतुल मक़्दिस के एक बन्द मकान में अपने हवारियों के साथ मौजूद थे कि बनी इसराईल की साज़िश से दमिश्क़ के बुतपरस्त बादशाह ने हज़रत ईसा ﷺ की गिरफ़्तारी के लिए एक दस्ता भेजा। उसने आकर घेराव कर लिया। इसी बीच अल्लाह तआ़ला ने ईसा को मला-ए-आ़ला की जानिब उठा लिया। जब सिपाही अन्दर दाख़िल हुए तो उन्होंने हवारियों में एक ही शख़्स को हज़रत ईसा ﷺ की जैसी शक्ल का पाया और उसको गिरफ़्तार करके ले गए और फिर उसके साथ वह सब कुछ हुआ, जिसका ज़िक्र पिछले पन्नों में हो चुका है।

इन्हीं रिवायतों में कुछ उसका नाम यूदस बिन करियायूता बयान करते हैं और कुछ जरजस और दूसरे दाऊद बिन लोज़ा कहते हैं। ये और दूसरी तफ़्सील न क़ुरआन में ज़िक्र की गई है और न मर्फ़ूअ़ हदीसों में, इसलिए ज़ौक़ वालों को अख़्तियार है कि वे सिर्फ़ क़ुरआन ही की इन थोड़ी-सी बातों पर भरोसा करें कि हज़रत का आसमान पर उठाया जाना और हर तरह दुश्मनों से हिफ़ाज़त, के साथ ही साथ यहूदियों पर मामला मुश्तबह होकर किसी दूसरे को क़त्ल करना, यहूदियों और ईसाइयों के पास इस सिलसिले में इल्म व

Copyright OfflineDeeniApp

यक़ीन से महरूम होकर गुमान और शक व शुबहा में मुब्तला हो जाना और क़ुरआन का हक़ीक़ते वाक़िया को इल्म व यक़ीन की रोशनी में ज़ाहिर कर देना, ये सभी साबित की हुई हक़ीक़तें हैं। *'वलाकिन शुब्बि-हलहुम'* और *'इन्नल्लज़ी-नख़्तलफ़ू- फ़ीहि लफ़ी शक्किम मिन्हु* (आयत) की तफ़्सीर में इन रिवायतों की तफ़्सील को मान लें और यह समझ कर मानें कि इन आयतों की तफ़्सीर उन तफ़्सीलों पर टिकी हुई नहीं है बल्कि यह बात ज़्यादा है जो आयतों की सही तफ़्सीर की ताईद में है—

हज़रत ईसा अ़लैहिसल्लाम की ज़िंदगी

सूरः आले इमरान, माइदा और निसा की इन आयतों से यह साबित हो चुका है कि हज़रत ईसा से मुताल्लिक़ अल्लाह की हिक्मत का यह फ़ैसला हुआ कि उनको जिन्दा हालत में ही मला-ए आला की ओर उठा लिया जाए और वह दुश्मनों और काफ़िरों से महफ़ूज़ उठा लिए गए, लेकिन क़ुरआन ने इस मसले में सिर्फ़ इसी को काफ़ी नहीं समझा, बल्कि मौक़े-मौक़े से उनकी ज़िंदगी पर आयतों के ज़रिए कई जगह रोशनी डाली है और उन जगहों में इस ओर भी इशारे किए हैं कि हज़रत मसीह की लम्बी ज़िंदगी और आसमान की तरफ़ उठाए जाने में क्या हिक्मत काम कर रही थी, ताकि हक़ वालों के दिल ईमान की ताज़गी से खिल जाएं और बातिल वाले अपनी दिल की तंगी पर शरमाए।

ल यूमिनन-न बिही क़ब-ल मौतिही

तर्जुमा—*'और कोई अह्ले किताब में से बाक़ी न रहेगा, मगर यह कि वह ज़रूर ईमान लाएगा ईसा पर और उस (ईसा) की मौत से पहले और वह (ईसा) क़ियामत के दिन उन पर (अह्ले किताब पर) गवाह बनेगा।'* (4 : 159)

इस आयत से पहले की आयतों में वही ज़िक्र किया गया वाक़िया आया है—जो ऊपर आया है कि ईसा को न सूली पर चढ़ाया गया और न क़त्ल किया गया बल्कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी ओर उठा लिया, यह यहूदियों और ईसाइयों के उस अ़क़ीदे के रद्द में है जो उन्होंने झूठे तरीक़े से और अटकल

Copyright OfflineDeeniApp

से क़ायम कर लिया था, उनसे कहा जा रहा है कि हज़रत मसीह के मुताल्लिक़ फांसी पर चढ़ाए जाने और क़त्ल किए जाने का दावा लानत के क़ाबिल है, क्योंकि बुहतान और लानत जुड़वां हैं। इसके बाद इस आयत में पहली बात की तस्दीक़ में इस जानिब तवज्जोह दिलाई जा रही है कि आज अगर इस मलऊन अ़क़ीदे पर फ़ख्र कर रहे हो, तो वह वक़्त भी आने वाला है जब ईसा बिन मरयम अल्लाह तआ़ला की हिक्मत व मस्लहत को पूरा करने के लिए ज़मीनी कायनात पर वापस तशरीफ़ लाएंगे और उसे आंखों से देखने के वक़्त अह्ले किताब (यहूदी-ईसाई) में से हर एक मौजूद हस्ती को क़ुरआन के फ़ैसले के मुताबिक़ ईसा ﷺ पर ईमान लाने के सिवा कोई चारा-ए-कार बाक़ी न रहेगा और फिर जब वे अपनी ज़िंदगी की मुद्दत ख़त्म करके मौत की गोद में चले जाएंगे, तो क़ियामत के दिन अपनी उम्मत (अह्ले किताब) पर उसी तरह गवाह होंगे, जिस तरह तमाम नबी और रसूल अपनी-अपनी उम्मतों पर गवाह बनेंगे।

यह हक़ीक़त कुछ छिपी हुई नहीं है कि हज़रत ईसा के बारे में अगरचे यहूदी व ईसाई दोनों फ़ांसी और क़त्ल के वाक़िए से इत्तिफ़ाक़ करते हैं, लेकिन इस सिलसिले में दोनों के अ़क़ीदे की बुनियाद क़तई तौर पर आपस में टकराने वाले उसूल पर क़ायम है। यहूदी हज़रत मसीह को गढ़ कर बातें बनाने वाले और झूठा कहते और दज्जाल समझते हैं और इसलिए फ़ख्र करते हैं कि उन्होंने यसूअ मसीह को फांसी पर भी चढ़ाया और फिर इस हालत में मार भी डाला।

इसके ख़िलाफ ईसाइयों का अ़क़ीदा यह है कि दुनिया का पहला इंसान आदम गुनाहगार था और सारी दुनिया गुनाहगार थी, इसलिए ख़ुदा की सिफ़त 'रहमत' ने इब्नियत (बेटा होने) की शक्ल अख़्तियार की और उसको दुनिया में भेजा, ताकि वह यहूदियों के हाथों सूली पर चढ़े और मारा जाए और इस तरह कायनात माज़ी (भूतकाल) और मुस्तक़्बिल (भविष्य) के गुनाहों का 'कफ़्फ़ारा' बनकर दुनिया की नजात की वजह बने।'

सूरः निसा की आयतों में क़ुरआन ने साफ़-साफ़ कह दिया कि हज़रत मसीह ﷺ के क़त्ल के दावे की बुनियाद किसी भी अ़क़ीदे की बुनियाद पर

Copyright OfflineDeeniApp

हो, लानत के क़ाबिल और ज़िल्लत और घाटे की वजह है। ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर को झूठा समझकर यह अ़क़ीदा रखना भी लानत की वजह और ख़ुदा के बन्दे और मरयम के पेट से पैदा इंसान को ख़ुदा का बेटा बना कर और 'कफ़्फ़ारे' का झूठा अ़क़ीदा गढ़ कर मसीह को फांसी पाया हुआ और क़त्ल किया हुआ मान लेना भी गुमराही और इल्म व हक़ीक़त के ख़िलाफ़ अटकल का तीर है और इस सिलसिले में सही और हक़ीक़त पर मब्नी फ़ैसला वही है, जो क़ुरआन ने किया है और जिसकी बुनियाद 'इल्म व यक़ीन और वह्य इलाही' पर क़ायम है।

हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें

क़ुरआन ने जिन मोजज़ों भरे इख़्तिसार के साथ हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने, आज की ज़िंदगी और क़ियामत की अ़लामतें बन कर आसमान से उतरने के बारे में साफ़ किया है, हदीसों के सही ज़ख़ीरे में इन आयतों की ही तफ़्सील बयान करके इन हक़ीक़तों को रोशन किया गया है। चुनांचे इमामे हदीस बुख़ारी व मुस्लिम, दोनों ही ने (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह रिवायत सनद के कई तरीक़ों से नक़्ल की है—

"अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम़ ने इर्शाद फ़रमाया—'उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, ज़रूर वह वक़्त आने वाला है कि तुम में ईसा बिन मरयम, हाकिम व आ़दिल बन कर उतरेंगे, वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िंज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेंगे (यानी मौजूदा ईसाई धर्म को मिटाएंगे और जिज़या उठा देंगे (यानी अल्लाह के निशान को देख लेने के बाद इस्लाम के सिवा कुछ भी क़ुबूल नहीं होगा और इस्लामी अहकाम में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिज़या का हुक्म उसी वक़्त तक के लिए है) और माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसके क़ुबूल करने वाला नहीं मिलेगा और ख़ुदा के सामने एक सज्दा दुनिया और उसमें जो कुछ है, उससे ज़्यादा क़ीमत रखेगा (यानी माल की ज़्यादती की वजह से ख़ैरात व सदक़ात के मुक़ाबले में नफ़्ल इबादतों की अहमियत बढ़ जाएगी)

Copyright OfflineDeeniApp

हो, लानत के क़ाबिल और ज़िल्लत और घाटे की वजह है। ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर को झूठा समझकर यह अ़क़ीदा रखना भी लानत की वजह और ख़ुदा के बन्दे और मरयम के पेट से पैदा इंसान को ख़ुदा का बेटा बना कर और 'कफ़्फ़ारे' का झूठा अ़क़ीदा गढ़ कर मसीह को फांसी पाया हुआ और क़त्ल किया हुआ मान लेना भी गुमराही और इल्म व हक़ीक़त के ख़िलाफ़ अटकल का तीर है और इस सिलसिले में सही और हक़ीक़त पर मब्नी फ़ैसला वही है, जो कुरआन ने किया है और जिसकी बुनियाद 'इल्म व यक़ीन और वह्य इलाही' पर क़ायम है।

हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें

कुरआन ने जिन मोजज़ों भरे इख़्तिसार के साथ हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने, आज की ज़िंदगी और क़ियामत की अ़लामतें बन कर आसमान से उतरने के बारे में साफ़ किया है, हदीसों के सही ज़ख़ीरे में इन आयतों की ही तफ़्सील बयान करके इन हक़ीक़तों को रोशन किया गया है। चुनांचे इमामे हदीस बुख़ारी व मुस्लिम, दोनों ही ने (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह रिवायत सनद के कई तरीक़ों से नक़्ल की है—

"अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—'उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, ज़रूर वह वक़्त आने वाला है कि तुम में ईसा बिन मरयम, हाकिम व आ़दिल बन कर उतरेंगे, वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िंज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेंगे (यानी मौजूदा ईसाई धर्म को मिटाएंगे और जिज़या उठा देंगे (यानी अल्लाह के निशान को देख लेने के बाद इस्लाम के सिवा कुछ भी क़ुबूल नहीं होगा और इस्लामी अहकाम में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिज़या का हुक्म उसी वक़्त तक के लिए है) और माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसके क़ुबूल करने वाला नहीं मिलेगा और ख़ुदा के सामने एक सज्दा दुनिया और उसमें जो कुछ है, उससे ज़्यादा क़ीमत रखेगा (यानी माल की ज़्यादती की वजह से ख़ैरात व सदक़ात के मुक़ाबले में नफ़्ल इबादतों की अहमियत बढ़ जाएगी)

Copyright OfflineDeeniApp

फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम (क़ुरआन से इसकी गवाही) चाहो तो यह आयत पढ़ो *(व इम-मिन अहलिल किताब—आयत)* और कोई अहले किताब में से न होगा, मगर (ईसा की) मौत से पहले उस पर (ईसा पर) ज़रूर ईमान ले आएगा और वह (ईसा अ०स०) क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा।' (किताबुल अंबिया)

बुख़ारी और मुस्लिम में नाफ़ेअ मौला अबू क़तादा अंसारी रज़ि० की सनद से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की यह रिवायत नक़ल की गई है—

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुममें इब्ने मरयम उतरेंगे और इस हालत में उतरेंगे कि तुम्हीं में से एक आदमी तुम्हारी इमामत कर रहा होगा। (किताबुल अंबिया)

यह और इसी क़िस्म की हदीस का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है जो हज़रत ईसा बिन मरयम अ०स०, पैग़म्बर बनी इसराईल से मुताल्लिक़ हदीस और तफ़्सील की किताबों में नक़ल की गई है और सनद की ताक़त के लिहाज़ से सहीह और हसन से कम दर्जा नहीं रखतीं और शोहरत और तवातुर के एतबार से जिनका यह हाल है कि इमाम तिर्मिज़ी के मुताबिक़ हदीस के हाफ़िज़ इमामुद्दीन बिन कसीर, हदीस के हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी और दूसरे हदीस के इमाम, सोलह जलीलुल क़द्र सहाबा रज़ि० ने इनको रिवायत किया है जिनमें से कुछ साहबा का यह दावा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ये बातें सैकड़ों सहाबा के मज्मा में ख़ुत्बा देकर फ़रमाईं और ये सहाबा किराम बिना किसी इंकार और बेगानेपन के इन रिवायतों को ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की ख़िलाफ़त के दौर में एलानिया सुनाते थे। चुनांचे इन जलीलुल क़द्र सहाबा से जिन हज़ारों सहाबा ने सुना, उनमें से ये ऊंचे दर्जे की हस्तियां ज़िक्र के क़ाबिल हैं जिनमें का हर आदमी हदीस की रिवायत में ज़ब्त व हिफ़्ज़, सक़ाहत और इल्मी बड़प्पन को सामने रखकर इमामत व क़ियामत का दर्जा रखता है। जैसे सईद बिन मुसय्यिब, नाफ़ेअ् मौला अबू क़तादा, हंज़ला बिन अ़ली अल-अस्लमी, अ़ब्दुर्रहमान बिन आदम, अबू सलमा अबू अम्र, अ़ता बिन बश्शार, अबू सुहैल, मूसिर बिन ग़िफ़ारा, यह्या बिन अबी

Copyright OfflineDeeniApp

अम्र, जुबैर बिन नुज़ैर, उर्वः बिन मसऊद सक़फ़ी, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी, अबू ज़रआ, याक़ूब बिन आमिर, अबू नसरा, अबुत्तुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहिम०

फिर इन बड़े उलेमा और नामी मुहद्दिसीन (यानी हदीस के नामी माहिर) से जिन अनगिनत शार्गिदों ने सुना, उनमें से हदीस-रिवायतों के तबक़े में, जिनको हदीस और कुरआन के इल्मों की जानकारी का बुलन्द रुतबा हासिल है और अपन-अपने वक़्त के 'इमामुल हदीस' और 'अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस' मान लिए गए हैं, कुछ के नाम नीचे दिए जाते हैं–

इब्ने शहाब ज़ोहरी, सुफ़ियान बिन ऐनीया, लैस, इब्ने अबी ज़ेब, औज़ाई, क़तादा, अब्दुर्रहमान बिन अबी उम्र, सुहैल, जबला बिन सुहैल, अ़ली बिन ज़ैद, अबू राफ़ेअ़, अब्दुर्रहमान बिन जुबैर, नोमान बिन सालिम, मामर, अ़ब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह (रहमहुमुल्लाह)

ग़रज़ इन रिवायतों और सही हदीसों को सहाबा, ताबिईन, तबा ताबिईन, यानी वक़्त के बेहतरीन तबक़े में इस दर्जा जगह मिल चुकी थी और वह बग़ैर किसी इंकार के इस दर्जा कुबूल करने के लायक़ हो चुकी थी कि हदीस के इमामों के नज़दीक हज़रत ईसा ﷺ की ज़िंदगी और उतरने से मुताल्लिक़ इन हदीसों के मानी व मतलब के लिहाज़ से तवातुर का दर्जा हासिल था और इसीलिए वे बे-झिझक इस मसले को 'अहादीसे मुतवातिरा' से साबित और मुसल्लम कहते थे और हक़ीक़त भी यह है कि रिवायते हदीस के तमाम तबक़ों और दर्जों में इन रिवायतों को 'तलक़्क़ा बिल क़ुबूल' का यह दर्जा हासिल रहा है कि हर दौर में उसके रावियों में 'हदीस के इमाम' और रिवायते हदीस के 'मदार' (आधार) नज़र आते हैं। यही वजह है कि सहाबा पर मौक़ूफ़ मरफ़ूअ़ हदीसों और रिवायतों के नक़ल करने वालों में इमाम अहमद, इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा जैसे हदीस के इमामों के नाम शामिल हैं और वे सब इन रिवायतों के सहीह और हसन होने पर एक राय रखते हैं और यही वजह है कि हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने और ज़िंदगी और आसमान से उतरने पर उम्मत मुत्तफ़िक़ हो चुकी है, चुनांचे अक़ाइद व कलाम के इल्म की मशहूर किताब 'अ़क़ीदा सफ़ारीनी' में उम्मत के इस इत्तिफ़ाक़ को खोलकर बयान किया गया है।

Copyright OfflineDeeniApp

'और क़ियामत की निशानी में से तीसरी निशानी यह है कि हज़रत (मसीह) ईसा बिन मरयम आसमान से उतरेंगे और उनका आसमान से उतरना किताब (क़ुरआन) सुन्नत (हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत से क़तई तौर पर साबित है। (क़ुरआन व हदीस से उतरना साबित करने के बाद फ़रमाते हैं) जहां तक उम्मत के इज्माअ् का ताल्लुक़ है, तो इसमें ज़रा शुबहा नहीं कि हज़रत ईसा ﷺ के आसमान से उतरने पर उम्मत का इज्माअ है और इस बारे में इस्लामी शरीअ़त के मानने वालों में से किसी एक का भी इख़्तिलाफ़ मौजूद नहीं, अलबत्ता फ़लसफ़ियों और मुलहिदों (अल्लाह के न मानने वालों) ने ईसा ﷺ के उतरने का इंकार किया है और इस्लाम में उनका इंकार बिल्कुल बे-मानी है।

उतरने के वाक़िए सहीह हदीसों की रोशनी में

हज़रत ईसा के उतरने से मुताल्लिक़ सहीह हदीसों से जो तफ़्सील सामने आती है, उनको तर्तीब के साथ यों बयान किया जा सकता है—

क़ियामत का दिन अगरचे तै है, मगर अल्लाह के अलावा किसी को इसका इल्म नहीं है और यह अचानक वाक़े होगा। 'और उनके पास क़ियामत का इल्म है।' (31 : 34) 'और क़ियामत का इल्म ख़ुदा ही को है।' *'हत्ता इज़ा जाअत हुमुस्साअतु बग़ततन'* (6 : 31) (यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत की घड़ी आ जाएगी) *'ला तातीकुम इल्ला बग़ततन'* (7 : 187) 'क़ियामत तुम पर नहीं आएगी, मगर अचानक।' और जिब्रील ﷺ की हदीस में है, *'मल मसऊलु अन्हा बि आलम मिन साइल'* (जिब्रील से फ़रमाया) क़ियामत के बारे में आपसे ज़्यादा मुझे भी इल्म नहीं। जो थोड़ा बहुत इल्म आपको है, उसी क़दर मुझको भी इल्म है। और एक हदीस में है, तुम मुझसे क़ियामत के बारे में सवाल करते हो, तो इसका इल्म तो अल्लाह की हो है।' अलबत्ता क़ुरआन ने और सहीह हदीसों ने कुछ ऐसी निशानियों बयान की हैं जो क़ियामत के क़रीब पेश आएंगी और उनसे सिर्फ़ उसके नज़दीक हो जाने का पता चल सकता है। 'क़ियामत की शर्तों में एक बड़ी निशानी हज़रत ईसा

Copyright OfflineDeeniApp

का मला-ए-आला से उतरना है, जिसकी तफ़्सील यह है–

'मुसलमानों और ईसाइयों के दर्मियान ज़बरदस्त लड़ाई चल रही होगी मुसलमानों की क़ियादत व इमामत रसूलुल्लाह ﷺ में से एक ऐसे आदमी के हाथ में होगी जिसका लक़ब मेंहदी होगा। इस लड़ाई के दर्मियान ही में मसीह ज़लालते दज्जाल का ख़ुरूज होगा, यह यहूदी नस्ल का और काना होगा। कुदरत के करिश्मे ने उसकी पेशानी पर 'का-फ़ि-र' (काफ़िर) लिख दिया होगा जिसको ईमान वाले ईमानी फ़रासत (बुद्धि मत्ता) से पढ़ सकेंगे और उसके झूठ-फ़रेब से जुदा रहेंगे। यह पहले तो ख़ुदाई का दावा करेगा और शोबदे बाज़ों की तरह शोबदे दिखाकर लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करेगा, मगर इस सिलसिले को कामियाब न देखकर कुछ दिनों के बाद 'मसीहे हिदायत' होने का दावा करेगा। यह देख कर यहूदी बड़ी तायदाद में, बल्कि क़ौमी हैसियत से उसकी पैरवी करने वाले बन जाएंगे और यह इसलिए होगा कि यहूदी 'मसीहे हिदायत' का इन्कार करके उनके क़त्ल का दावा कर चुके हैं और मसीहे हिदायत के आने के आज तक इंतिज़ार में है। इसी हालत में एक दिन दमिश्क़ (सीरिया) की जामा मस्जिद में मुसलमान मुंह अंधेरे नमाज़ के लिए जमा होंगे, नमाज़ के लिए इक़ामत हो रही होगी और मेहदी मौऊद इक़ामत के मुसल्ले पर पहुंच चुके होंगे कि अचानक एक आवाज़ सबको अपनी ओर मुतवज्जह कर लेगी। मुसलमान आंख उठाकर देखेंगे तो सफ़ेद बादल छाया हुआ नज़र आएगा और थोड़ी-सी देर में यह दिखाई देगा के ईसा दो पीली ख़ूबसूरत चादरों में लिपटे हुए और फ़रिश्तों के बाज़ुओं पर सहारा दिए हुए मला-ए-आला से उतर रहे हैं। फ़रिश्ते उनको मस्जिद के मीनारे पर उतार देंगे और वापस चले जाएंगे।

अब हज़रत ईसा ﷺ का ताल्लुक़ ज़मीनी कायनात के साथ दोबारा जुड़ जाएगा और वह फ़ितरत के आम क़ानून के मुताबिक़ मस्जिद के सेहन में उतरने के लिए सीढ़ी तलब कर रहे होंगे, फ़ौरन तामील होगी और वह मुसलमानों के साथ नमाज़ की सफ़ों में आ खड़े होंगे। मुसलमानों का इमाम (मेंहदी मौऊद) ताज़ीम के तौर पर पीछे हटकर हज़रत ईसा से इमामत की दरख़्वास्त करेगा। आप फ़रमाएंगे कि यह इक़ामत तुम्हारे लिए कही गई है,

Copyright OfflineDeeniApp

Maktabe Asr

[illegible] पुन: ले नमाज़ पढ़ाऐं।

नमाज़ से फ़रागत के बाद जब मुसलमानों की इमामत हज़रत ईसा के हाथों में आ जाएगी और वे हथियार लेकर मसीहे ज़लालत (दज्जाल) के क़त्ल के लिए रवाना हो जाएंगे और शहर पनाह के बाहर उसको बाब लुद पर सामने पाएंगे। दज्जाल समझ जाएगा कि उसके फ़रेब और ज़िंदगी के खात्मे का वक़्त आ पहुंचा, इसलिए डर की वजह से रांग की तरह पिघलने लगेगा और हज़रत ईसा आगे बढ़कर उसको क़त्ल कर देंगे और फिर जो यहूदी दज्जाल के साथ रहने से क़त्ल से बच जाएंगे वे और ईसाई सब इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे और मसीहे हिदायत की सच्ची पैरवी के लिए मुसलमानों के कंधे से कंधा मिला कर खड़े नज़र आएंगे, उसका असर मुश्रिक जमाअ़तों पर भी पड़ेगा और इस तरह उस ज़माने में इस्लाम के अलावा कोई मज़हब बाक़ी नहीं रहेगा।

इन वाक़ियों के कुछ दिनों के बाद याजूज-माजूज निकलेंगे और अल्लाह की हिदायत के मुताबिक़ हज़रत ईसा ﷺ मुसलमानों को उस फ़ित्ने से बचाए रखेंगे। हज़रत ईसा ﷺ की हुकूमत का ज़माना चालीस साल रहेगा और इस बीच वह इज़्दवाजी ज़िंदगी (दाम्पत्य जीवन) बसर करेंगे और उनकी हुकूमत के दौर में अ़द्ल व इंसाफ़ और ख़ैर व बरकत का यह हाल होगा कि बकरी और शेर एक घाट में पानी पिएंगे और बदी और शरारत के अ़नासिर (तत्व) दब कर रह जाएंगे। (इब्ने असाकिर)

नोट– और मुस्लिम में है कि हुकूमत का दौर सात साल रहेगा।

मसीह ﷺ की वफ़ात

हुकूमत के चालीस साल के दौर के बाद ईसा ﷺ का इंतिक़ाल हो जाएगा और नबी अकरम ﷺ के पहलू में दफ़न होंगे, हज़रत अबू हुरैरह ؓ की लम्बी हदीस में है कि–

'फिर वह दुनिया की कायनात पर उतर कर चालीस साल क़ियाम करेंगे और इसके बाद वफ़ात पा जाएंगे और मुसलमान उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे और उनको दफ़न करेंगे। –इब्ने हिब्बान

और तिर्मिज़ी ने मुहम्मद बिन यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम की

Copyright OfflineDeeniApp

सनदे हसन के सिलसिले से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० से यह रिवायत नक़ल की है—

'अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया, तौरात में मुहम्मद ﷺ की सिफ़त (हुलिया व सीरत) का ज़िक्र किया गया है और यह भी लिखा है कि ईसा बिन मरयम उनके साथ (पहलू में) दफ़न होंगे।

हज़रत ईसा और आख़िरत का दिन

सूरः माइदा में हज़रत ईसा के अलग-अलग हालात का ज़िक्र किया गया है। फिर सूरः का आख़िर भी उन्हीं के तज़्किरे पर ख़त्म होता है। इस जगह अल्लाह तआ़ला ने एक तो क़ियामत के उस वाक़िए का नक़्शा खींचा है, जब नबियों से उनकी उम्मतों के बारे में सवाल होगा और वे बड़े अदब से अपनी लाइल्मी ज़ाहिर करेंगे और अ़र्ज़ करेंगे, 'ऐ ख़ुदा! आज का दिन तूने इसलिए मुक़र्रर फ़रमाया है कि हर मामले में हक़ीक़तों को सामने रखकर फ़ैसला सुनाए और हम चूंकि सिर्फ़ ज़ाहिरी चीज़ों ही पर हुक्म लगा सकते हैं और दिलों और हक़ीक़तों को देखने वाला तेरे सिवा कोई नहीं, इसलिए आज हम क्या गवाही दे सकते है, सिर्फ़ यही कह सकते हैं कि हमें कुछ मालूम नहीं, तू ग़ैब का जानने वाला हैं, इसलिए तू ही सब कुछ जानता है।

तर्जुमा—*वह दिन (ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि अल्लाह तआ़ला पैग़म्बरों को जमा करेगा, फिर कहेगा (अपनी-अपनी उम्मतों की जानिब से) क्या जवाब दिए गए? वे (पैग़म्बर) कहेंगे, (तेरे इल्म के सामने) हम कुछ नहीं जानते।*

(5 : 109)

अगली आयतों में हज़रत ईसा के जवाब का ज़िक्र किया गया है। उसके बयान का तरीक़ा नबियों के जवाब के साथ मेल खाता है—

तर्जुमा—*और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब अल्लाह तआ़ला ईसा बिन मरयम से कहेगा, क्या तूने लोगों (बनी इसराईल) से कह दिया था कि मुझको और मेरी मां को अल्लाह के अलावा ख़ुदा बना लेना। ईसा कहेंगे, 'पाकी तुझको ही शोभा देती है, मेरे लिए कैसे मुम्किन था कि मैं वह बात कहता जो कहने के लायक़ नहीं।' अगर यह बात मैंने उनसे कही होती तो*

Copyright OfflineDeeniApp

यक़ीनन तेरे इल्म में होती, (इसलिए कि) तू वह सब कुछ जानता है, जो मेरे जी में है और मैं तेरा भेद नहीं पा सकता। बेशक तू ग़ैब की बातों का ख़ूब जानने वाला है। मैंने उस बात के अलावा कि जिसका तू ने मुझे हुक्म दिया, उनसे और कुछ नहीं कहा, वह यह कि सिर्फ़ अल्लाह ही की पूजा करो जो मेरा और तुम्हारा सब का रब है।' और मैं उन पर उस वक़्त तक का गवाह हूं जब तक मैं उनके दर्मियान रहा। फिर जब तूने मुझको क़ब्ज़ कर लिया, तब तू ही उन पर निगहबान था और तू हर चीज़ पर गवाह है। अगर तू इन सबको अज़ाब चखाए तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर इनको बख़्श दे, पस तू ही बेशक ग़ालिब हिक्मत वाला है (5 : 116-118)

हज़रत ईसा जब अपना जवाब दे चुकेंगे, तब अल्लाह तआ़ला यह इर्शाद फ़रमाएगा—

तर्जुमा—*अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, यह ऐसा दिन है कि जिसमें सच्चों की सच्चाई ही काम आ सकती है। उन्हीं के लिए जन्नत है जिनके नीचे नहरें बहती हैं और जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे और वे अल्लाह से राज़ी और अल्लाह उनसे राज़ी (का ऊंचा मुक़ाम पाएंगे) यह बहुत ही बड़ी कामियाबी है।* (5 : 119)

हज़रत ईसा ﷺ का जवाब एक जलीलुल क़द्र पैग़म्बर की शान की अ़ज़मत के ठीक मुताबिक़ है। वह पहले अल्लाह के दरबार में उज्र रखेंगे कि यह कैसे मुम्किन था कि मैं ऐसी नामुनासिब बात कहता जो क़तई तौर पर हक़ के ख़िलाफ़ है 'सुब-हा-न-क मा यकूनु ली अन अक़ू-ल मा लै-स ली बिहक़्क़' फिर अदब के लिहाज़ के तौर पर अल्लाह के हक़ीक़ी इल्म के सामने अपने इल्म को हेच बे-इल्मी जैसा ज़ाहिर करेंगे 'इन कुन्तु क़ुलतुहू फ-क़द अलिम-तहू मा फ़ी नफ़्सी वाला आलमुमा फ़ी नफ़्सि-क इन्न-क अन-त अल्लामुल गुयूब० और इसके बाद अपने फ़र्ज़ की अंजामदेही का हाल गुज़ारिश करेंगे, *'मा क़ुल्तु लहुम इल्ला मा अमरतनी बिही अनिअ़ बुदुल्ला-ह रब्बी वा रब्बकुम'* और फिर उम्मत ने हक़ की इस दावत का क्या ज़वाब दिया, उसके मुताल्लिक़ ज़ाहिर बातों की गवाही का भी इस ढंग से ज़िक्र करेंगे जिसमें उनकी गवाही अल्लाह की गवाही के मुक़ाबले में बे कीमत नज़र आए। 'व कुन-त अ़लैहिम शहीदम-मा दुमतु फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन-त अन्तर्रक़ी-ब

Copyright OfflineDeeniApp

अ़लैहीम व अन-त अ़ला कुल्लि शैइन शहीद' और इसके बाद यह जानते हुए कि उम्मत में मोमिनीन क़ानितीन भी हैं और मुन्किरीन ज़ाहिदीन भी– अज़ाब के वाक़े होने और मग़्फ़िरत तलब करने का इस अंदाज से ज़िक्र करेंगे जिससे एक तरफ़ अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए अ़मल के बदले के क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी भी न मालूम हो और दूसरी ओर उम्मत के साथ रहमत व शफ़क़त के जज़्बे का जो तक़ाज़ा है वह पूरा हो जाए'। *इन तुअ़ज़्ज़िब हुम फ़-इन्नहुम हबादुक व इन तग़्फ़िर लहुम, फ़-इन्न-क अन्तल अ़ज़ीजुल हकीम०*

जब हज़रत ईसा अ़र्ज़दाश्त या जवाब के मज़्मून को ख़त्म कर चुके तो रब्बुल आ़लमीन ने अपने अ़दल के क़ानून का यह फ़सैला सुना दिया, ताकि रहमत व मग़्फ़िरत के हक़दार को मायूसी न पैदा हो, बल्कि मुसर्रत व शादमानी से, उनके दिल रोशन हो जाएं और अज़ाब के हक़दार ग़लत उम्मीदें न क़ायम कर सकें। 'क़ालल्लाहु हाज़ा यौमुन यनफ़उस्सादिक़ी-न सिदक़हुम' (आयत) (5 : 119)

इन तमाम तफ़्सीलों का हासिल यह है कि इन आयतों का आगा-पीछा साफ़-साफ़ बता देता है कि यह वाक़िया क़ियामत के दिन पेश आएगा और हज़रत ईसा के मला-ए-आला पर उठाए जाने के वक़्त नहीं पेश हुआ।

हज़रत ईसा की इस्लाह की दावत और बनी इसराईल के फ़िरक़े

पीछे यह बताया जा चुका है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा ﷺ को इंजील अ़ता की थी और यह इलहामी किताब असल में तौरात का तुक्मिला (Supplement) थी। यानी हज़रत ईसा की तालीमी बुनियाद अगरचे तौरात पर ही क़ायम थी, मगर यहूद की गुमराहियों, मज़हबी बग़ावतों और सारकशियों की वजह से, जिन सुधारों की ज़रूरत थी, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मसीह की मारफ़त इंजील की शक्ल में उनके सामने पेश कर दिया था। हज़रत मसीह को नबी बनाए जाने से पहले यहूदियों की एतक़ादी और अ़मली गुमराहियां अगरचे बहुत ज़्यादा हो गई थीं और हज़रत मसीह ﷺ ने नबी बनाए जाने के बाद इन सबके सुधार के लिए क़दम उठाया भी, फिर कुछ अहम बुनियादी बातें ख़ास तौर पर इस्लाह के क़ाबिल थीं, जिन्हें सुधारने के लिए हज़रत

Copyright OfflineDeeniApp

मसीह बहुत ज़्यादा सरगर्मे अ़मल रहे।

1. यहूदियों की एक जमाअ़त कहती थी कि नेक-बद की जज़ा-सज़ा इस दुनिया में मिल जाती है, बाक़ी क़ियामत, आख़िरत, आख़िरत में जज़ा व सज़ा, हश्र व नश्र ये सब बातें ग़लत है। ये 'सदूक़ी' थे।

2. दूसरी जमाअ़त अगरचे इन तमाम चीज़ों को हक़ समझती थी, मगर साथ ही यह यक़ीन रखती थी कि अल्लाह से मिलने के लिए यह बिल्कुल ज़रूरी है कि दुनिया की लज़्ज़तों और दुनिया वालों से किनाराकश होकर सन्यासी का जीवन अपनाया जाए, चुंनाचे वे बस्तियों से अलग ख़ानक़ाहों और झोपड़ियों में रहना पसन्द करते थे, मगर यह जमाअ़त हज़रत मसीह के नबी बनाए जाने से कुछ पहले अपनी यह हैसियत भी खो चुकी थी और अब 'दुनिया त्याग देने' के परदे में दुनिया की हर क़िस्म की गन्दगी में लथ-पत नज़र आती थी। ज़ाहिरी तौर पर रस्म व रिवाज ज़ाहिदों का-सा होता, मगर ये तंहाइयों में वह सब कुछ नज़र आता जिनसे खुले गुनाहगार भी एक बार शर्म से आंखें बंद कर लें, ये 'फ़रीसी' कहलाते थे।

तीसरी जमाअ़त मज़हबी रस्मों और हैकल की ख़िदमत से मुताल्लिक़ थी, लेकिन उनका भी यह हाल था कि जिन रास्तों और ख़िदमतों को 'अल्लाह के लिए' करना चाहिए था और जिन आमाल के नेक नतीजे ख़ुलूस पर टिके हुए थे, उनको तिजारती करोबार बना लिया था और जब तक हर एक रस्म और हैकल की ख़िदमत पर भेंट और नज़्र न ले लें, क़दम न उठाएं, यहां तक कि इस मुक़द्दस कारोबार के लिए उन्होंने तौरात के हुक्मों में भी घट-बढ़ कर दी थी, ये 'काहिन' थे।

4. चौथी जमाअ़त इन सब पर हावी और मज़हब की ठेकेदार थी। इस जमाअ़त ने जनता में धीरे-धीरे यह अ़क़ीदा पैदा कर दिया था कि मज़हब और दीन के उसूल व एतक़ाद कुछ नहीं हैं, मगर 'वह' जिनको वे सही कह दें, उनको यह अख़्तियार हासिल है कि वे हलाल को हराम और हराम को हलाल बना दें, दीन के हुक्मों में इज़ाफ़ा या कमी कर दें, जिसको चाहें जन्नत का परवाना लिख दें और जिसकों चाहें जहन्नम की तहरीर दे दें। अल्लाह के यहां उनका फ़ैसला अटल और अनमिट है। ग़रज़ बनी इसराईल के 'अरबाबम मिन

Copyright OfflineDeeniApp

दूनिल्लाह' बने हुए थे और तौरात के लफ़्ज़ी और मानवी हर क़िस्म की घट-बढ़ में इस दर्जा बहादुर थे कि उसको दुनियातलबी का मुस्तक़िल सरमाया बना लिया था और आम व ख़ास की ख़ुश्नूदी के लिए ठहराई हुई क़ीमत पर दीन के हुक्मों को बदल डालना उनका दीनी काम था, ये 'अहबार' या 'फ़क़ीह' थे।

ये थीं वे जमाअ़तें और ये थे उनके अ़क़ीदे और अ़मल जिनके दर्मियान हज़रत मसीह भेजे गए ताकि वह उन की इस्लाह करें। उन्होंने हर एक जमाअ़त के ग़लत अ़क़ीदों और अ़मलों का जायज़ा लिया, रहम व मुहब्बत के साथ उनके ऐबों और ख़राबियों पर उंगली उठाई, उनको सुधरने पर उभारा और उनके ख़्यालों, अ़क़ीदों और उनके अ़मलों और किरदारों की गन्दागियों को ढेर करके उनका रिश्ता कायनात के पैदा करने वाले अल्लाह के साथ दोबारा क़ायम करने की कोशिश की, मगर इन बदबख़्तों ने अपनी काली करतूतों में सुधार लाने से साफ़ इंकार कर दिया और न सिर्फ़ यह बल्कि उनको 'मसीह ज़लालत' कह कर उनकी हक़-व इर्शाद की दावत के दुश्मन और उनके ख़िलाफ़ साज़िशें करके उनकी जान को लग गए।

चारों इंजीलें

हज़रत मसीह पर जो इंजील नाज़िल हुई थी, उसके बारे में तमाम इल्म वालों का, जिनमें ख़ुद नसारा भी शामिल हैं, इत्तिफ़ाक़ है कि उनमें से कोई एक भी हज़रत मसीह पर उतरी हुई इंजील नहीं है, बल्कि यूनानी और उनसे नक़ल किए गए दूसरी ज़ुबानों के तर्जुमे हैं जो तब्दीली और घट-बढ़ का बराबर शिकार होते रहे हैं और सिर्फ़ यही नहीं कि ये चारों इंजीलें, इंजीले मसीह नहीं हैं, बल्कि किसी इल्मी, तारीख़ी और मज़हबी सनद से उनका मसीह के शागिर्दों का लिखा होना भी साबित नहीं है, बल्कि बाद के लिखने वालों की लिखी हुई हैं, अलबत्ता इन तर्जुमों में बाज़ नसीहतों और हिक्मत के मुक़ामों के सिलसिले में एक हिस्सा ऐसा ज़रूर है जो हज़रत मसीह ﷺ के इर्शाद से लिया गया है, इसलिए नक़ल में कहीं-कहीं असल की झलक नज़र आ जाती है।

Copyright OfflineDeeniApp

(मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी ने मौजूदा इंजील के बारे में बहुत ज़ोरदार तहक़ीक़ पेश की है, जिसका यह हासिल है। मोरस बकाई ने 'इंजील, सांइस और क़ुरआन' में भी इंजील से मुताल्लिक़ तह्क़ीक़ी बातें की हैं, जिस पर तवज्जोह दी जानी चाहिए)

क़ुरआन और इंजील

क़ुरआन मजीद की बुनियादी तालिम यह है कि जिस तरह अल्लाह एक है, उसी तरह उसकी सच्चाई भी एक ही है और वह कभी किसी ख़ास क़ौम, ख़ास जमाअ़त और ख़ास गिरोह की विरासत नहीं रही, बल्कि हर क़ौम और हर मुल्क में अल्लाह की रुश्द व हिदायत का पैग़ाम, एक ही बुनियाद पर क़ायम रहते हुए उसके सच्चे पैग़म्बरों या उसके नायबों के जरिए हमेशा दुनिया के लिए सीधे रास्ते की दावत देने वाला और उस तरफ़ बुलाने वाला रहा है और उसी का नाम 'सीधा रास्ता' और 'इस्लाम' है और क़ुरआन इसी भूले हुए सबक़ को याद दिलाने आया है और यही वह आख़िरी पैग़ाम है जिसने तमाम पुराने मज़हब की सच्चाइयों को अपने अन्दर समो कर पूरी ज़मीनी कायनात की हिदायत का बेड़ा उठाया है और अब इसलिए उसका इंकार गोया अल्लाह की तमाम सच्चाइयों का इंकार है। इसी बुनियादी तालीम के पेशेनज़र उसने हज़रत मसीह की शान की बड़ाई को सराहा, और यह माना कि बेशक इंजील इलहामी किताब और अल्लाह की किताब है, लेकिन साथ ही जगह-जगह दलीलों के साथ यह भी बतलाया कि अह्ले किताब उलेमा ने इसकी सच्ची तालीम को मिटा डाला, बदल डाला और हर क़िस्म की तब्दीली करके इसकी तालीम को शिर्क व कुफ़्र की तालीम बना दिया। लेकिन किसी किसी जगह पर अह्ले किताब को तौरात और इंजील के ख़िलाफ़ अ़मल पर मुलज़िम बनाते हुए मौजूदा तौरात व इंज़ील के हवाले भी देता है जिससे मालूम होता है कि क़ुरआन नाज़िल होते वक़्त असल नुस्ख़े भी, अगरचे बिगड़ी हुई शक्ल में ही क्यों न हो, पाए जाते थे, बहरहाल उस वक़्त भी ये दोनों किताबें लफ़्ज़ी और मानवी दोनों क़िस्म की तहरीफ़ात से इतनी बिगड़ चुकी थीं कि वे मूसा की तौरात और ईसा की इंज़ील कहलाने की हक़दार नहीं रही

Copyright OfflineDeeniApp

थीं। चुनांचे कुरआन ने असल किताबों की अ़ज़्मत और अह्ले किताब के हाथों उनकी तहरीफ़ और उनका बिगाडा जाना दोनों को खोल कर बयान किया है।

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) अल्लाह ने तुझपर किताब को उतारा हक़ के साथ, जो तस्दीक़ करने वाली है उन किताबों की जो उनके सामने हैं। और उतारा उसने तौरात और इंजील को (कुरआन से) पहले, जो हिदायत हैं लोगों के लिए और उतारा फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली)'* (3-3, 4)

तर्जुमा—*'और सिखाता है वह किताब को, हिक्मत को, तौरात को, इंज़ील को।'* (3 : 48)

तर्जुमा—*ऐ अह्ले किताब! तुम किस लिए इब्राहीम के बारे में झगड़ते हो और हाल यह है कि तौरात और इंजील का नुज़ूल नहीं हुआ, मगर इब्राहीम के बाद, पस क्या तुम इतना भी नहीं समझते?* (3 : 65)

तर्जुमा—*और पीछे भेजा हमने ईसा बिन मरयम को, जो तस्दीक़ करनेवाला है उस किताब की जो सामने है तौरात और दी हमने उसको इंजील जिसमें हिदायत और नूर है और अपने से पहली किताब की तस्दीक़ करती है और पूरी तरह हिदायत और नसीहत है परहेज़गारों के लिए और चाहिए कि अह्ले इंजील उसके मुताबिक़ फ़ैसले दें जो हमने इंजील में उतार दिया और जो अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के मुवाफिक़ फ़ैसला नहीं देता, पस यही लोग फ़ासिक़ हैं।'* (5 : 46-47)

तर्जुमा— *और अगर वे तौरात व इंजील को क़ायम रखते, (घटा-बढ़ा कर उनको बिगाड़ न डालते) और उसको क़ायम रखते, जो उसकी जानिब उनके परवरदिगार की जानिब से उतारा हुआ है तो अलबत्ता वे (फ़ारिग़ुल बाली के साथ) खाते अपने ऊपर से और अपने नीचे से, कुछ उनमें बीच का रास्ता अपनाने वाले अच्छे लोग हैं और अक्सर उनके बद-अ़मल है।'* (5-66)

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद ﷺ!) कह दीजिए, ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे लिए टिकने की कोई जगह नहीं है, जब तक तौरात और इंजील और उस चीज़ से जिसको तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर नाज़िल किया, क़ायम न करो (ताकि उसका नतीजा कुरआन की तस्दीक़ निकले)*

तर्जुमा—*'और जब मैंने तुझको (ऐ ईसा!) सिखाई किताबे हिक्मत तौरात और इंजील।'* (5-110)

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा—*(भले लोग) वे शख़्स हैं जो पैरवी करते हैं रसूल की जो नबी उम्मी है और जिसका ज़िक्र अपने पास तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं।* (7 : 157)

तर्जुमा—*बेशक अल्लाह ने ख़रीद लिया है मोमिनों से उनकी जानें और उनके मालों को इस बात पर कि उनके लिए जन्नत है, वे अल्लाह के रास्ते में जंग करते हैं, पस क़त्ल करते हैं और क़त्ल होते हैं, उनके लिए अल्लाह का वायदा सच्चा है जो तौरात और इंजील में किया गया है।* (9 : 111)

ग़रज़ यह तारीफ़ व तौसीफ़ है उस तौरात और इंजील की जो तौराते मूसा' और 'इंजीले ईसा' कहलाने की हक़दार और हक़ीक़त में अल्लाह की किताब थीं, लेकिन यहूदियों और ईसाइयों ने इन इलहामी (आसमानी) किताबों के साथ क्या मामला किया, इसका हाल भी कुरआन ही की ज़ुबान से सुनिए।

तर्जुमा—*क्या तुम उम्मीद रखते हो कि वे तुम्हारी बात मान लेंगे, हालांकि उनमें एक गिरोह ऐसा था, जो अल्लाह का कलाम सुनता था, फिर उसको बदल डालता था बावजूद इस बात के कि वह उसके मतलब को समझता था और जान-बूझ कर घट-बढ़ करते थे।* (2 : 75)

तर्जुमा—*पस अफ़सोस उन (इल्म के दावेदारों) पर जिनका शेवा यह है कि ख़ुद अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर लोगों से कहते हैं, यह अल्लाह की तरफ़ से है और यह सब कुछ इसलिए करते हैं ताकि उसके मुआवज़े में एक हक़ीर-सी क़ीमत दुन्यवी फ़ायदे की हासिल करें। पस अफ़सोस उस पर जो कुछ वे लिखते हैं और अफ़सोस इस पर जो कुछ वे इसके ज़रिए से कमाते हैं।* (2 : 78)

तर्जुमा—*वे अहले किताब अल्लाह की किताब (तौरात और इंजील) के वाक़ियों को उनकी सही जगह से बदल डालते हैं, यानी लफ़्ज़ों में और उनके मानी में दोनों में तहरीफ़ यानी बिगाड़ पैदा करते हैं।* (5 : 13)

इनके अलावा 'समने क़लील' (मामूली पूंजी) के बदले अल्लाह को बेच देने से मुताल्लिक़ तो बक़रः, आले इमरान, निसा और तौबा में कई आयतें मौजूद हैं जिनका हासिल यह है कि यहूदी-ईसाई तौरात-इंजील को दोनों तरह बेचा करते थे, लफ़्ज़ों में बदलाव के ज़रिए भी और मानी में बदलाव के सिलसिले से भी, थोड़ा सोने-चांदी के बदले में अल्लाह के इल्म की ख़्वाहिशों

Copyright Office Deeni App

के मुताबिक़ अल्लाह की किताब की आयतों में लफ़्ज़ और मानी दोनों पहलुओं से बदलाव उनके बेच देने की हैसियत रखती है, जिससे बढ़कर शक़ावत और बदबख़्ती का दूसरा कोई अ़मल नहीं और जो हर हाल में लानत के लायक़ है।

क़ुरआन और तस्लीस का अ़क़ीदा

क़ुरआन नाज़िल होने के वक़्त तमाम मसीही जिन बड़े फ़िरक़ों में तक़्सीम थे सालूस के मुताल्लिक़ उनका अ़क़ीदा तीन अलग-अलग उसूलों पर टिका हुआ था, एक फ़िरक़ा कहता था कि मसीह ही ख़ुदा है और ख़ुदा ही मसीह की शक्ल में दुनिया में उतर आया है और दूसरा फ़िरक़ा कहता था कि मसीह इब्नुल्लाह (ख़ुदा का बेटा) है और तीसरा कहता था कि एक का भेद तीन में छिपा हुआ है– बाप, बेटा, मरयम और इस जमाअ़त में भी दो गिरोह थे और दूसरा गिरोह हज़रत मरयम की जगह 'रूहुल-क़ुद्स' को 'अक़्नूमे सालिस' कहता था, ग़रज़ वे हज़रत मसीह को 'सालिसे सलासा' (तीन का तीसरा) तस्लीम करते थे। इसलिए क़ुरआन की हक़ की सदा ने तीनों जमाअ़तों को अलग-अलग भी मुख़ातब किया है और एक साथ भी और दलीलों की रोशनी में मसीही दुनिया पर यह वाज़ेह किया है कि इस बारे में हक़ का रास्ता एक और सिर्फ़ एक है और वह यह कि मसीह मररयम के पेट से पैदा हुए हैं और इंसान और ख़ुदा के सच्चा पैग़म्बर और रसूल हैं। बाक़ी जो कुछ भी कहा जाता है, महज़ बातिल है, चाहे इसमें घटाया गया हो, जैसा कि यहूदियों 'का अ़क़ीदा है कि अल अयाज़ बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) वह शोबदे बाज़ और झूठे थे या बढ़ाया गया हो जैसा कि ईसाइयों का अ़क़ीदा है कि वह ख़ुदा है और ख़ुदा के बेटे हैं या तीन में तीसरे हैं।

क़ुरआन ने सिर्फ़ यही नहीं कहा कि ईसाइयों के रद्द करने वाले पहलू को ही इस सिलसिले में वाज़ेह किया हो, बल्कि इसके अलावा हज़रत मसीह की बुलन्द शान की असल हक़ीक़त क्या है और अल्लाह के नज़दीक उनको क्या क़ुर्बत हासिल है, इस पर भी नुमायां रोशनी डाली है, ताकि इस तरह यहूदियों के अ़क़ीदे का भी खंडन हो जाए और इफ़रात व तफ़रीत से जुदा राहे हक़ सामने नज़र आने लगे।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मसीह अल्लाह के क़रीबी और बरगज़ीदा रसूल हैं

तर्जुमा—*मसीह ने कहा बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूं और उसने मुझको नबी बनाया और मुझको मुबारक ठहराया, जहां भी मैं रहूं और उसने मुझको नमाज़ की और ज़क़ात की वसीयत फ़रमाई, जब तक भी ज़िंदा रहूं और उसने मुझे मेरी मां के लिए नेक और भला बनाया और मुझको सख़्तगीर और बदबख़्त नहीं बनाया, मुझ पर सलामती हो, जब मैं पैदा हुआ, जब मैं मर जाऊं और जब हश्र के लिए ज़िंदा उठाया जाऊं।* (18 : 30 : 32)

तर्जुमा—*'वह (मसीह) नहीं है, मगर ऐसा बन्दा, जिस पर हमने इनाम किया और हमने उसको मिसाल बनाया है बनी इसराईल के लिए और अगर हम चाहते तो कर देते हम तुम में से फ़रिश्ते ज़मीन में चलने-फिरने वाले और बेशक वह (मसीह) निशान है क़ियामत के लिए, पस इस बात पर तुम शक न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधा रास्ता है।* (43 : 58-61)

तर्जुमा—*'और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं जो मेरे सामने है तौरात और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की, जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद है।'* (61 : 6)

हज़रत मसीह न ख़ुदा हैं, न ख़ुदा के बेटे

तर्जुमा—*'बेशक उन लोगों ने कुफ़्र अख़्तियार किया जिन्होंने यह कहा, बेशक अल्लाह वही मसीह इब्ने मरयम है। कह दीजिए कि अगर अल्लाह यह इरादा कर ले कि मसीह बिन मरयम, मरयम और ज़मीनी कायनात पर जो कुछ भी है, सबको हलाक कर डाले, तो कौन आदमी है जो अल्लाह से (उसके ख़िलाफ़) किसी चीज़ के मालिक होने का दावा कर सके और अल्लाह के लिए ही बादशाही है आसमानों की और ज़मीन की, वह जो चाहता है, उसको पैदा कर सकता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।* (5 :17)

तर्जुमा—*बेशक उन लोगों ने कुफ़्र किया, जिन्होंने कहा, बेशक अल्लाह वही मसीह बिन मरयम है, हालांकि मसीह ने यह कहा, ऐ बनी इसराईल! अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, बेशक जो अल्लाह के साथ शरीक ठहराता है, पस यक़ीनन अल्लाह ने उस पर जन्नत*

Copyright OfflineDeeniApp

को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है। (5 : 72)

तर्जुमा—'और उन्होंने कहा, अल्लाह ने 'बेटा' बना लिया है, वह तो इन बातों से पाक है, बल्कि (उसके ख़िलाफ़) अल्लाह के लिए ही है जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है, हर चीज़ अल्लाह के लिए ताबेदार है।' (2 : 116)

तर्जुमा—'बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम की-सी है कि उसको मिट्टी से पैदा किया, फिर उसको कहा, हो जा, तो वह हो गया।' (3 : 59)

तर्जुमा—ऐ अहले किताब! अपने दीनी मस्अले में हद से न गुज़रो और अल्लाह के बारे में हक़ के अलावा कुछ न कहो, बेशक मसीह बिन मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जिसको उसने मरयम पर डाला (यानी बग़ैर बाप के उसके हुक्म से मरयम के पेट में वजूद मिला) और उसकी रूह हैं, पस अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीनों (अक़ानीम) ने कहा, इससे बाज़ आ जाओ, तुम्हारे लिए बेहतर होगा। बेशक अल्लाह एक है पाक है इससे कि उसका बेटा हो। उसी के लिए है (बिला ग़ैर की शिर्कत के) जो कुछ भी है आसमानों और ज़मीन में और काफ़ी है 'अल्लाह वकील' हो कर। (4 :171)

तर्जुमा—'वह (ख़ुदा) मूजिद (नए सिरे से बनाने वाला) है आसमानों और ज़मीन का, उसके लिए बेटा कैसे हो सकता है और न उसके बीवी है और उसने कायनात की हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ को जानने वाला है'। (6 : 102)

तर्जुमा—'मसीह बिन मरयम नहीं हैं मगर ख़ुदा के रसूल, बेशक उनसे पहले रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी वालिदा सिद्दीक़ा हैं। ये दोनों खाना खाते थे। (यानी दूसरे इंसानों की तरह खाने-पीने वग़ैरह मामलों में भी वे मुहताज थ।)' (5 : 75)

तर्जुमा—'हरगिज़ मसीह इससे नागवारी नहीं अख़्तियार करेगा, कि वह अल्लाह का बन्दा कहलाए और न क़रीबी फ़रिश्ते, यहां तक कि रूहुल क़ुद्स

Maktabe Ash...f

Copyright OfflineDeeniApp

(जिब्रील) नाक भौं चढ़ाएंगे और जो इबादत से नागवारी ज़ाहिर करे और घमंड करे, तो क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला उन सबको अपनी तरफ़ इकट्ठा करेगा यानी जज़ा व सज़ा के दिन सब हक़ीक़ते हाल खुल जाएगी।' (4 : 172)

तर्जुमा—*'और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर ख़ुदा का बेटा है और ईसाई कहते हैं कि मसीह ख़ुदा का बेटा है। ये उनके मुंह की बातें हैं, रेस करने लगे अगले काफ़िरों की बात की, अल्लाह उनको हलाक करे, कहां से फिरे जाते है।'* (9 : 30)

तर्जुमा—*(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) कह दीजिए, अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ हस्ती है, न किसी का बाप है और न किसी का बेटा और कायनात में कोई उस जैसा नहीं है।* (112 : 1-3)

क़ुरआन ने इस सिलसिले में अपनी सच्चाई और अ़क़ीदे और अ़मल की इस्लाह का जो दलीलों के साथ वाज़ेह एलान किया, उसके पढ़ने के साथ-साथ यह बात भी तवज्जोह के क़ाबिल है कि मौजूदा किताब मुक़द्दस इंजील में मिलावट पैदा करने और बिगाड़ने के बावजूद जिस शक्ल व सूरत में आज मौजूद है, वह किसी एक जगह पर भी सालूस (Trinity) के इस अ़क़ीदे का पता नहीं देती, इसलिए तसलीस के अ़क़ीदे में ईसाइयों के लिए मौजूदा किताबे मुक़द्दस से भी कोई हुज्जत व दलील नहीं मिलती और इसलिए बग़ैर किसी शक व शुबहे के यह कहना हक़ है कि तसलीस का यह अ़क़ीदा बुतपरस्ती वाले अ़क़ीदों की मिलावट का नतीजा है।

कफ़्फ़ारा

मौजूदा मसीहियत (ईसाई धर्म) का दूसरा अ़क़ीदा, जिसने मसीही दीन की हक़ीक़त को बर्बाद कर डाला, 'कफ़्फ़ारे' का अ़क़ीदा है। इसकी बुनियाद इस कल्पना पर रखी गई है कि तमाम कायनात (जिसमें नेक लोग और नबी और रसूल सभी शामिल हैं) शुरू ही से गुनाहगार है। आख़िर अल्लाह की रहमत को जोश आया और उसकी मशीयत ने इरादा किया कि बेटे को दुनिया की कायनात में भेजे और वह सूली पर चढ़ा हुआ होकर पहले और आख़िरी तमाम कायनात के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाए और इस तरह दुनिया को

Copyright OfflineDeeniApp

नजात और मुक्ति हासिल हो सके लेकिन इस अ़क़ीदे को ज़ोरदार बनाने के लिए कुछ ज़रूरी हिस्सों की ज़रूरत थी, जिनके बग़ैर यह इमारत नहीं खड़ी की जा सकती थी, इसलिए रसूल के ज़माने में सबसे पहले मसीही दीन ने यहूदी दीन के इस अ़क़ीदे को मान लिया कि उनको फांसी के तख़्ते पर भी चढ़ाया गया और मार भी डाला गया और इसको मान लेने के बाद दूसरा क़दम यह उठाया कि 'अल्लाह की सिफ़त रखने के बावजूद' मसीह का फांसी पाना और क़त्ल होना अपने लिए नहीं, बल्कि कायनात की निजात के लिए था। चुनांचे जब उस पर यह हादसा गुज़र गया तो उसने फिर 'अल्लाह होने' की चादर ओढ़ ली और आलमे लाहूत में बाप और बेटे के दर्मियान दोबारा लाहूती रिश्ता क़ायम हो गया।

पस जब मज़हब में एक अल्लाह के साथ सही अ़क़ीदा और नेक अ़मली गुम हो जाए और निजात का दारोमदार अ़मल व किरदार के बजाए 'कफ़्फ़ारे' पर क़ायम हो जाए, उसका नतीजा मालूम?

क़ुरआन ने इसी तरह जगह-जगह यह वाज़ेह किया है कि नजात के लिए अ़क़ीदे का सही होना यानी सही ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है और जो आदमी भी इस 'सीधे रास्ते' को तर्क करके 'ख़ुशगुमानी' और वहम व गुमान को आदर्श बनाएगा और नेक अ़मली और सही ख़ुदा परस्ती पर न चलेगा, बिला शुबहा गुमराह है और सीधे रास्ते से पूरी तरह महरूम।

तर्जुमा—*जो लोग अपने को मोमिन कहते हैं और जो यहूदी हैं और जो ईसाई हैं और जो साबी हैं, उनमें से जो भी अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आया और उसने नेक अ़मल किए, तो यही वे लोग हैं, जिनका बदला उनके परवरदिगार के पास है, न उन पर डर छायेगा और न वे ग़मगीन होंगे।* (2 : 62)

यानी क़ुरआन की धर्मों और मिल्लतों में सुधार लाने की दावत का मक़्सद यह नहीं है कि यहूदी, ईसाई और साबी गिरोहों की तरह एक नया गिरोह 'मोमिन' के नाम से इस तरह इज़ाफ़ा कर दे कि गोया वह भी एक क़ौमी, नस्ली या मुल्की गिरोहबन्दी है, चाहे उसकी ख़ुदापरस्ती की ज़िंदगी

Copyright OfflineDeeniApp

और अ़मल की ज़िंदगी कितनी ही ग़लत और बर्बाद हो या सिरे से ग़ायब हो, मगर उस गिरोहबन्दी का आदमी होने की वजह से ज़रूर कामियाब और ख़ुदा की जन्नत व रिज़ा का हक़दार है, क़ुरआन का मक़्सद हरगिज़ यह नहीं है, बल्कि वह यह ऐलान करने आया है कि उसकी सच्ची दावत से पहले कोई आदमी किसी भी गिरोह और मज़हबी जमाअ़त से ताल्लुक़ रखता हो, अगर उसने (क़ुरआन की सच्ची तालीम) के मुताबिक़ ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली को अख़्तियार कर लिया है, तो बेशक वह नजात पाया हुआ और कामियाब है, वरना तो वह ग़ैर मुसलमान घर में पैदा हुआ, पला और बढ़ा और उसी सोसाइटी में ज़िंदगी गुज़ार कर मर गया, मगर क़ुरआन की सच्ची दावत के मुताबिक़ ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली दोनों से महरूम रहा या मुख़ालिफ़ (विरोधी), तो उसको न कामियाबी है, न फ़लाह, बाक़ी रहा मसीही धर्म के कफ़्फ़ारे का ख़ास मस्अला, तो क़ुरआन ने उसे ग़लत क़रार देने के लिए यह रास्ता अपनाया कि जिन बुनियादों पर उसको क़ायम किया गया था, उसकी जड़ ही काट दी।

तवज्जोह करने की बात

यह बात कभी नहीं भूली जानी चाहिए कि पिछले धर्मों और क़ौमों के बिगड़ने और घटने-बढ़ने से घट-बढ़ करने वालों को बहुत ज़्यादा मदद मिली कि बुनियादी अ़क़ीदों में खुले लफ़्ज़ों के इस्तेमाल के बजाए वक़्त के ताबीर करने वालों, तफ़्सीर लिखने वालों और तर्जुमानी करने वालों ने इशारों, इस्तिआ़रों और तश्बीहों से बहुत ज़्यादा काम लिया। इन ताबीरों का नतीजा यह निकला कि जब हक़ मज़हबों का मूर्ति पूजकों और फ़लसफ़ियों से वास्ता पड़ा और उन्होंने किसी न किसी तरह इस दीने हक़ को क़ुबूल कर लिया, तो अपने फ़लसफ़ियाना और मुश्रिकाना अफ़्कार व ख़्यालात के लिए उन्हीं इस्तिआ़रों और तश्बीहों को सहारा बनाया और धीरे-धीरे मिल्लते हक़ीक़ी की सूरत बदल कर उसको माजूने मुरक्कब बना डाला। इसी हक़ीक़त को देखते हुए क़ुरआन ने वजूद बारी, तौहीद, रिसालत, इलहामी किताबें, अल्लाह के फ़रिश्ते, ग़रज़ बुनियादी अ़क़ीदों में दोहरे लफ़्ज़, पेचदार तश्बीह और तौहीद

Copyright OfflineDeeniApp

में ख़लल डालने वाले इशारों-कनायों के बजाए खुले-साफ़ लफ़्जों को अपनाया है, ताकि किसी ख़ुदा के न मानने वाले और मुश्रिक फ़लसफ़ी को ख़ालिस तौहीद में शिर्क और अटकलों की नई-नई बातों का मौक़ा हाथ न आने पाए और अगर कोई आदमी इसके बाद भी बेजा हिम्मत करे तो ख़ुद क़ुरआन की खुली आयतें ही उनके इलहाद के टुकड़े-टुकड़े कर दें।

नोट : मुरत्तिब की तरफ़ से हज़रत मरयम, हज़रत ईसा की पैदाइश, ज़िंदगी और मोजज़े वग़ैरह से मुताल्लिक़ कई मसले बहस में आ गए हैं। हज़रत मौलाना स्योहारवी ने तमाम मसलों पर खुलकर बातें की हैं, लेकिन इन बहसों का ख़ुलासा मुम्किन नहीं है, इसलिए मजबूरी में उन्हें छोड़ा जा रहा है, जो पाठक ख़्याल महसूस करें उनसे दरख़्वास्त है कि वे असल किताब से रुजू फ़रमावें।

हज़रत मुहम्मद ﷺ

हज़रत मुहम्मद और क़ुरआन मजीद

क़ुरआन कलामे इलाही है और अख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतरा है। क़ुरआन इल्म व यक़ीन की रोशनी है और ज़ाते अक़दस उनका अ़मली नमूना, आदर्श और नक़्शा हैं—

'ल-क़द का-न लकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उस्तुन ह-स-ना'

क़ुरआन रुश्द व हिदायत और मुहम्मद ﷺ राशिद व हादी, क़ुरआन हक़ व सदाक़त के लिए दावत व पैग़ाम है और नबी अकरम उसकी दावत देने वाले और पैग़म्बर हैं, इसलिए क़ुरआन का हर एक जुम्ला और उसकी एक-एक आयत किसी-न-किसी हैसियत में ज़ाते क़ुदसी सिफ़ात (अल्लाह) से ताल्लुक़ रखती है, तो अब किस तरह यह कहा जाए कि क़ुरआन में इतनी जगह उसकी मुक़द्दस हस्ती का ज़िक्र है।

एक बार हज़रत आ़इशा रज़ि० से कुछ सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़िंदगी के कुछ हालात हमें

Copyright OfflineDeeniApp

सुनाएं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने ताज्जुब के साथ मालूम किया, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते जो मुझसे नबी ﷺ के अख़्लाक़ के बारे में सवाल करते हो? बेशक उनका अख़्लाक़ तो क़ुरआन ही था। आपकी तमाम अख़्लाक़ी ज़िंदगी क़ुरआन के सांचे में ढली हुई थी। क़ुरआन जो कुछ कहता है, मुहम्मद ﷺ ने उसी को कर दिखाया। पस क़ुरआन के किसी हिस्से को सामने लाना गोया हयाते तैयबा को सामने लाना है।

अलबत्ता क़ुरआन ने जिन आयतों में आप के मुबारक नाम या बुलन्द औसाफ़ का ख़ास तौर पर ज़िक्र किया, 'ऐ नबी' या 'ऐ रसूल' कह कर मुख़ातब किया, उसकी तफ़्सील नीचे के नक़्शे से ज़ाहिर होती है। इस नक़्शे में जो जम्हूर के नज़दीक मानी हुई बातें हैं, (नबी और रसूल के अलावा जिन नामों और सिफ़तों की तफ़्सील चाहिए थीं) वे यह हैं—

1. मुहम्मद, 2. अहमद, 3. अ़ब्दुल्लाह, 4. शाहिद, 5. बशीर, 6. नज़ीर, 7. मुबश्शिर, 8. मुज़्ज़क्किर, 9. अ़ज़ीज़, 10. रऊफ़, 11. रहीम, 12. अमीन, 13. मुज़्ज़म्मिल, 14. मुद्दस्सिर, 15. मुन्ज़िर, 16. हादी, 17. यासीन, 18. रहमत, 19. नेमत, 20. ता-हा, 21. नूर, 22. हक़, 23. सिराजे मुनीर, 24. शहीद, 25. दाई इलल्लाहि (अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाला), 26. ख़ातमुन्नबीयीन, 27. नबी, 28. रसूल, 29. अ़ब्दुहू

क़ुरआन और सहीह हदीसों में नबी अकरम ﷺ के नामों और सिफ़तों का ज़िक्र है, इस्लामी उलेमा ने उस पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। मशहूर मुहद्दिस अबूबक्र बिन अरबी ने शरहे तिर्मिज़ी में उनकी गिनती चौंसठ बताई है, कुछ ने निन्नानवे और कुछ इल्म वालों ने उसको एक हज़ार तक पहुंचाया है।

(फ़त्हुलबारी)

बुख़ारी शरीफ़ की एक मरफ़ूअ् हदीस में है कि आपने इर्शाद फ़रमाया, मेरे पांच नाम हैं—

1. मुहम्मद हूं, 2. अहमद हूं, 3. माही यानी कुफ़्र व शिर्क को मिटाने वाला हूं, 4. हाशिर हूं, इसलिए कि क़ियामत के दिन तमाम कायनात से पहले अल्लाह के दरबार में हाज़िर हूंगा, और 5. आक़िब हूं (इमाम ज़ोहरी के क़ौल

Copyright OfflineDeeniApp

के मुताबिक़ आख़िरा पग़म्बर हूं।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी रह० के मुताबिक़ इस्लाम के उलेमा का जिन पर इत्तिफ़ाक़ है यानी क़ुरआन में आपके जिन नामों और सिफ़तों का ज़िक्र किया गया है, वे यह हैं—

1. अश-शाहिद, 2. अल-बशीर, 3. अन-नज़ीर, 4. अल-मुबीन, 5. अद्दाई इलल्लाहि, 6. अस्सिराजुल मुनीर, 7. अल मुज़्ज़क्किर, 8. अर-रहमत, 9. अन-नेमत, 10. अल-हादी, 11. अश-शहीद, 12. अल-अमीन, 13. अल-मुज़्ज़म्मिल, 14. अल मुद्दस्सिर और हदीसों में ज़िक्र किए गए आपके नामों और सिफ़तों में नीचे लिखी सिफ़तें ज़्यादा मशहूर हैं—

1. अल-मुतवक्किल, 2.अल-मुख़्तार, 3. अल-मुस्तफ़ा, 4, अश-शफ़ीउल मुशफ्फ़िअ 5. अस्सादिक़ुल मस्दूक़।

बहरहाल मुहम्मद और अहमद दो अस्मा (नाम) हैं और बाक़ी अस्मा-सिफ़ात व अलक़ाब और क़ुरआन में आपके पाक नाम से जुड़े हुए एक सूरः का नाम सूरः मुहम्मद है, जिसके शुरू ही में आपके इस्मे गिरामी का ज़िक्र है—

व आमिनू बिमा नुज़्ज़िल-ल अला मुहम्मदिं-वहुवल हक्रक़ु मिर्रब्बिहिम, और सिर्फ़ एक जगह सूरः सफ़्फ़ में अहमद नक़ल किया गया है। यानी हज़रत मसीह ﷺ की इस बशारत के तज़्करे में यह नाम आया है जो आपके आने से मुताल्लिक़ उन्होंने बनी इसराईल को सुनाई थी—

'व मुबश्शिरम बिरसूलिंय्याती मिम-बादी इस्मुहू अहमद'

यह हक़ीक़त भुलाने लायक़ नहीं है कि आपके नाम और सिफ़तें सिर्फ़ रस्मी नहीं हैं, कि मां-बाप ने जो चाहा, नाम रख दिया, दोस्तों और साथियों ने जिस सिफ़त व लक़ब से चाहा, पुकार लिया, बाल्कि उन नामों और सिफ़तों का आपकी ज़िंदगी और आपके अख़्लाक़ व आ़माल के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ है, जैसा कि अभी माही, हाशिर और आ़क़िब के बारे में ख़ुद तर्जुमाने वह्य की ज़ुबान से सुन चुके हो या जैसे मुहम्मद उस हस्ती को कहते हैं जिसके तज़्किरे हमेशा ख़ूबी और नेकी के साथ होते हों, ये पिछले नबियों की बशारतें और मुस्तक़्बल में ज़िंदगी के तज़्किरों की तरफ़ इशारा है और अहमद

Copyright OfflineDeeniApp

उसे कहते हैं जो सबसे ज़्यादा अल्लाह की हम्द (गुण-गान) करता हो। यह मुबारक ज़ात की कामिल बन्दगी और कामिल इंसान होने को ज़ाहिर करता हैं। बेशक आप ख़ुदापरस्त इंसानों के लिए ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले, और फ़िल्ला पैदा करने वाले फ़सादियों, काफ़िरों और मुश्रिकों के लिए मुंज़िर व नज़ीर (सज़ा से डराने वाले) हैं। क़ियामत के दिन, सच्चे और झूठे दोनों पर शाहिद हैं, हक़ के लिए खुली आंख वाले और हक़ के लिए कान खुले रखने वालों के लिए याददेहानी कराने वाले हैं। राहे हक़ से हटे हुए के लिए हादी (हिदायत का रास्ता बताने वाले) और ख़ुदा से भागे हुओं के लिए पुकारने वाले हैं। उनका वजूद रहमत है कायनाते आ़लम के लिए और उनकी हस्ती कायनात के निज़ाम के लिए नग़्मा है। जेह्ल व शिर्क के लिए नूर हैं और अल्लाह के पैग़ाम के लिए नबी व रसूल, मुसीबतों और परेशानियों में अ़ज़ीज़ हैं और इंसानों की ज़िंदगी के हर हिस्से के लिए रऊफ़ व रहीम, उनकी आवाज़ हक़ की आवाज़ है और उनकी ज़ात सच्ची और अमानतदार, क़ुरआन ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम है, इसलिए वह आख़िरी नबी हैं, उनका भेजा जाना पूरी दुनिया के लिए है, इसलिए ताहा व यासीन हैं और नुबूवत के आसमान के चमकते सूरज हैं और रिसालत की कायनात के बशीर (बशारत देने वाले) व नज़ीर (डराने वाले), दीन व मिल्लत की सुलतानी के बावजूद गदाए कमलीपोश हैं, इसलिए मुज़्ज़म्मिल हैं और मुद्दस्सिर, फिर कमाल यह कहना कि 'मैं तो इंसान हूं, अल्लाहुम-म सल्ले व सल्लिम व बारिक अ़लैहि, ख़ुदा पर तवक्कुल उसकी बहुत बड़ी सिफ़त और वह ख़ुदा का बरगज़ीदा और मुख़्तार है, अल्लाह के दरबार में अबरार व मुक़र्रिबों से भी ज़्यादा मुस्तफ़ा, मुज्तबा, नेकी करने वालों और सालेहीन के लिए अश-शफ़ीअ् व मुशफ़्फ़अ़ और ज़िंदगी के हर शोबे में अस्सादिक़ व मस्दूक़ है। सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

Copyright OfflineDeeniApp

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बशारतें (ख़ुशख़बरियां)

मौलाना ख़्वाजा अलताफ़ हुसैन हालीने 'मुसद्दस मद्द व जज़्रे इस्लाम' में एक जामे (काव्य) बन्द में तमाम बशारतों की तरफ़ जवज्जोह दिलाई है—

यकायक हुई ग़ैरते हक़ को हरकत
बढ़ा जानिबे बूक़बीस अबरे रहमत
अदा ख़ाके बत्हा ने की वह वदीअ़त
चले आते थे जिसकी देने शहादत,
हुई पहलू-ए-आमना से हुवैदा
दुआ़-ए-ख़लील और नवेदे मसीहा।

'चले आते थे जिसकी देने 'शहादत' की मुम्मल तफ़्सील के लिए हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने तौरात व इंजील से लम्बे टुकड़े और क़ुरआन पाक से उसका खुले तौर पर मिलना पेश किया है, जिसका ख़ुलासा करना मुश्किल है, इसलिए इस बन्द के सिर्फ़ आख़िरी शेर की तफ़्सील पेश की जाती है।' (मुरत्तिब)

एक बार ख़ुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्हीं बशारतों की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया—

(यानी) मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ़ हूं और ईसा मसीह की बशारत हूं (यानी) ख़लील की दुआ़ और मसीह का नवेद।'

क़ुरआन मजीद ने इब्राहीम की दुआ़ का ज़िक्र इस तरह किया है—

तर्जुमा—*'ऐ हमारे परवरदिगार! इन (अरबों) ही में एक रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतें पढ़े और इनको किताब व हिक्मत सिखाए और इनको (हर क़िस्म की बुराइयों से) पाक करे। बेशक तू ग़ालिब और हिक्मत वाला है।'* (2 : 129)

और मसीह की बशारत का ज़िक्र सूरः सफ़्फ़ में इस तरह नक़्ल किया गया है—

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा—*'और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, 'ऐ बनी इसराईल! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं। तस्दीक़ करने वाला हूं तौरेत की, जो मेरे सामने मौजूद है और बशारत देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा और उसका नाम अहमद (फ़ारक़लीत) होगा, पस जब उनके पास वह (ख़ुदा का पैग़म्बर) दलीलें लेकर आया, तो वे कहने लगे, यह तो खुला जादू है।'* (61 : 6)

इन दुआ़ओं के नतीजे में सआ़दत की जो सुबह आई, उसके लिए मुरत्तिब (संग्रहकर्त्ता) की ओर से ज़ौक़ वालों के लिए सीरतुन्नबी भाग-1 से एक ईमान बढ़ाने वाले हिस्से को बढ़ाकर पेश किया जाता है।

ज़ुहूरे क़ुद्सी

दुनिया के चमन में रूह परवर बहारें आ चुकी हैं। चर्ख़े नादराकारने कभी-कभी बज़्मे आलम को इस सर व सामान से सजाया कि निगाहें ख़ीरा होकर रह गईं।

लेकिन आज की तारीख़ वह तारीख़ है, जिसके इन्तिज़ार में पीरे कुहन साल दह्र ने करोड़ों वर्ष लगा दिए। सय्यारगाने फ़लक इसी दिन के शौक़ में अज़ल से चश्म बराह थे, चर्ख़े कुहन मुद्दत हाए दराज़ से उसी सुबहे जाँ-नवाज़ के लिए लैल व नहार की करवटें बदल रहा था। कारकुनाने क़ज़ा व क़द्र की बज़्म आराइयां, अ़नासिर की जिद्दत तराज़ियां, माह व खुर्शीद की फ़रोग अंगेज़ियां, अब्र व वाद की तरदस्तियां, आलमे क़ुदसी के अनफ़ासे पाक, तौहीदे इब्राहीम, जमाले यूसुफ़ मोजज़ तराज़ी मूसा, जाँनवाज़ी मसीह, सब इसी लिए था कि यह क़ीमती मताए शंहशाहे क़ौनैन (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के दरबार में काम आएंगे।

आज की सुबह वही सुबहे जांनवाज़, वही साअ़ते हुमायूं, वही दौरे फ़र्रुख़ फ़ाल है।

अरबाबे सियर अपने मह्दूद पैराए बयान में लिखते हैं कि, 'आज की रात ऐवाने किसरा के चौदह कंगूरे गिर गए, आतशकदा फ़ारस बुझ गया, दरिया-ए-सादा ख़ुश्क हो गया,' लेकिन सच यह है कि ऐवाने किसरा नहीं,

Copyright OfflineDeeniApp

बल्कि शाने अ़जम, शौकते रूम, औजे चीन के क़स्र हाए फ़लक बोस गिर पड़े, आतशे फ़ारस नहीं, बल्कि जहीमे शर, आतशक्दा-ए कुफ़्र, आज़र कदा-ए-गुमराही सर्द होकर रह गए, सनम ख़ानों में ख़ाक उड़ने लगी, बुतकदे ख़ाक में मिल गए, मजूसियत का शीराज़ा बिखर गया, नसरानियत के औराक़े ख़ज़ांदीदा एक-एक करके झड़ गए।

तौहीद का ग़लग़ला उठा, चमनिस्ताने सआ़दत में बहार आ गई, आफ़ताबे हिदायत की शुआ़एं हर-हर तरफ़ फैल गईं। अख़्लाके इंसानी का आईना परतवे कुदस से चमक उठा—

यानी अ़ब्दुल्लाह का यतीम, आमना का जिगर गोशा, शाहे हरम, हुक्मराने अरब, फ़रमांरवाए आलम, शाहंशाहे कौनैन—

शम्सा न मस्नदे हफ़्त अख़्तरां
ख़ात्मे रुसुल ख़ातमे पैग़म्बरां,
अहमदे मुरसल कि खिरद ख़ाक ओस्त
हर दो जहां बस्ता-ए-फ़तराक ओस्त
उम्मी व गोया बज़ुबाने फ़सीह
अज़ अलिफ़ आदम व मीमे मसीह,
रस्मे तुरंज अस्त कि दर रोज़गार
पेश व हद मेवा पस आरद बहार

आ़लमे क़ुद्स से आलमे इम्कान में तशरीफ़ फ़रमा-ए-इ़ज़्ज़त व इज्लाल हुआ।

मुबारक सुबह

दीनों और मिल्लतों की तारीख़ गवाह है कि हज़रत ईसा ﷺ के ज़ाहिर होने पर लगभग छह सदियां बीत चुकी हैं और दुनिया ख़ुदा के पैग़म्बरों की मारफ़त हासिल की हुई हक़ की सच्चाई को भुला चुकी है, तमाम इंसानी दुनिया ख़ुदापरस्ती के बजाए मज़ाहिर परस्ती में पड़ी हुई है और हर मुल्क में इंसान से लेकर पेड़-पौधों तक की परस्तिश फ़ख्र करने की चीज़ बनी हुई है। कोई इंसान को अवतार (ख़ुदा) कह रहा है, तो कोई ख़ुदा का बेटा। एक

Copyright OfflineDeeniApp

माद्दापरस्त है तो दूसरा ख़ुद अपनी आत्मा को ही ख़ुदा समझ रहा है। सूरज की पूजा है, चांद और तारों की पूजा है, जानवरों, पेड़ों और पत्थरों की इबादत है, आग, पानी, हवा, मिट्टी के सामने खड़े होकर मांगा जा रहा है। ग़रज़ कायनात की हर चीज़ पूजा के लायक़ है और नहीं है तो ज़ाते वाहिद पूजा के क़ाबिल नहीं है और न उसके एक होने का ख़्याल ही ख़ालिस है और न उसके हर चीज़ से बेनियाज़ होने का। उसको अगर माना जाना भी है तो दूसरों की इबादत और परस्तिश के ज़रिए। वह अगर पैदा करने वाला है तो दूसरों के वास्ते और ज़रूरत के साथ माद्दा, रूह और तर्कीब, सब ही बातों का मुहताज है। वह अगर तमाम चीज़ों का मालिक है भी तो इंसान, जानवर, पेड़, पत्थर के बलबूते पर, ग़रज़ सारी दुनिया में असल कारफ़रमाई मज़ाहिर (ज़ाहिरी चीज़ों) की थी और 'हक़ की ज़ात' सिर्फ़ नाम के लिए। हक़ीक़त से आंखें चुराई जा रही थीं, मगर मजाज़ के साथ। इश्क़ का जौक़ ज़ाते हक़ से बाद में था, मगर मज़ाहिर से क़ुरबत हक़ की सआ़दत का सरमाए से बेगानापन था, मगर मख्लूक़ की इबादत का आम चलन था और हर तरफ़, 'हम उनको नहीं पूजते, मगर इसलिए ताकि वे ख़ुदा की तरफ़ हमारी क़ुर्बत का ज़रिया बन जाएं' (38 : 3) का मज़ाहरा नज़र आता था।

यही वह तारीक दौर था, जिसमें 'अल्लाह की सुन्नत' यानी ख़ुदा की हिदायत व ज़लालत के क़ानून ने माज़ी की तारीख़ को फिर दोहराया और हक़ की ग़ैरत ने फ़ितरत के रद्दे अ़मल (Reaction) के क़ानून को हरकत दी, यानी हिदायत का सूरज सआ़दत वाले बुर्ज से निकला और चारों तरफ़ छाई हुई शिर्क व जिहालत और रस्म व रिवाज की अंधेरियों को फ़ना करके दुनिया को इल्म व यक़ीन की रोशनी से जगमगा दिया।

रबीउलअव्वल, मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ई० सुबह, वह सुबहे सआ़दत थी जब तहज़ीब व तमद्दुन से महरूम बिन खेती की सरज़मीन मक्का के एक मुअ़ज्ज़ज़ क़बीले ने क़ुरैश (बनी हाशिम) में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के यहां यानी आमना बिन्त वहब के यहां आफ़ताबे रिसालत मुहम्मद (ﷺ) पैदा हुए।

ए अल्लाह! वह सुबह कितनी सआ़दतों वाली थी जिसने कायनात को

Copyright OfflineDeeniApp

रुश्द व हिदायत क निकलन का जानदार ख़बर सुनाई और वह घड़ी कितनी मुबारक थी जो दुनिया के लिए ख़ुशख़बरी का पैग़ाम लाई। दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा ज़ुबाने हाल से वे नग़्मे गा रहा था कि वक़्त आ पहुंचा कि अब दुनिया से बदबख़्ती दूर हो और ख़ुशबख़्ती से दुनिया भर जाए, शिर्क व कुफ़्र का परदा चाक हो और हिदायत का सूरज रोशन हो और चमके, मज़ाहिर परस्ती बातिल ठहरे और एक ख़ुदा की तौहीद ज़िंदगी का मक़्सद क़रार पाए।

दुनिया तो क्या, मुल्क, क़बीला और ख़ानदान को भी यह इल्म न था कि दुनिया के तमाम धर्म, जिस सूरज के निकलने के इंतिजार में हैं, वे इस ग़ैर मुहज़्ज़ब सरज़मीन और अ़ब्दुल मुत्तलिब के घराने से निकलेगा कि उसकी पैदाइश को ख़ास अहमियत देते और विलादत की तारीख़ को अपने सीने में महफ़ूज़ रखते, मगर जिस पैदा करने वाले ने उसको मुक़द्दस हस्ती बनाने का फ़ैसला किया, उसी ने इसे एक मोजज़ा और तारीख़ी निशान भी ज़ाहिर कर दिया और वह हाथी वालों का वाक़िया था।

एतबार करने लायक़ और मुस्तनद रिवायतें गवाह हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत इस वाक़िए के कुछ महीने बाद हुई।

इस वाक़िए में जो ख़ास बातें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए यह अरब के लिए आमतौर से और हिजाज़ियों के लिए ख़ासतौर से बड़ा अजीब और हैरत में डालने वाला वाक़िया था और इसलिए वे कभी उसको भुला नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उनका नाम ही आ़मुलफ़ील (हाथियों वाला साल) रख दिया। मगर वे यह न समझ सके थे कि असल में यह वाक़िया एक (निशान) है उस जलीलुल क़द्र हस्ती के ज़ाहिर होने का जो एक दिन तमाम दुनिया को तौहीद के मर्कज़ और इब्राहीमी क़िब्ले पर जमा कर देगी और इसको ग़ैरल्लाह (बुतों) की गन्दगियों से पाक करके तौहीद के नग़्मों के लिए ख़ास कराएगी, क्योंकि यही वह पहली जगह है जो सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया गया। यह मन्दिर नहीं था कि मूर्ति की पूजा की जाए, यह गिरजा और कलीसा भी न था कि यसूअ् मसीह और कुंवारी मरयम की मूर्तियों के सामने सर झुकाया जाए न यह आग का भंडारा था कि आग के नूर का मज़्हर क़रार देकर उसकी पूजा की जाए और न यहूदियों का वज़ीफ़ा था कि हज़रत उज़ैर

Copyright OfflineDeeniApp

रुश्द व हिदायत के निकलने की जानदार ख़बर सुनाई और वह घड़ी कितनी मुबारक थी जो दुनिया के लिए ख़ुशख़बरी का पैग़ाम लाई। दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा ज़ुबाने हाल से वे नग़्मे गा रहा था कि वक़्त आ पहुंचा कि अब दुनिया से बदबख़्ती दूर हो और ख़ुशबख़्ती से दुनिया भर जाए, शिर्क व कुफ़्र का परदा चाक हो और हिदायत का सूरज रोशन हो और चमके, मज़ाहिर परस्ती बातिल ठहरे और एक ख़ुदा की तौहीद ज़िंदगी का मक़्सद क़रार पाए।

दुनिया तो क्या, मुल्क, क़बीला और ख़ानदान को भी यह इल्म न था कि दुनिया के तमाम धर्म, जिस सूरज के निकलने के इंतिजार में हैं, वे इस ग़ैर मुहज़्ज़ब सरज़मीन और अ़ब्दुल मुत्तलिब के घराने से निकलेगा कि उसकी पैदाइश को ख़ास अहमियत देते और विलादत की तारीख़ को अपने सीने में महफ़ूज़ रखते, मगर जिस पैदा करने वाले ने उसको मुक़द्दस हस्ती बनाने का फ़ैसला किया, उसी ने इसे एक मोजज़ा और तारीख़ी निशान भी ज़ाहिर कर दिया और वह हाथी वालों का वाक़िया था।

एतबार करने लायक़ और मुस्तनद रिवायतें गवाह हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत इस वाक़िए के कुछ महीने बाद हुई।

इस वाक़िए में जो ख़ास बातें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए यह अरब के लिए आमतौर से और हिजाज़ियों के लिए ख़ासतौर से बड़ा अजीब और हैरत में डालने वाला वाक़िया था और इसलिए वे कभी उसको भुला नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उनका नाम ही आ़मुलफ़ील (हाथियों वाला साल) रख दिया। मगर वे यह न समझ सके थे कि असल में यह वाक़िया एक (निशान) है उस जलीलुल क़द्र हस्ती के ज़ाहिर होने का जो एक दिन तमाम दुनिया को तौहीद के मर्कज़ और इब्राहीमी क़िब्ले पर जमा कर देगी और इसको ग़ैरल्लाह (बुतों) की गन्दगियों से पाक करके तौहीद के नग़्मों के लिए ख़ास कराएगी, क्योंकि यही वह पहली जगह है जो सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया गया। यह मन्दिर नहीं था कि मूर्ति की पूजा की जाए, यह गिरजा और कलीसा भी न था कि यसूअ् मसीह और कुंवारी मरयम की मूर्तियों के सामने सर झुकाया जाए न यह आग का भंडारा था कि आग के नूर का मज़्हर क़रार देकर उसकी पूजा की जाए और न यहूदियों का वज़ीफ़ा था कि हज़रत उज़ैर

Copyright OfflineDeeniApp

[redacted] को ख़ुदा का बेटा बनाकर उसकी पाकी के नग़्मे गाए जाएं, बल्कि यह तो ख़ुदा और सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत के लिए बनाया गया था।

तर्जुमा– *'बेशक सबसे पहला घर जो बरक़रार हुआ लोगों के वास्ते यही है जो मक्का में है।'* (3 : 96)

ग़रज़ रसूल बनाए जाने के बाद जब क़ुदरत ने मोजज़ाना शान से 'आमुलफ़ील' (हाथियों के साल) में आपकी विलादत का छिपा राज़ खोल दिया तब दुनिया ने यह समझा कि अबरहा और उसकी फ़ौज से अल्लाह के काबे की यह हिफ़ाज़त इसलिए थी कि वह वक़्त क़रीब आ पहुंचा, जब दोबारा यह मुक़द्दस जगह एक अल्लाह की इबादत और ख़ालिस तौहीद का मर्कज़ बनने का शरफ़ हासिल करनेवाला है। पस जो ताक़त भी इस बड़े मक़्सद से टकराएगी, ख़ुद ही टुकड़े-टुकड़े होकर रह जाएगी।

अबरहा ईसाई था और अरब के लोग (क़ुरैश) मुश्रिक, फिर कौन कह सकता है कि अबरहा और उसकी फ़ौज की बर्बादी क़ुरैश की मदद और हिमायत के लिए थी। नहीं, बल्कि इसलिए सब कुछ हुआ कि अल्लाह की मशीयत के ख़िलाफ़ अबरहा की ख़्वाहिश थी कि यमन (सनआ़) में जो ख़ूबसूरत गिरजा (अल-क़लीस) बाप-बेटा-रूहुल क़ुद्स (तसलीस-Trinity) के फ़रोग़ देने को बनाया गया था तौहीद के मर्कज़ 'काबतुल्लाह' की जगह वह सबकी जवज्जोह का मर्कज़ बने और इस मक़्सद के लिए उसने काबा ढाने के लिए फ़ौजी चढ़ाई की, इधर क़ुरैश यानी सारा अरब उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अबरहा वक़्त के तमाम जंगी हथियारों और साज़ व सामान का मालिक और क़ुरैश इन सबसे बिल्कुल महरूम, तब ग़ैरते हक़ हरकत में आई और दुनिया ने देख लिया कि दुनिया की ताक़त के घमंड पर अल्लाह की मशीयत से टकराने वाला ख़ुद ही फ़ना के घाट उतर गया और तौहीद का मर्कज़ 'काबा' ख़ुदाई हिफ़ाज़त के साए में उसी तरह क़ायम रहा–

तर्जुमा– *'बेशक इस बात में बड़ा ही सबक़ है, उस आदमी के लिए जो अल्लाह से ख़ौफ़ रखता है।'* (79 : 26)

क़ुरआन ने सूरः फ़ील में इसी हक़ीक़त को मोज ज़ाना ढंग से नक़्ल किया है–

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा—*(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुझे नहीं मालूम कि तेरे पालनहार ने हाथियों के साथ क्या मामला किया? क्या उनके फ़रेब को नाकाम नहीं बना दिया? और उन पर फ़ौज दर फ़ौज परिंदे नहीं भेज दिए। वे परिंद उन पर कंकड़िया फेंकते थे, फिर (ख़ुदा ने) इन हाथियों वालों को खाए हुए भुस की तरह कर दिया।* (105 : 1-5)

बहरहाल आ़मुल फ़ील नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत बा सआ़दत का साल है और यह वाक़िया आपके ज़ुहूरे क़ुद्सी का सबसे बड़ा क़रीबी निशान है और यह हक़ीक़त उस आदमी पर अच्छी तरह साफ़ है—

तर्जुमा—*'जिसके पास हक़ क़ुबूल करने वाला दिल है या वह हाज़िर दिमाग़ी के साथ हक़ बात की ओर कान लगाए हुए है।'*

विलादत की तारीख़ की तहक़ीक़

तारीख़ व सीरत लिखने वाले तमाम बड़े लोगों का तीन बातों पर इत्तिफ़ाक़ है— एक यह कि विलादत का साल आ़मुल फ़ील (हाथियों वाला साल) था, लेकिन सीरत और तारीख़ के माहिर इस बारे में अलग-अलग राय रखते हैं कि रबीउल-अव्वल की कौन सी तारीख थी। आम लोगों में तो मशहूर क़ौल है यह कि 12 रबीउल अव्वल थी और कुछ कमज़ोर रिवायतें इसके पीछे हैं और अक्सर उलेमा 8 रबीउल अव्वल कहते हैं लेकिन सही और मुस्तनद क़ौल यह है कि 9 रबीउल अव्वल पैदाइश की तारीख़ है और तारीख व हदीस के बड़े उलेमा और दीन के जलीलुल क़द्र इमाम इस तारीख़ को सही और 'असबत' मानते है, चुनांचे हमीदी, अ़क़ील, यूनुस बिन यज़ीद, इब्ने अ़ब्दुल्लाह, इब्ने हज़म, मुहम्मद बिन मूसा ख़्वारज़मी, अबुल ख़त्ताब बिन वहय, इब्ने तैमिया, इब्ने क़ैयिम, इब्ने कसीर, इब्ने हजर अ़स्क़लानी, शैख़ बदरुद्दीन ऐनी जैसे बड़े उलेमा की यही राय है।

महमूद पाशा फ़लकी ने (जो क़ुस्तुन्तुन्या का मशहूर भूगोल शास्त्री गुजरा है, सितारों के मुताबिक़ जो ज़ायचा इस ग़रज़ से तैयार किया था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के ज़माने से अपने ज़माने तक के सूरज ग्रहन

Copyright OfflineDeeniApp

और चांद ग्रहण न का सही हिसाब मालूम करके पूरी खोज के साथ यह साबित करे कि आपकी ख़िलाफ़त में किसी हिसाब से भी दोशंबा का दिन 12 रबीउल अव्वल सन् को नहीं आता है, इसलिए रिवायतों की ताक़त और उनके सही वग़ैरह होने कि हिसाब से और सूरज और तारों के हिसाब से मुस्तनद तारीख़ 8 रबीउल अव्वल है, असहाबे फ़ील के वाक़िए के कितने अर्से बाद पैदाइश हुई कई क़ौलों में मशहूर क़ौल यह है कि पचास दिन बाद आपकी पैदाइश हुई।

मुबारक नसब

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अरबी नस्ल के हैं और अरब के इ़ज़्ज़तदार क़बीला क़ुरैश की सबसे ज़्यादा मुक़्तदिर शाख़ बनी हाशिम से हैं। क़ुरआन ने अह्ले अरब को ख़िताब करते हुए कई जगहों पर आपके अरबी नस्ल होने का ज़िक्र किया है।

तर्जुमा—*(ख़ुदा) वह ज़ात है जिसने उम्मीयीन (अनपढ़ लोगों) में से ही एक रसूल भेज दिया जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता और उनका तज़्किया करता और उनको अल-किताब (क़ुरआन) और हिक्मत सिखाता है।'*

(9 : 128)

तर्जुमा—*'बेशक तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल (मुहम्मद सल्ल०) आया।'*

(9 : 128)

तर्जुमा—*'जबकि भेज दिया अल्लाह ने उनमें से एक रसूल जो नसब के लिहाज़ से उन्हीं में से है।'*

(3 : 164)

तर्जुमा—*'इसी तरह हमने आप पर क़ुरआन को अरबी जुबान में उतारा है, (ऐ मुहम्मद ﷺ!) तुम मक्का वालों और उनके आस-पास के बसने वालों को (बुराइयों से) डराओ।'*

(42 : 7)

अरब के नसबों और ख़ानदानों के माहिर इस पर एक राय हैं कि आप सल्ल० हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम अ० की नस्ल में है, इसलिए कि क़ुरैश किसी राय के इख़्तिलाफ़ के बग़ैर अ़दनानी हैं और अ़दनान के इस्माईली होने में दो राय की गुंजाइश नहीं है।

Copyright OfflineDeeniApp

नसब आदि के उलेमा ने नसबनामे की तफ़्सील इस तरह बयान की है—

मुहम्मद ﷺ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दमनाफ़ बिन क़ुसइ बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरका बिन इलयास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन माद बिन अ़दनान'

और वालिदा की जानिब से आपका नसबनामा किलाब पर जाकर बाप के नसब-नामे के साथ मिल जाता है यानी आमना बिन्त वह्ब बिन अब्देमनाफ़ बिन ज़ुहरा बिन किलाब। किलाब को 'हकीम' भी कहते हैं।

अलबत्ता अ़दनान और हज़रत इस्माईल के दर्मियान सिलसिले के नामों से मुताल्लिक़ सनद के माहिरों की रायें अलग-अलग हैं इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसके बारे में इर्शाद फ़रमा कर 'क-ज़-बन्नस्साबून' (नसब बयान करने वालों ने ग़लत बयानी की है) कहा और किसी राय की तौसीक़ नहीं फ़रमाई और अपने सनद के सिलसिले से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इस क़दर इर्शाद फ़रमाया है—

'अल्लाह तआ़ला ने इस्माईल की नस्ल में से कनाना को नुमायां किया और कनाना में से क़ुरैश को इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत बख़्शी और क़ुरैश में बनी हाशिम को इम्तियाज़ अ़ता फ़रमाया और बनी हाशिम में से मुझको चुन लिया।'

(मुस्लिम)

गोया इस तरह सनद के सिलसिले के उन हिस्सों की तस्दीक़ फ़रमाई जो नसब के माहिरों के दर्मियान बिना इख़्तिलाफ़ माने जाते थे।

इस्लाम ने नसबी तफ़ाख़ुर और उस पर बने हुए समाजी रस्म व रिवाज को बहुत बड़ा गुनाह और जुर्म क़रार दिया है। वह कहता है ख़ुदा के यहां फ़ज़ीलत का मेयार 'ईमान और भले अ़मल' हैं और वहां हसब-नसब का कोई पूछने वाला नहीं है, साथ ही 'नसबी तफ़ाख़ुर (बड़प्पन, भेद-भाव) इस्लाम के बुनियादी क़ानून 'इस्लामी भाईचारा' के बिल्कुल ख़िलाफ़ है, इसलिए इस्लाम के इज्तिमाई दस्तूर में उसके लिए कोई जगह नहीं है, फिर भी वाक़िए के तौर पर तारीख़ यह पता देती है कि हमेशा नबी और रसूल ﷺ अपनी क़ौम और अपने मुल्क के इ़ज़्ज़तदार खानदानों में से होते रहे है। अल्लाह की हिक्मत का

Copyright OfflineDeeniApp

यह फ़ैसला शायद इसलिए हुआ कि क़ौमों और मुल्कों के रस्म व रिवाज और नसबी फ़ख्र व ग़ुरूर, उनके ख़िलाफ़ उनकी दावते हक़ और उनकी सदाक़त का पैग़ाम कहीं निजी स्वार्थ के लिए न समझ लिया जाए और इस तरह उसका अख़्लाक़ी पहलू कहीं कमज़ोर न हो जाए, जैसे किसी समाजी ज़िंदगी में ज़ात-पात की तक़्सीम और कास्ट-सिस्टम इस तरह मौजूद है कि उसकी वजह से कुछ इंसान कुछ को हक़ीर व ज़लील समझने लगे हैं, तो अगर उस क़ौम या मुल्क में कोई पैग़म्बर उस ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो जिसको क़ौमी और मुल्की रिवाज ने नीच और पस्त क़ौमों का लक़ब दे रखा है, ऐसी हालत में उस खुले ज़ुल्म और बातिल के ख़िलाफ़ उस पैग़म्बर की हक़ की आवाज़ इतनी तेज़ी के साथ कामियाब न होती जितनी उस हालत में हो सकती है, जबकि वह ख़ुद उस क़ौम व मुल्क के ऊंचे ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो और सिर्फ़ इसीलिए ख़ास मसले में नहीं, बल्कि उसके पैग़ामे हक़ की तमाम इस्लाहों में यह फ़र्क़ ज़रूर नज़र आएगा!

बहरहाल यह हिक्मत हर मक़ाम और हर मौक़े पर फ़ायदेमंद हो या न हो, अरब के हालात व वाक़िआत के लिए निहायत मुनासिब और फ़ायदेमन्द साबित हुई। चुनांचे इस्लाम की आवाज़ ने जब अपनी इंक़िलाबी और इस्लाही ग़रज़ से रूहानियत की छिपी कायनात में तहलका पैदा कर दिया तो एक तरफ़ नबी अकरम ﷺ ने अरबों को यह सुनाया कि जहां तक ख़ानदानी इम्तियाज़ का ताल्लुक़ है, तो मैं क़ुरैश भी हूं और हाशमी भी और यह फ़र्क़ तुम्हारे हिसाब से बहुत बुलन्द हो, मगर मेरी निगाह में इसकी हैसियत सिर्फ़ यह है। यह फ़ख्र करने की कोई चीज़ नहीं है, और 'दूसरी जानिब नसबी फ़ख्र की बुनियादों के गिर जाने और इंसानी बराबरी की आ़म दावत के लिए इस ख़ुदाई फ़रमान का एलान करके इंसानी कायनात की तमाम तारीक ज़ेहनियत के ख़िलाफ़ एक बड़ा इंक़िलाब पैदा कर दिया।

तर्जुमा—*लोगो! मैंने तुम सबको एक मर्द और औरत से पैदा किया है। (यानी इंसानी पैदाइश की शुरूआत आदम और उसकी बीवी हव्वा ؑ से हुई है) तुमको ख़ानदानों और क़बीलों में सिर्फ़ इसलिए बांट दिया है कि आपस*

Copyright OfflineDeeniApp

में (सिलारहमी यानी रिश्तेदारियों के लिए) पहचान और मारफ़त का तरीक़ा क़ायम कर लो।') —अल-हुजुरात

तर्जुमा—*(और असल यह है कि) बेशक अल्लाह के नज़दीक वही इज़्ज़त वाला है, जो तुममें से परहेज़गारी की ज़िंदगी बसर करने वाला है।'* (48 : 13)

और हज्जतुल विदाअ् के मौक़े पर जब आप हज़ारों सहाबा की मौजूदगी में विदाई पैग़ाम सुना रहे थे और इस्लाम के बुनियादी उसूल की मज़बूती के लिए अहम वसीयतें पेश फ़रमा रहे थे, उस हुक्मे ख़ुदावन्दी की ताईद में यह इंक़िलाबी पैग़ाम भी इर्शाद फ़रमाया—

'अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया है, ऐ इंसानी नस्ल के लोगो! हमने तुमको एक औरत और मर्द से पैदा किया है और हमने तुम्हारे दर्मियान ख़ानदान और क़बीले बना दिए हैं, ताकि (रिश्तेदारी के लिए) तआरुफ़ पैदा करो। बिला शुबहा तुममें अल्लाह के नज़दीक वही बरगुज़ीदा है, जो ज़्यादा मुत्तक़ी (नेक किरदार) है। पस (ख़ूब याद रखो कि) न अरबी को अ़जमी पर कोई फ़ज़ीलत है और न अज़मी को अरबी पर कोई बरतरी हासिल है, न काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत है और न गोरे को काले पर कोई बुज़ुर्गी, बल्कि इन सब के लिए फ़ज़ीलत का मेयार सिर्फ़ तक़्वा (नेक अ़मली) है। ऐ क़ुरैश के लोगो! ऐसा न हो कि तुम (ख़ानदानी फ़ख़्र के) झूठे घमंड की वजह से कियामत में दुनिया को कंधे पर लाद लाओ और दूसरे लोग (नेक अ़मली की बदौलत) आख़िरत का सामान लेकर आएं, वाज़ेह रहे कि तुम्हारे सिर्फ़ क़ुरैशी होने की वजह से मैं तुमको ख़ुदा के फ़ैसले से क़तई तौर पर बेपरवाह नहीं बना सकता। (ख़ुदा के यहां तो सिर्फ़ अ़मल ही काम आएगा) (मज्मउल फ़वाइद, भाग 1, मोजम तबरानी कबीर से)

और एक बार नसबी फ़ख़्र के ख़िलाफ़ तब्लीग़े हक़ करते हुए उसको 'जाहिली तास्सुब' फ़रमाया और मुसलमानों को उससे बचने की सख़्त ताकीद फ़रमाई, इर्शाद फ़रमाया—

अल्लाह तआ़ला ने (इस्लाम की दावत के ज़रिए तुम्हारे दर्मियान से जाहिलियत के तास्सुब और नसबी फ़ख़्र (गर्व) को मिटा दिया है और अब नेक मोमिन है या बदकार पापी, सब इंसान आदम की औलाद हैं और आदम की

Copyright OfflineDeeniApp

पैदाइश मिट्टी से हुई है, (फिर फ़ख़्र करने का क्या मौक़ा है?)

(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)

सरवरे दो आ़लम ﷺ ने यह फ़रमाया 'इन्नमा हु-व मोमिनुन लक़ि-य औ फ़ाजिरुन शक़ि-य' इस मसले को इस दर्जा साफ़ कर दिया था कि मुसलमान की ज़िंदगी में कभी इसके ख़िलाफ़ ज़िंदगी का कोई असर पड़ना ही नहीं चाहिए था। ज़ात-पात तो सिर्फ़ इसलिए थी कि छोटे-छोटे हलक़ों में आपसी तआरुफ़, सिलारहमी (रिश्तेदारियों का ख़्याल) और हुस्ने सुलूक (सदव्यवहार का मामला) एक दूसरे के साथ आसानी से हो सके, वरना कैसी ज़ात? कहां का ख़ानदान? कौन बिरादरी? यहां तो सिर्फ़ दो ही फ़ितरी और नेचुरल तक़्सीमें हैं नेक या बद? किसी क़ौम, किसी ख़ानदान और किसी मुल्क का इंसान हो अगर 'सच्ची ख़ुदापरस्ती' और नेकी रखता है तो वे सब एक बिरादरी और एक क़ौम हैं और अगर 'मुश्रिक व काफ़िर और बदकार पापी' तो ये सब एक गिरोह और एक टोला है।

यतीमी

ख़ातमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह और वालिदा का नाम आमिना था। अभी हिदायत का सूरज इस दुनिया में निकला नहीं था और हज़रत आमना के मुबारक पेट में अमानत के तौर पर मौजूद था कि वालिद का इंतिक़ाल हो गया और सीरत लिखने वाले कहते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह तिजारत के एक क़ाफ़िले के साथ शाम तशरीफ़ ले गए थे वापसी में जब क़ाफ़िला मदीना (यसरिब) पहुंचा तो यह बीमार हो गए और इसीलिए अपने ननिहाल में बनी नज्जार में क़ियाम किए रहे– क़ाफ़िला जब मक्का पहुंचा तो अ़ब्दुल मुत्तलिब ने बेटे के बारे में मालूम किया। क़ाफ़िले ने उनकी बीमारी और मदीना में क़ियाम का वाक़िया कह सुनाया तब अ़ब्दुल मुत्तलिब ने अपने बड़े लड़के हारिस को हालात मालूम करने के लिए मदीना भेजा। हारिस जब मदीना पहुंचे तो मालूम हुआ कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह एक महीने कुछ दिन बीमार रहकर इस दुनिया से चल बसे।

Copyright OfflineDeeniApp

वापस आकर जब हारिस ने बाप को इत्तिला दी तो अ़ब्दुल मुत्तलिब और तमाम ख़ानदान को इस बड़े सदमे ने बेहाल कर दिया, क्योंकि अ़ब्दुल्लाह अपने बाप और भाइयों के बड़े चहेते थे।

ग़रज़ जब आपकी मुबारक पैदाइश हुई तो इससे क़ब्ल ही आपको यतीमी का शरफ़ हासिल हो चुका था। चुनांचे क़ुरआन में आपकी यतीमी और दुनिया के साधनों से महरूमी के बावजूद अल्लाह की रहमत की गोद में परवरिश पाकर दुनिया को हिदायत पर लाने वाला बनने का ज़िक्र थोड़े में सूरः वज़्ज़ुहा में हो चुका है—

तर्जुमा—*'(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुझको ख़ुदा ने यतीम नहीं पाया, फिर अपनी (रहमत की) गोद में जगह दी और क्या तुझको नावाक़िफ़ नहीं पाया फिर तुझको (कायनात की हिदायत के लिए) हिदायत वाला बनाया और क्या तुझको (हर क़िस्म के वसीलों से महरूम) मुहताज नहीं पाया, फिर तुझको (हर क़िस्म की सरवरी देकर) ग़नी बना दिया।'* (93 : 6-8)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० के क़ौल के मुताबिक़ इन आयतों में अजीब व ग़रीब एजाज़ और बयान करने का ढंग है। साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के दर्जों का ज़िक्र है। तुम समझते हो कि 'फ़आवा' के मानी यह है कि परवरदिगार ने आपको रहने-सहने की शक्ल पैदा कर दी या आपको बेयार व मददगार नहीं रहने दिया। यह भी सही है मगर इस कलामे रब्बानी की असल रूह यह हैं कि उसने ज़ाते अकदस सल्ल० को हर क़िस्म के माद्दी (भौतिक) असबाब व वसाइल (साधनों) से बेपरवाह रख कर अपनी रहमत के आग़ोश में ले लिया और आपकी तरक़्क़ी व बढ़ौत्तरी को ख़ालिस अपनी तर्बियत में कामिल व मुक्म्मल किया। (तफ़्सीर इब्न कसीर) और 'व-व-ज-द-क ज़ाल्लन फ़-हदा०' की तफ़्सीर को ख़ुद क़ुरआन ही ने दूसरी जगह रोशन कर दिया। जैसे सूरः शूरा में है—

तर्जुमा—*'और इसी तरह हमने तेरी तरफ़ अपने 'अम्र' की रूह की तरक़्क़ी की (हालांकि इससे पहले) न तू किताब (क़ुरआन) को जानता था और न ईमान की हक़ीक़त को, लेकिन हमने उसको 'नूर' (रोशनी) बना दिया, हम*

Copyright OfflineDeeniApp

अपने बन्दो में से जिसको चाहते हैं (उसकी सलाहियत व इस्तेदाद को सामने रखकर) उसके ज़रिए हिदायत देते हैं।' (42 : 25)

और आयत 'आइलन फ़अ़ग्ना' में दुनिया की ज़रूरत और ग़नी का ज़िक्र कलाम की रूह नहीं है बल्कि इस ओर इशारा है कि अल्लाह तआ़ला ने आपके क़रीब होने का वह बड़ा रुत्बा अ़ता फ़रमाया है कि माद्दी और रूहानी हर क़िस्म की ज़रूरत से ऊपर उठकर अच्छी सिफ़त और बेहतरीन अख़्लाक़ की ऊंची मिसाल 'ग़नी' बना दिया, यही वह ग़नी है जिसका खुद ज़ाते अक़्दस ने इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है—

'ग़नी मालदारी की बहुतायत का नाम नहीं है, हक़ीक़ी ग़नी नफ़्स का अल्लाह के अलावा हर चीज़ से बेनियाज़ हो जाना है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

मुबारक उम्र अभी छः साल की ही थी कि आपकी वालिदा बीबी आमिना का भी इंतिक़ाल हो गया। बीबी अमिना आपको आपके ननिहाल (मदीना) में लेकर गई थीं, वापसी में मुक़ाम अबवा में बीमार हो गईं और कुछ दिन बीमार रहकर वहीं इंतिक़ाल फ़रमाया और उम्र की अभी आठ मंज़िलें ही तै हो पाई थीं कि दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब ने भी मुंह मोड़ लिया और इस तरह बचपन ही में तर्बियत के वसीले और दुनिया की किफ़ालत के सामान से महरूमी ने गोया अल्लाह की मशीयत की ओर से यह एलान कर दिया कि ज़ाते क़ुदसी सिफ़ात को एक खुदा ने ख़ालिस अपनी तर्बियत के लिए चुन लिया है फिर यह कैसे मुम्किन है कि उसको तर्बियत के दुनियावी अस्बाब व वसाइल का मुहताज बनाए।

अल्लाह तआ़ला ने एक यतीम व यसीर और माद्दी वसीलों से महरूम हस्ती को अपने लिए चुनकर किस तरह अपने कामिल रब का मज़्हर बनाया। सूरः इन्शिराह में इस हक़ीक़त को अछूते अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है—

तर्जुमा—*'क्या हमने (हक़ और सच्चाई क़ुबूल करने के लिए) तेरा सीना नहीं खोल दिया और (मारफ़ते इलाही की हक़ीक़ी तलब और क़ौम और इंसानी कायनात की बेराहरवी पर उनकी हिदायत की तड़प का) वह बोझ हमने तुझसे दूर कर दिया जिसने तेरी कमर तोड़ रखी थी और हमने तेरे ज़िक्र को*

Copyright OfflineDeeniApp